॥ श्रीः ॥
॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
॥ श्री परम गुरुभ्यो नमः ॥
॥ श्री जगन्नाथ दास गुरुभ्यो नमः ॥
॥ श्री पुरंदर दास गुरुभ्यो नमः ॥
॥ श्री व्यासराय गुरुभ्यो नमः ॥
॥ लातव्य चक्रवर्ति भावि समीर श्री वादिराज गुरुभ्यो नमः ॥
॥ श्रीमदानंद तीर्थ गुरुभ्यो नमः ॥
॥ श्री वेदव्यासाय नमः ॥
॥ अरिष्ट निरसनात्मक श्री लक्ष्मी नृसिंहाय नमः ॥
॥ इष्ट प्रदायक श्री लक्ष्मी वेंकटेशाय नमः ॥

श्री जगन्नाथ दासवर्य विरचित

# श्री हरिकथामृतसार

(संस्कृत लिपि)

॥ श्रीः ॥

॥ मंगळाचरण संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

श्रीरमणि करकमल पूजित चारुचरण सरोज,
ब्रह्म समीर वाणि फणींद्र वींद्र भवेंद्र मुख विनुत,।
नीरज भवांडोदय स्थिति कारणने, कैवल्य दायक नारसिंहने नमिपे,
करुणिपुदेमगे मंगळव ॥ १ ॥

जगदुदरनतिविमल गुणरूपगळनु,
आलोचनदि भारत निगमततिगळतिक्रमिसि क्रियाविशेषगळ,
बगे बगेय नूतनव काणुत, मिगे हरुषदिं पोगळि हिग्गुव,
त्रिगुणमानि महालकुमि संतैसलनुदिनवु ॥ २ ॥

निरुपमानंदात्म, भव निर्जरसभासंसेव्य,
ऋजुगणदरसे, सत्वप्रचुर, वाणीमुखसरोजेन,
गरुड शेष शशांकदळ शेखरर जनक, जगद्गुरुवे,
त्वच्चरणगळिगभिवंदिसुवे, पालिपुदु सन्मतिय ॥ ३ ॥

आरुमूरेरडोंदु साविर मूरेरडु शतश्वास जपगळ,
मूरु विध जीवरोळगब्जजकल्प परियंत ता रचिसि,
सत्वरिगे सुख, संसार मिश्ररिगे,
अधमजनरिगपार दुःखगळीव, गुरु पवमान सलहेम्म ॥ ४ ॥

चतुरवदनन राणि, अतिरोहित विमल विज्ञानि,
निगमप्रततिगळिगभिमानि, वीणापाणि, ब्रह्माणि,
नतिसि बेडुवे जननि, लक्ष्मीपतिय गुणगळ तुतिपुदके सन्मतिय पालिसि,
नेलेसु नी मद्वदन सदनदलि ॥ ५ ॥

कृतिरमण प्रद्युम्न नंदने,
चतुरविंशति तत्वपति दॆवतॆगळिगॆ गुरुवॆनिसुतिह मारुतन निजपत्नि,
सतत हरियलि गुरुगळलि सद्भतिय पालिसि,
भागवत भारत पुराण रहस्य तत्वगळरुपु करुणदलि ॥ ६ ॥

वॆदपीठ विरिंचि भव शक्रादि सुर विज्ञान दायक,।
मॊदचिन्मयगात्र, लॊकपवित्र, सुचरित्र,
छॆद भॆद विषादकुटिलांतादि मध्यविदूर,
आदानादिकारण बादरायण पाहि सत्राण ॥ ७ ॥

क्षितियॊळगॆ मणिमंत मॊदलादति दुरात्मरु,
ओंदधिक विंशति कुभाष्यव रचिसॆ,
नडुमनॆयॆंब ब्राह्मणन सतिय जठरदॊळवतरिसि,
भारतिरमण मध्वाभिधानदि, चतुरदश लॊकदलि मॆरॆदप्रतिमगॊंदिसुवॆ ॥ ८ ॥

पंचभॆदात्मक प्रपंचकॆ पंचरूपात्मकनॆ दैवक,
पंचमुख शक्रादिगळु किंकररु श्रीहरिगॆ,
पंचविंशति तत्व तरतम पंचिकॆगळनु पॆळ्द,
भावि विरिंचियॆनिपानंदतीर्थर नॆनॆवॆननुदिनवु ॥ ९ ॥

वामदॆव, विरिंचितनय, उमामनॊहर, उग्र, धूर्जटि,
सामजाजिन वसन भूषण, सुमनसॊत्तंस,
कामहर, कैलास मंदिर, सॊमसूर्यानल विलॊचन,
कामितप्रद, करुणिसॆमगॆ सदा सुमंगलव ॥ १० ॥

कृत्तिवासनॆ हिंदॆ नी नाल्वत्तु कल्पसमीरनलि
शिष्यत्व वहिस्यखिळागमार्थगळॊदि,
जलधियॊळु हत्तु कल्पदि तपव गैदु, आदित्यरॊळगुत्तमनॆनिसि,
पुरुषॊत्तमन परियंक पदवैदिदॆयॊ महदॆव ॥ ११ ॥

पाकशासन मुख्य सकल दिवौकसरिगभिनमिपे, ऋषिगळिगे,
ऐक चित्तदि पितृगळिगे, गंधर्व क्षितिपरिगे,
आ कमलनाभादि यतिगळनीककानमिसुवेनु बिडदे,
रमा कळत्रन दासवर्गके नमिपेननवरत ॥ १२ ॥

परिमळवु सुमनदोळगे, अनलनु अरणियोळगिप्पंते,
दामोदरनु ब्रह्मादिगळ मनदलि तोरितोरदले इरुतिह,
जगन्नाथ विठलन करुण पडेव मुमुक्षुजीवरु,
परम भागवतरनु कोंडाडुवुदु प्रतिदिनवु ॥ १३ ॥

॥ इति श्री मंगळाचरण संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ करुणा संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

श्रवण मनकानंदवीवुदु, भवजनित दुःखगळ कळेवुदु,
विविध भॊगगळिहपरंगळलित्तु सलहुवुदु,
भुवन पावनवेनिप लक्ष्मी धवन मंगळ कथेय,
परमॊत्सवदि किविगॊट्टालिपुदु भूसुररु दिनदिनदि ॥ १ ॥

मळेय नीरॊणियॊळु परियलु बळसरूरॊळगिद्द जनरु
आ जलवु हेह्चॊरेगूडे मज्जनपान गैदपरु,
कलुष वचनगळादडेयु बांबॊळेय पेत्तन पाद महिम
आ जलधि पॊक्कदरिंद माण्दपॊरे महीसुररु ॥ २ ॥

श्रुतिततिगळभिमानि लक्ष्मी स्तुतिगळिगे गॊचरिसद,
अप्रतिहत महैश्वर्याद्यखिळ सद्गुण गणांभॊधि,
प्रतिदिवस तन्नंघ्रिसॆवारत महात्मरु माडुतिह संस्तुतिगे,
वशनागुवनिवन कारुण्यकॆनेंबे ॥ ३ ॥

मनवचनकतिदूर नेनेवरननुसरिसि तिरुगुवनु जाह्नवि जनक,
जगदॊळगिद्दु जनिसुव जगदुदर तानु,
घनमहिम गांगॆयनुत, गायनव कॆळुत गगन चर वाहन,
दिवौकसरॊडने चरिसुव मनेमनेगळल्लि ॥ ४ ॥

मलगि परमादरदि पाडलु कुळितु कॆळुव,
कुळितु पाडलु निलुव, निंतरे नलिव, नलिदरे ओलिवे, निमगेंब,
सुलभनॊ हरि तन्नवरनघळिगे बिट्टगलनु,
रमाधवनॊलिसलरियदे पामररु बळलुवरु भवदॊळगे ॥ ५ ॥

मनदोळगे तानिद्दु मनवेंदेनिसिकोंबनु,
मनद वृत्तिगळनुसरिसि भॊगंगळीवनु त्रिविध चॆतनके,
मनवनित्तरे तन्न नीवनु,
तनुव दंडिसि दिनदिनदि साधनव माळ्परिगित्तपनु स्वर्गादिभॊगगळ ॥ ६ ॥

परम सत्पुरुषार्थरूपनु हरियु लॊकके एंदु,
परमादरदि सदुपासनेय गैवरिगित्तपनु तन्न,
मरेदु धर्मार्थगळकामिसुवरिगे नगुततिशीघ्रदिंदलि,
सुरपतनय–सुयॊधनरिगित्तंते कोडुतिप्प ॥ ७ ॥

जगवनेल्लव निर्मिसुव नाल्मोगनोळगे तानिद्दु, सलहुव,
गगनकॆशनोळिद्दु संहरिसुवनु लॊकगळ,
स्वगत भॆद विवर्जितनु, सर्वग, सदानंदैक दॆहनु,
बगेबगेय नामदलि करेसुव, भकुतरनु पोरेव ॥ ८ ॥

ओब्बनलि निंदाडुवनु, मत्तोब्बनलि नॊडुवनु,
बॆडुवनोब्बनलि, नीडुवनु, माताडुवनु बेरगागि,
अब्बरद हेद्दैवनिव, मत्तोब्बरन लेक्किसनु,
लॊकदोळोब्बनॆ ता बाध्य बाधकनाह निर्भीत ॥ ९ ॥

शरणजन मंदार, शाश्वत करुणि, कमलाकांत, कामद,
परम पावनतर, सुमंगळ चरित, पार्थसख,
निरुपमानंदात्म, निर्गत दुरित, दॆववरॆण्यनेंदादरदि करेयलु,
बंदोदगुवनु तन्नवर बळिगे ॥ १० ॥

जननियनु काणदिह बालक नेनेनेनेदु हलुबुतिरे,
कत्तले मनेयोळडगिद्दवन नॊडुत नगुत हरुषदलि,
तनयनं बिगिदप्पि रंबिसि कनलिकेय कळेवंते,
मधुसूदननु तन्नवरिद्देडेगे बंदोदगि सलहुवनु ॥ ११ ॥

इट्टिकल्लनु भकुतियिंदलि कोट्ट भकुतगे मेच्चि तन्नने कोट्ट,
बडब्राह्मणन ओप्पिडियवलिगखिळार्थ,
केट्ट मातुगळेंद चैद्यन पोट्टेयोळगिंबिट्ट,
बाणदलिट्ट भीष्मनवगुणगळेणिसिदनॆ करुणालु ॥ १२ ॥

धनव संरक्षिसुव फणि तानुणदे, मत्तोब्बरिगे कोडदे,
अनुदिनदि नॊडुत सुखिसुवंददि,
लकुमिवल्लभनु प्रणतरनु काय्दिहनु निष्कामनदि,
नित्यानंदमय, दुर्जनर सॆवेयनोल्लनप्रतिमल्ल जगकेल्ल ॥ १३ ॥

बालकन कलभाषे जननि कॆळि सुखपडुवंते,
लक्ष्मीलॊल भक्तरु माडुतिह संस्तुतिगे हिग्गुवनु,
ताळ–तन्नवरल्लि माड्ववहॆळनव हेद्दैव,
विदुरन आलयदि पालुंडु कुरुपन मानवने कोंड ॥ १४ ॥

स्मरिसुववरपराधगळ ता स्मरिस, सकलॆष्ट प्रदायक,
मरळि तनगर्पिसलु कोट्टदनंतमडि माडि परिपरियलिंदुणिसि,
सुखसागरदि लॊलाडिसुव, मंगळ चरित,
चिन्मयगात्र, लॊकपवित्र, सुचरित्र ॥ १५ ॥

ऎनु करुणानिधियॊ हरि, मत्तॆनु भक्ताधीननॊ,
इन्नॆनु ईतन लीले, इच्छामात्रदलि जगव ताने सृजिसुव, पालिसुव,
निर्वाण मोदलादखिळ लॊकस्थानदलि,
मत्तवरनिट्टानंद बडिसुवनु ॥ १६ ॥

जनप मेच्चिदरीव धन वाहन विभूषण,
वसन भूमि तनुमनगळित्तादरिपरुंटॆनॊ लॊकदोळु,
अनवरत नेनेववरनंतासनवे मोदलादालयदोळिट्टु,
अणुगनंददलवर वशनागुव महामहिम ॥ १७ ॥

भुवन पावन चरित, पुण्य श्रवण कीर्तन,
पाप नाशन, कविभिरीडित, कैरवदळश्याम, निस्सीम,
युवतिवेषदि हिंदे गौरी धवन मोहिसि केडिसि उळिसिद,
इवन मायव गेलुव नावनु ई जगत्रयदि ॥ १८ ॥

पापकर्मव सहिसुवडे लक्ष्मीपतिगे समराद
दिविजरनी पयोजभवांडदोळगावल्लि ना काणे,
गोप–गुरुविन मडदि–भृगु–नगचाप मोदलादवरु माड्द
महापराधगळेणिसिदने, करुणा समुद्र हरि ॥ १९ ॥

अंगुटाग्रदि जनिसिदमरतरंगिणियु लोकत्रयगळघहिंगिसुवळु,
अव्याकृताशांत व्यापिसिद इंगडल मगळोडयन
अंगोपांगगळलिप्प, अमलनंत सुमंगळप्रदनाम
पावनमाळ्पदेनरिदु ॥ २० ॥

कामधेनु–सुकल्पतरु–चिंतामणिगळु अमरेंद्र लोकदि
कामितार्थगळीव वल्लदे सेवे माळ्परिगे,
श्रीमुकुंदन परम मंगळ नाम नरकस्थरनु सलहितु,।
पामरर पंडितरेनिसि पुरुषार्थ कोडुतिहुदु ॥ २१ ॥

मनदोळगे सुंदर पदार्थव नेनेदु कोडे कैकोंडु,
बलु नूतन सुशोभित गंध सुरसोपेत फलराशि
द्युनदि निवहगळंते कोट्टवरनु सदा संतैसुवनु,
सद्गुणव कद्दवर अघव कदिवनु अनघनेंदेनिसि ॥ २२ ॥

चेतना चेतन विलक्षण,  नूतन पदार्थगळोळगे बलु नूतन,
अतिसुंदरके सुंदर, रसके रसरूप,
जातरूपोदर भवाद्यरोळातत प्रतिम प्रभाव,
धरातळदोळेम्मोडने आडुतलिप्प नम्मप्प ॥ २३ ॥

तंदे ताय्गळु तम्म शिशुविगे बंद भयगळ परिहरिसि,
निज मंदिरदि बॆडिदुदनित्तादरिसुवंददलि,
हिंदे मुंदेडबलदि ओळ होरगिंदिरॆशनु तन्नवरनेंदेंदु सलहुवनु
आगसदवॊलेत्त नॊडिदरु ॥ २४ ॥

ओडल नेळलंददलि हरि नम्मोडने तिरुगुवनु,
ओंदरक्षण बिडदे बेंबलवागि भक्ताधीननेंदेनिसि,
तडेव दुरितौघगळ, कामद कोडुव सकलॆष्टगळ,
संतत नडेव नम्मंददलि, नविसुविशॆष सन्महिम ॥ २५ ॥

बिट्टवर भवपाशदिंदलि कट्टवनु बहुकठिणनिव,
शिष्टेष्टनेंदरिदनवरत सद्भक्ति पाशदलि कट्टवर
भवकट्ट बिडिसुव सिट्टिनवनिवनल्ल,
कामद कोट्टकावनु सकल सौख्यवनिहपरंगळलि ॥ २६ ॥

कण्णिगेवेयंददलि, कै मै तिण्णिगोदगुव तेरदि,
पल्गळु पण्णु फलगळनगिदु जिह्वेगे रसवनीवंते,
पुण्य फलवीवंददलि नुडिवेण्णि नाण्मांडदोळु,
लक्ष्मण नण्ण नोदगुव भक्तरवसरकमरगण सहित ॥ २७ ॥

कोट्टदनु कैकोंब, अरक्षण बिट्टगल तन्नवर,
(तन्नवर) दुरितगळट्टवनु दूरदलि दुरितारण्य पावकनु,
बेट्ट बेन्निलि होरिसिदवरोळु सिट्ट माडिदनॆनॊ हरि,
कंगेट्ट सुररिगे सुधेयनुणिसिद मुरिदनहितरना ॥ २८ ॥

खॆद मॊद जयापजय मोदलाद दॊषगळिल्ल,
चिन्मयसादरदि तन्नंघ्रिकमलव नंबि स्तुतिसुवर कादुकोंडिह,
परमकरुण महॊदधियु, तन्नवरु माड्दमहापराधगळ नॊडदले सलहुव,
सर्वकामदनु ॥ २९ ॥

मीन कूर्म वराह नरपंचाननातुळ शौर्य, वामन,
रेणुकात्मज, रावणादिनिशाचरध्वंसि,
धेनुकासुरमथन, त्रिपुरव हानिगैसिद निपुण,
कलिमुख दानवर संहरिसि धर्मदि काय्द सुजनरना ॥ ३० ॥

श्री मनोरम, शमल वर्जित, कामितप्रद,
कैरवदळश्याम, शबल, शरण्य, शाश्वत, शर्कराक्ष सख,
सामसन्नुत, सकल गुणगण धाम, श्री जगन्नाथ विठलनु,
ई महियोळवतरिसि सलहिद सकल सुजनरना ॥ ३१ ॥

॥ इति श्री करुणा संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ व्याप्ति संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

पुरुषरूपत्रय–पुरातन पुरुष–पुरुषोत्तम–क्षराक्षर पुरुषपूजित पाद,
पूर्णानंद ज्ञानमय,
पुरुषसूक्त सुमेय, तत्तत्पुरुष, हृत्पुष्करनिलय, मह पुरुष,
अजांडांतरदि बहिरदि व्याप्त निर्लिप्त ॥ १ ॥

स्त्री–नपुंसक–पुरुष–भू–सलिलानलानिल–गगन–मन (सलिल–अनल–अनिल)
शशि–भानु–काल–गुण–प्रकृतियोळगोंदु तानल्ल,
ऐनु इवन महामहिमे कडे गाणरजभव शक्रमुखरु,
निदानिसलु मानवरिगळवडुवदे विचारिसलु ॥ २ ॥

गंध–रस–रूप–स्परश–शब्दोंदु तानल्ल, अदरदर पेसरिंद करेसुत
जीवरिगे तर्पकनु तानागि,
पोंदिकोंडिह परम करुणासिंधु,
शाश्वत मनवे मोदलादिंद्रियगळोळगिद्दु भोगिसुतिहनु विषयगळ ॥ ३ ॥

श्रवण–नयन–घ्राण–त्वग्रसनिवुगळोळु (त्वक्–रसन–इवुगळोळु),
वाक्–पाणि–पादाद्यवयवगळोळु, तद्गुणगळोळु, तत्पतिगळोळगे,
प्रविततनु तानागि कृतिपति विविध कर्मव माडि माडिसि,
भवके कारणनागि तिरुगिसुतिहनु तिळिसदले ॥ ४ ॥

गुणिगुणगळोळगिद्दु गुणिगुणनेनिसुवनु,
गुणबद्धनागदे गुणज पुण्यापुण्यफल ब्रह्मादिचेतनके उणिसुतवरोळगिद्दु,
वृजिनार्दन चिदानंदैक देहनु,
कोनेगे सचराचर जगद्भुकुवेनिपनव्ययनु ॥ ५ ॥

विद्येतानेनिसिकोंबनिरुद्धदेवनु,
सर्वजीवर बुद्धियलि तानिद्दु कृतिपति बुद्धियेनिसुवनु,
सिद्धियेनिसुव संकरुषन, प्रसिद्धनामक वासुदेव,
अनवद्यरूप चतुष्टयगळरितवने पंडितनु ॥ ६ ॥

तनुचतुष्टयगळोळु नारायणनु हृत्कमलाख्य सिंहासनदोळु–
अनिरुद्धादि रूपगळिंद शोभिसुत,
तनगे ताने सेव्य सेवक नेनिसि,
सेवासक्त सुररोळगनवरत नेलेसिद्दु सेवेय कोंबनवरंते ॥ ७ ॥

जागर स्वप्नंगळोळु वरभोगिशयननु बहु प्रकार विभागगैसि
निरंशजीवर चिच्छरीरवनु भोगवित्तु सुषुप्तिकालदि,
सागरव नदि कूडुवंते वियोगरहितनु
अंशगळनेकत्रवैदिसुव ॥ ८ ॥

भार्यरिंदोडगूडि कारण कार्यवस्तुगळल्लि
प्रेरक प्रेर्य रूपगळिंद पटतंतुगळवोलिद्दु,
सूर्यकिरणगळंते तन्नय वीर्यदिंदलि कोडुत कोळुतिह,
अनार्यरिगे ईतन विहारवु गोचरिपुदेनो ॥ ९ ॥

जनक तन्नात्मजगे वर भूषण दुकूलव तोडिसि
ता वंदनेय कैकोळुतवन हरसुत हरुषबडुवंते,
वनरुहेक्षण पूज्य पूजकनेनिसि,
पूजासाधन पदार्थनु तनगे तानागि फलगळनीव भजकरिगे ॥ १० ॥

तंदे बहु संभ्रमदि तन्नय बंधु बळगव नेरहि,
मदुवेय नंदनगे ता माडि मनेयोळगिडुव तेरदंते,
इंदिराधव तन्न इच्छयलिंद गुणगळ चेतनके संबंधगैसि,
सुखासुखात्मक संसृतियोळिडुव ॥ ११ ॥

तृणकृतालयदोळगे पोगे संदणिसि प्रति छिद्रदलि पोरमट्ट
अनळनिरवनु तोरि तोरदलिप्प तेरदंते,
वनजजांडदोळखिळ जीवर तनुविनोळहोरगिद्दु काणिसदे
अनिमिषेशनु सकल कर्मव माळ्पनवरंते ॥ १२ ॥

पादपगळडिगेरेये सलिलवु तोदु कोंबिगळुब्बि पुष्प स्वादु फलवीवंददलि,
सर्वेश्वरनु जनराराधनेय कैकोंडु,
ब्रह्म भवादिगळ नामदलि फलवित्तादरिसुवनु ,
तन्न महिमेय तोरगोड जनके ॥ १३ ॥

श्रुतिततिगळिगे गोचरिसद अप्रतिमजानंदात्मनच्युत
(अप्रतिम–अज–आनंद–आत्मनु–अच्युत),
वितत विश्वाधार विद्याधीश विधिजनक,
प्रतिदिवस चेतनरोळगे प्राकृत पुरुषनंददलि संचरिसुत,
नियम्य नियामकनु तानागि संतैप ॥ १४ ॥

मन विषयदोळगिरिसि विषयव मनदोळगे नेलेगोळिसि,
बलु नूतनवु सुसमीचीनविदुपादेयवेंदेनिसि,
कनसिलादरू तन्न पादद नेनेवनीयदे,
सर्वरोळगिद्दनुभविसुवनु स्थूल विषयव विश्वनेंदेनिसि ॥ १५ ॥

तोदकनु तानागि मन मोदलाद करणदोळिद्दु विषयव नैदुवनु
निजपूर्णसुखमय ग्राह्यग्राहकनु,
वेदवेद्यनु तिळियदवनोपादि भुंजिसुतेल्लरोळगे
आह्लाद बडुवनु भक्तवत्सल भाग्यसंपन्न ॥ १६ ॥

नित्य–निगमातीत–निर्गुण–भृत्यवत्सल–भयविनाशन–
सत्यकाम–शरण्य–श्यामल–कोमलांग–सुखि,
मत्तनंददि मर्त्यरोळहोरगेत्त नोडलु सुत्तुतिप्पनु,
अत्यधिक संतृप्त त्रिजगद्व्याप्त परमाप्त ॥ १७ ॥

पविहरिन्मणि विद्रुमद सच्छविगळंददि राजिसुत,
माधव निरंतर दॆव मानव दानवरॊळिद्दु,
त्रिविधगुण कर्म स्वभावव पवनमुख दॆवांतरात्मक,
दिवसदिवसदि व्यक्तमाडुतलवरॊळिद्दुणिप ॥ १८ ॥

अणुमहत्तिनॊळिप्प, घनपरमणुविनॊळडगिसुव,
सूक्ष्मव मुणुगिसुव, तॊलिसुव स्थूलगळ, अवन मायविदु,
दनुजराक्षसरॆल्लरिवनॊळु मुनिदु माडुवदॆनु,
उलूखल ओनकॆगळु धान्यगळ हणिवंददलि संहरिप ॥ १९ ॥

दॆव मानव दानवरु एंदी विधदलावागलिप्परु,
मूवरॊळगिवगिल्ल स्नॆहॊदासीन द्वॆष,
जीवरधिकारानुसारदलीव सुख संसारदुःखव,
ता उणदलवरवरिगुणिसुव निर्गताशननु ॥ २० ॥

ऎल्लि कॆळिदरॆल्लि नॊडिदरॆल्लि बॆडिदरॆल्लि नीडिदरॆल्लि
ऒडिदरॆल्लि आडिदरल्ले इरुतिहनु,
बल्लिदरिगति बल्लिदनु, सरियिल्ल इवगावल्लि नॊडलु,
खुल्लमानवरॊल्लनप्रतिमल्ल जगकॆल्ल ॥ २१ ॥

तप्तलॊहवु नॊळ्प जनरिगॆ सप्त जिह्वन तॆरदि तॊर्पदु,
लुप्त पावक लॊह कांबुदु पूर्वदॊपादि,
सप्तवाहन निखिळ जनरॊळु व्याप्तनादुदरिंद,
सर्वरु आप्तरागिहरॆल्ल कालदि हितव कैकॊंडु ॥ २२ ॥

वारिदनु मळॆगरॆयॆ बॆळॆदिह भूरुहंगळु चित्र फलरस बॆरॆ बॆरिप्पंतॆ,
बहुविध जीवरॊळगिद्दु मारमणनवरवर यॊग्यतॆ–
मीरदलॆ गुणकर्मगळ अनुसार नडॆसुव,
दॆवनिगॆ वैषम्यवॆल्लिहुदॊ ॥ २३ ॥

वारिजाप्तन किरण मणिगळ सॆरि,
तत्तद्वर्णगळनु विकारगैसदे नॊळ्परिगॆ कंगॊळिसुवंददलि,
मारमण लॊकत्रयदॊळिह मूरुविध जीवरॊळगिद्दु,
विहारमाडुवनवर यॊग्यते कर्मवनुसरिसि ॥ २४ ॥

जलवनपहरिसुव घळिगे बट्टलनुळिदु,
जयघंटे कैपिडिदेळेदु होडेवंददलि,
संतत कर्तृतानागि हलधरानुज पुण्यपापद फलगळनु,
दॆवासुरर गणदॊळु विभागव माडि उणिसुत साक्षियागिप्प ॥ २५ ॥

पॊंदिकॊंडिह सर्वरॊळु संबंधवागदे,
सकलकर्मवरंददलि ता माडिमाडिप तत्फलगळुणदे,
कुंददणु माहत्तेनिप, घटमंदिरदि सर्वत्र तुंबिह,
बांदळद तेरदंते इरुतिप्पनु रमारमण ॥ २६ ॥

काद कब्बिण हिडिदु बडियलु वॆदनेयु लॊहगळिगल्लदे–
आदुदॆनै अनळगा व्यथे ऎनु माडिदरू,
आदिदॆवनु सर्व जीवर कादुकॊंडिहनॊळहॊरगे,
दुःखादिगळु संबंधवागुववॆनॊ चिन्मयगे ॥ २७ ॥

मळल मनेगळ माडि मक्कळु केलवु कालदलाडि,
मॊददि तुळिदु केडिसुव तेरदि,
लक्ष्मीरमण लॊकगळ हलवु बगेयलि निर्मिसुव,
निश्चलनु तानागिद्दु सलहुव,
एलरुणियवॊल् नुंगुवगे एल्लिहुदॊ सुखदुःख ॥ २८ ॥

वॆषभाषेगळिंद जनर प्रमॊषगैसुव नटपुरुषनॊल्,
दॊषदूरनु लॊकदॊळु बहुरूप मातिनलि तॊषिसुवनु,
अवरवर मनदभिलाषेगळ पूरैसुतनुदिन पॊषिसुव,
पूतात्म पूर्णानंद ज्ञानमय ॥ २९ ॥

अधम मानवनोर्व मंत्रौषधगळनु तानरितु,
पावक उदकगळ संबंधविल्लदलिप्पनदरोळगे,
पदुमजांडोदरनु सर्वर हृदयदोळगिरे,
कालगुणकर्मद कलुष संबंधवागुवदे निरंजनगे ॥ ३० ॥

ओंदु गुणदोळनंत गुणगळु, ओंदु रूपदोळिहवु
लोकगळोंदे रूपदि धरिसि तद्गत पदार्थदोळहोरगे,
बांदळदवोलिद्दु बहु पेसरिंद करेसुत,
पूर्णज्ञानानंदमय परिपरि विहारव माडि माडिसुव ॥ ३१ ॥

एल्लरोळु तानिप्प, तन्नोळगेल्लरनु धरिसिहनु,
अप्रतिमल्ल, मन्मथजनक, जगदाद्यंतमध्यगळ बल्ल,
बहुगुण भरित, दानव दल्लण, जगन्नाथ विठल,
सोल्लुलालिसि स्तंभदिंदलि बंद भकुतनिगे ॥ ३२ ॥

॥ इति श्री व्याप्ति संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ भॊजन संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

वनजजांडदॊळुळ्ळखिळ चॆतनरु भुंजिप चतुरविध भॊजनपदार्थदि
चतुरविध रसरूप तानागि, मनके बंदंतुंडुणिसि,
संहननकुपचय, करणकानंद,
अनिमिषरिगात्म प्रदर्शन सुखवनीव हरि ॥ १ ॥

नीडदंददलिप्प लिंगकॆषॊडशात्मक रस विभागव माडि,
षॊडश कलॆगळिगॆ उपचयगळने कॊडुत,
क्रॊड एप्पत्तॆरडु साविर नाडिगत-
दॆवतॆगळॊळगिद्दाडुतानंदात्म चरिसुव लॊकदॊळु तानु ॥ २ ॥

वारिवाच्यनु वारियॊळगिद्दारु रसवॆंदॆनिसि,
मूवत्तारु साविर स्त्रीपुरुषनाडियलि तद्रूपधारकनु तानागि,
सर्वशरीरगळलि अहश्चरात्रि विहार माळ्पनु,
बृहतियॆंब सुनामदिं करॆसि ॥ ३ ॥

आरु रस सत्वादि भॆददि आरु मूरागिहवु,
सारासार नीताप्रचुर खंडाखंड चित्प्रचुर,
ईरधिक एप्पत्तुसाविर मारमणन रसाख्यरूप-
शरीरदॊळु भॊज्य सुपदार्थदि तिळिदु भुंजिपुदु ॥ ४ ॥

क्षीरगत रसरूपगळु मुन्नूरु मॆलैवत्तु नालकु,
चारु घृतगत रूपगळु इप्पत्तरॊंभत्तु,
सारगुडदॊळगैदु साविर नूरवॊंदु सुरूप,
द्विसहस्रारॆरडु शत पंचविंशति रूप फलगळलि ॥ ५ ॥

विशद स्थिर तीक्षणवु निर्हर रसगळोळु–
मूरैदु साविर त्रिशतनव रूपगळ चिंतिसि भुंजिपुदु विषय,
श्वसन तत्त्वेशरोळगिद्दीपेसरिनिंदलि करेसुवनु,
धेनिसिदरी परि मनके पोळेवनु बल्ल विबुधरिगे ॥ ६ ॥

कपिल नरहरि भार्गवत्रय वपुष नेत्रदि नासिकास्यदि,
शफरनामक जिह्वेयलि, दंतदलि हंसाख्य,
त्रिपदिपाद्यहयास्य वाच्यदोळपरिमित सुखपूर्ण,
संतत कृपणरोळगिद्दवरवर रस स्वीकरिसि कोडुव ॥ ७ ॥

निरुपमानंदात्म हरि संकरुषण प्रद्युम्न रूपदि–
इरुतिहनु भोक्तृगळोळगे तच्छक्तिदनु येनिसि,
करेसुवनु नारायणनिरुद्धेरडुनामदि भोज्यवस्तुग–
निरुत तर्पकनागि तृप्तियनीव चेतनके ॥ ८ ॥

वासुदेवनु ओळहोरगे अवकाश कोडुव नभस्थनागि–
रमासमेत विहार माळ्पनु पंचरूपदलि,
आ सरोरुह संभवाभव वासवाद्यमरादि चेतन राशियोळगे–
इहनेंदु अरितवनवने कोविदनु ॥ ९ ॥

वासुदेवनु अन्नदोळु, नाना सुभक्ष्यदि संकरुषण,
कृतीश परमान्नदोळु, घृतदोळगिप्पननिरुद्ध,
आ सुपर्णांसगनु सूपदि, वासवानुज शाकदोळु,
मूलेश नारायणनु सर्वत्रदलि नेलेसिहनु ॥ १० ॥

अगणितात्म सुभोजन पदार्थगळ ओळगे,
अखंडवादोंदगळिनोळनंतांशदिंदलि खंडनेंदेनिसि,
जगदि जीवर तृप्तिबडिसुव स्वगत भेद विवर्जितन,
ईर्बगेय रूपवनरितु भुंजिसि अर्पिसवनडिगे ॥ ११ ॥

ई परियलरितुंब नर नित्योपवासि-निरामयनु- निष्पापि-
नित्य महासुयज्ञगळाचरिसिदवनु,
पोपदिप्पुदु बप्पुदेल्ल रमापतिगधिष्ठानवेन्नु,
कृपापयोनिधि मातलालिसुवनु जननियंते ॥ १२ ॥

आरेरडु साविरद मेलिन्नूर ऐवत्तोंदु रूपदि-
सारभोक्तनिरुद्ध देवनु अन्नमयनेनिप,
मूरेरडुवरेसाविरद मेल् मूरधिक नाल्वत्तु रूपदि-
तोरुतिह प्रद्युम्न जगदोळु प्राणमयनागि ॥ १३ ॥

एरडु कोशगळोळहोरगे संकरुषण ऐदु सुलक्षदरवत्तेरडु-
साविरदेळधिक शतरूपगळ धरिसि करेसिकोंब मनोमय एंदु,
अरविदूरनु ईरेरडु साविरद मुन्नूराद-
मेल्नाल्कधिक एप्पत्तु ॥ १४ ॥

रूपदिं, विज्ञान मयनेंबी पेसरिनिं वासुदेवनु-
व्यापिसिह महदादितत्त्वदि तत्पतिगळोळगे,
ई पुरुष नामकन शुभस्वेदापळेनिसिद रमांब,
ता ब्रह्मापरोक्षिगळादवर लिंगांग केडिसुवळु ॥ १५ ॥

ऐदुसाविर नूरु इप्पत्तैदु नारायण रूपव
ता धरिसिकोंडनुदिनदि आनंदमयनेनिप,
ऐदु लक्षद मेले एंभत्तैदु साविर नाल्कु शतगळ-
ऐदु कोशात्मक विरिंचांडदोळु तुंबिहनु ॥ १६ ॥

नूरुवोंदु सुरूपदिं शांतीरमण तानन्ननेनिप,
ऐनूर मेल्मूरधिक दश प्राणाख्य प्रद्युम्न,
तोरुतिहनैवत्तु ऐदु विकार मनदोळु संकरुषण,
ऐनूरु चतुराशीति विज्ञानात्म विश्वाख्य ॥ १७ ॥

मूरु साविरदर्धशत मॆलीरधिक रूपगळ धरिसि
शरीरदॊळगानंदमय नारायणाह्वयनु,
ईरॆरडु साविरद मॆल्मुन्नूर ऐदु सुरूपदिंदलि,
भारतीशनॊळिप्प नवनीतस्थ घृतदंते ॥ १८ ॥

मूरधिक ऐवत्तु प्राण शरीरदॊळगनिरुद्धनिप्प,
ऐनूरु हन्नॊंदधिकपाननॊळिप्प प्रद्युम्न,
मूरनॆ व्याननॊळगैदरॆ नूरु रूपदि संकरुषण,
ऐनूर मूवत्तैदुदाननॊळिप्प मायॆश ॥ १९ ॥

मूल नारायणनु ऐवत्तॆळधिक ऐनूरु रूपव ताळि,
सर्वत्रदि समाननॊळिप्प सर्वज्ञ,
लीलॆगैवनु साविरद मॆलॆळु नूर्हन्नॊंदु रूपव ताळि,
पंचप्राणरॊळु लॊकगळ सलहुवनु ॥ २० ॥

त्रिनवति सुरूपात्मकनिरुद्धनु सदा यजमाननागिद्दु
अनल-यमसॊमादि पितृदॆवतॆगळिगॆ-
अन्ननॆनिपना प्रद्युम्न, संकरुषण विभागव माडिकॊट्टुंडुणिप,
नित्यानंद भॊजनदायि तुर्याह्व ॥ २१ ॥

षण्णवति नामकनु वसु मूगण्ण भास्कररॊळगॆ निंतु,
प्रापन्नरनुदिन निष्कपट सद्भक्तियलि माळ्प-
पुण्य कर्मव स्वीकरिसि कारुण्य सागरनु,
आपितृगळिगगण्य सुखवित्तवर पॊरॆवनु ए‌ल्ल कालदलि ॥ २२ ॥

सुतप ऐकॊत्तर सुपंचाशतवरण करणदि-
चतुरविंशतिसुतत्त्वदि-धातुगळॊळिद्दविरतनिरुद्ध,
जतन माळ्पनु जगदि जीवर प्रततिगळ,
षण्णवति नामक चतुर मूर्तिगळर्चिसुवरदरिंद बल्लवरु ॥ २३ ॥

अबुजजांडोदरनु विपिनदि शबरि येंजलनुंड,
गोकुलदबलेयरनोलिसिदनु, ऋषिपत्नियरु कोट्टन्न सुभुज ता भुंजिसिद,
स्वरमण कुबुजगंधके वोलिद,
मुनिगण विबुध सेवित बिडुवने नावित्त कर्मफल ॥ २४ ॥

गणनेयिल्लद परमसुख सद्गुणगणंगळ,
लेशलेशके एणेयेनिसदु रमाब्ज भवशक्रादिगळ सुखवु,
उणुतुणुत मैमरेदु कृष्णार्पणवेनलु,
कैकोंबनर्भक जननि भोजन समयदलि कैवड्डुवंददलि ॥ २५ ॥

जीवकृत कर्मगळ बिडदे रमावरनु स्वीकरिसि फलगळनीवनु-
अधिकारानु सारदलवरिगनवरत,
पावकनु सर्वस्व भुंजिसि ता विकारवनैदनोम्मेगे,
पावनके पावननेनिप हरियुंबुदेनरिदु ॥ २६ ॥

कलुषजिह्वेगे सुष्टुभोजन जल मोदलु विषतोरुवुदु,
निष्कलुष जिह्वेगे सुरस तोरुवुदेल्ल कालदलि,
सुललितांगगे सकल रस मंगळवेनिसुतिहुदु,
अन्नमय कैकोळदे बिडुवने पूतनिय विषमोलेयनुंडवनु ॥ २७ ॥

पेळलेनु समीरदेवनु काळकूटवनुंडु लोकव पालिसिद,
तद्दासनोर्वनु अमृतनेनिसिदनु,
श्री लकुमिवल्लभ शुभाशुभ जालकर्मगळुंबनु,
उपचयदेळिगेगळिवगिल्ल वेंदिगु स्वरसगळ बिट्टु ॥ २८ ॥

ई परियलच्युतन तत्तद्रूप तन्नामगळ सले,
नाना पदार्थदि  नेनेनेनेदु भुंजिसुतलिरु,
विषय प्रापक स्थापक नियामक व्यापकनु एंदरिदु,
नी निर्लेपनागिरु पुण्य पापगळर्पिसवनडिगे ॥ २९ ॥

ऐदु लक्षेंभत्तरोंभत्ताद साविरदेोळुनूरर ऐदु रूपव धरिसि,
भोक्तृग भोज्यनेंदेनिसि,
श्री धरादुर्गारमण पादादि शिर पर्यंत व्यापिसि कादु कोंडिह,
संतत जगन्नाथ विठलनु ॥ ३० ॥

॥ इति श्री भोजन संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ विभूति संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

श्रीतरुणि वल्लभन परम विभूतिरूप कंडकंडल्ली तेरदि-
चिंतिसुत नॊडु संभ्रमदि,
नीतसाधारण विशॆष सजाति नैजाहितवु विजाति,
खंडाखंड बगॆगळनरितु बुधरिंद ॥ १ ॥

जलधरागसदॊळगॆ चरिसुव हलवु जीवर निर्मिसिहनु,
अदरॊळु सजाति विजाति सधारण विशॆषगळ तिळिदु.
तत्तत् स्थानदलि वॆग्गळिसि हब्बिद मनदि पूजिसुतलि,
अवन व्याप्त रूपगळ नॊडुतलि हिग्गुवदु ॥ २ ॥

प्रतिमॆ शालग्राम गॊऽभ्यागतनतिथि श्रीतुलसि पिप्पल-
यति वनस्थ गृहस्थ वटु यजमान स्वपरजन,
पृथिवि जलशिखि पवन तारापथ नवग्रह यॊग करण भ-
तिथि सितासित पक्ष संक्रमण अवनधिष्ठान ॥ ३ ॥

काद कांचनदॊळगॆ शॊभिप आदितॆयास्यन तेरदि
लक्ष्मी धवनु प्रतिदिनदि शालग्रामदॊळगिप्प-
ऐदुसाविर म्यॊलॆ मूवत्तैदधिक ऐनूरु रूपदि,
भूधरगळभिमानि दिविजरॊळिप्पननवरत ॥ ४ ॥

श्रीरमण प्रतिमॆगळॊळगॆ हदिमूरधिकवागिप्प-
मॆलैनूरु रूपव धरिसि इप्पनु आहिताचलदि,
दारुमथनव गैय्ये पावक तॊरुवंते-
प्रतीक सुररॊळु तॊरुतिप्पनु तत्तदाकालदलि नॊळ्परिगॆ ॥ ५ ॥

करणनियामकनु तानुपकरणदोळगैवत्तेरडु साविरद–
हदिनाल्कधिक शतरूपगळनु धरिसि,
इरुतिहनु तद्रूपनामगळरितु पूजिसुतिहर पूजेय निरुत कैकोंब,
तृषार्तनु जलव कोंबंते ॥ ६ ॥

बिंबरूपनु ई तेरदि जडपोंबसिर मोदलाद सुररोळगिंबुगोंडिहनेंदरिदु,
धर्मार्थकामगळ हंबलिसदनुदिनदि
विश्वकु टुंबि कोट्ट कणान्न कुत्सित कंबळियें,
सौभाग्यवेंदवनंघ्रिगळ भजिसु ॥ ७ ॥

वारियोळगिप्पत्तु नालकु,
मूरेरडु साविरद मॆल् मुन्नूरु हदिनॆळेनिप रूपवु श्रीतुलसिदळदि,
नूरु अरवत्तोंदु पुष्पदि, मूरधिकदश दीपदोळु,
नानूरुमूरु सुमूर्तिगळु गंधदोळगिरुतिहवु ॥ ८ ॥

अष्टदळ सद्हृदय कमलाधिष्ठितनु तानागि,
सर्वोत्कृष्टमहिमनु दळगळलि संचरिसुतोळगिद्दु,
दुष्टरिगे दुर्बुद्धि कर्म, विशिष्टरिगे सुज्ञान धर्म,
सुपुष्टिगैसुत संतैप निर्दुष्ट सुखपूर्ण ॥ ९ ॥

वित्तदॆहागार दारापत्य मित्रादिगळोळगे,
गुणचित्त बुद्ध्यादिंद्रियगळोळु, ज्ञानकर्मदोळु,
तत्तदाह्वयनागि करेसुत सत्य संकल्पानुसारदि,
नित्यदलि ता माडि माडिपनेंदु स्मरिसुतिरु ॥ १० ॥

भावद्रव्य क्रियेगळेनिसुव ई विधाद्वैतत्रयंगळ,
भाविसुत सद्भक्तियलि सर्वत्र मरेयदले,
तावकनु तानेंदु प्रतिदिन सॆविसुव भक्तरिगे,
तन्ननु ईव काव कृपाळु करिवरगोलिद तेरदंते ॥ ११ ॥

बांदळवे मोदलादुदरोळोंदोंदरलि,
पूजा सुसाधन वेंदेनिसुव पदार्थगळु बगेबगेय नूतनदि संदणिसि कोंडिहवु,
ध्यानके तंदिनितु चिंतिसि सदा गोविंदनर्चिसि नोडु,
नलिनलिदाडु कोंडाडु ॥ १२ ॥

जलजनाभन मूर्ति मनदलि नेलेगोळिसि,
निश्चल भकुतियलि चळि बिसिलु मळेगाळिगळ निंदिसदे नित्यदलि,
नेलेदोळिह गंधवे सुगंधवु, जलवे रस, रूपवे सुदीपवु,
एलरु चामर, शब्द वाद्यगळर्पिसलु ओलिव ॥ १३ ॥

गोळकगळु रमारमणन निजालयगळु,
अनुदिनदि संप्रक्षालनेये सम्मार्जनवु, करणगळे दीपगळु,
सालु तत्तद्विषयगळ सम्मेळनवे परियंक,
तत्सुखदेळिगेये सुप्पत्तिगे, आत्मनिवेदनवे वसन ॥ १४ ॥

पापकर्मवु पादुकेगळ अनुलेपनवु, सत्पुण्यशास्त्रालापनवे श्रीतुलसि,
सुमनोवृत्तिगळे सुमन,
कोप धूपवु, भक्ति भूषण, व्यापिसिद सद्बुद्धि छत्रवु,
दीपवे सुज्ञान, आरार्तिगळे गुणकथन ॥ १५ ॥

मनवचन कायिक प्रदक्षिणे, यनुदिनदि सर्वत्र व्यापक–
वनरुहेक्षणगर्पिसुत मोदिसुतलिरु सतत,
अनुभवके तंदुको सकल साधनगळोळगिदे मुख्य,
पामर मनुजरिगे पेळिदरे तिळियदु बुधरिगल्लदले ॥ १६ ॥

चतुरविध पुरुषार्थ पडेवरे चतुरदशलोकगळ मध्यदोळु,
इतरुपायगळिल्ल नोडलु सकलशास्त्रदलि,
सतत विषयेंद्रियगळलि प्रविततनेनिसि राजिसुव लक्ष्मीपतिगे,
सर्वसमर्पणेये महपूजे सदुपाय ॥ १७ ॥

गॊळकवे कुंड, अग्नि करणवु, मॆलोदगि बहविषय समिधेयु,
गाळि यत्नवु, काम धूमवु, सन्निधानार्चि,
मॆळनवे प्रज्वाले, किडिगळु तूळिदानंदगळु,
तत्तत्काल मातुगळेल्ल मंत्राध्यात्मयज्ञविदु ॥ १८ ॥

मधुविरोधिय पट्टणके पूर्वद कवाटगळक्षिनासिक,
वदन श्रोत्रुगळेरडु दक्षिण उत्तरद्वार,।
गुदउपस्थगळेरडु पश्चिम कदगळेनिपवु,
षट्सरोजवे सदन, हृदयवे मंटप, त्रिगुणंगळे कलश ॥ १९ ॥

धातुगळे सप्तावरण, उपवीधिगळे नाडिगळु,
मदगळु यूथपगळु, सुषुम्ननाडिये राजपंथान,
ई तनूरुहगळे वनंगळु, मातरिश्वनु पंचरूपदि–
पातकिगळॆंबरिगळनु संहरिप तळवार ॥ २० ॥

इनशशांकादिगळु लक्ष्मीवनितेयरसन द्वारपालकरेनिसुतिप्परु,
मनद वृत्तिगळॆ पदातिगळु,
अनुभविप विषयंगळे पट्टणके बप्प पसारगळु,
जीवनॆ सुवर्तक कप्पगळ कैकोंब हरि तानु ॥ २१ ॥

उरुपराक्रमनरमनिगे दशकरणगळे कन्नडिय सालुगळु,
अरविदूरन सद्विहारके चित्त मंटपवु,
मरळि बीसुव श्वासगळु चामर, विलासिनि बुद्धि,
दामोदरगे साष्टांग प्रणामगळॆ सुशयनगळु ॥ २२ ॥

मारमणनरमनेगे सुमहाद्वारवेनिसुव वदन कोप्पुव तोरण स्मश्रुगळु,
कॆशगळॆ पताकेगळु,
ऊरिनडेवंघ्रिगळु जंघेगळूरु मध्योदर शिरगळागारद उप्परिगेगळु,
कोशगळैदु कोणेगळु ॥ २३ ॥

ई शरीरवे रथ, पताक सुवासगळु, पुंड्रगळु ध्वज,
सिंहासनवु चित्तवु, सुबुद्धियु कलश, सन्मनवु पाश,
गुण दंडत्रयगळु, शुभाशुभद्वय कर्म चक्र,
महासमर्थाश्वगळु दशकरणंगळेनिसुवुवु ॥ २४ ॥

मातरिश्वनु दॆहरथदॊळु सूतनागिह सर्वकालदि,
श्रीतरुणिवल्लभ रथिकनॆंदरिदु नित्यदलि,
प्रीतियिंदलि पॊषिसुत वातातपादिगळिंदविरत,
ई तनुविनॊळु ममते बिट्टवने महायॊगि ॥ २५ ॥

भववेनिप वनधियॊळु कर्मप्रवहदॊळु संचरिसुतिह–
दॆहवे सुनावेय माडि तन्नवरिंदवडगूडि,
दिवस दिवसगळल्लि लक्ष्मीधवनु क्रीडिपनॆंदु चिंतिसे,
पवननय्य भवाब्धिदाटिसि परमसुखवीव ॥ २६ ॥

आपणालयगळ पदार्थवु, स्त्रीपुरुषरिंद्रियगळलि,
दीपपावकरॊळगिड्डुव तैलादि द्रव्यगळ,
आ परमगवदानवॆंदु पदॆपदॆ मरेयदले स्मरिसुत,
भूपनंददि संचरिसु निर्भयदि सर्वत्र ॥ २७ ॥

वारिजभवांडवे सुमंटप, मॆरुगिरि सिंहासनवु,
भागीरथिये मज्जनवु दिग्वस्त्रगळु, नुडि मंत्र,
भूरुहज फलपुष्प गंध समीर शशिरवि दीप,
भूषण तारकगळु, एंदर्पिसलु कैकॊंडु मन्निसुव ॥ २८ ॥

भूसुररॊळिप्पब्ज भवनॊळु वासुदॆवनु,
वायुखगप सदाशिवहिपॆंद्रनु विवस्वान्नामक सूर्य–
भॆशकाममरास्य वरुणादी सुररु क्षत्रियरॊळिप्परु,
वासवागिह संकरुषणन नॊडि मॊदिपरु ॥ २९ ॥

मीन कॆतन तनय प्राणापान व्यानॊदान मुख्यैकॊन पंचाशन्मरुद्गण–
रुद्र वसुगणरु,
मॆनकात्मज कुवर विष्वक्सॆन धनपाद्यनिमिषरनु,
सदानुरागदि धॆनिपुदु वैश्यरॊळु प्रद्युम्न ॥ ३० ॥

इरुतिहरु नासत्यदस्ररु निरऋतियु यमधर्मकिंकररु–
मॆदिनि कालमृत्यु शनैश्चरादिगळु–
करॆसिकॊंबरु शूद्ररॆंदनवरत,
शूद्ररॊळिप्परु इवरॊळगरविदूरनिरुद्धनिहनॆंदरिदु मन्निपुदु ॥ ३१ ॥

वीतभय नारायण चतुष्पातु तानॆंदॆनिसि,
तत्तज्जाति धर्म सुकर्मगळ ता माडि माडिसुत,
चॆतनर ओळहॊरगॆ ऒतप्रॊतनागिद्दॆल्लरिगॆ,
संप्रीतियलि धर्मार्थकामादिगळ कॊडुतिहनु ॥ ३२ ॥

निधन धनद विधात विगताभ्यधिक समसमवर्ति सामग,
त्रिदशगणसंपूज्य त्रिककुद्धाम शुभनाम,
मधुमथन भृगुराम घॊटक वदन,
सर्वपदार्थदॊळु तुदिमॊदलु तुंबिहनॆंदु चिंतिसु बिंबरूपदलि ॥ ३३ ॥

कन्नडिय कैविडिदु नॊडलु तन्निरवु सव्यापसव्यदि कण्णिगॊप्पुव तॆरदि,
अनिरुद्धनिगॆ ई जगवु भिन्नभिन्नवॆ तॊरुतिप्पुदु, ।
जन्यवादुदरिंद प्रतिबिंबन्न–
मयगानॆंदरिदु पूजिसलु कैकॊंब ॥ ३४ ॥

बिंबरॆनिपरु स्वॊत्तमरु, प्रतिबिंबरॆनिपरु स्वावररु,
प्रतिबिंब बिंबगळॊळगॆ कॆवल बिंब हरियॆंदु,
संभ्रमदि पाडुतलि नॊडुत उंबुडुवुदिडुवुदु कॊडुवुदॆल्ल,
अंबुजांबकनंघ्रि पूजॆगळॆंदु नलिदाडु ॥ ३५ ॥

नदिय जल नदिगेरेव तेरदंददलि,
भगवद्दत्त धर्मगळु उदधिशयननिगर्पिसुत व्यावृत्त नीनागि,
विधिनिषेधादिगळिगोळगागदले नोडुत,
दर्वियंददि पदुमनाभन सकल कर्मगळल्लि नेनेवुतिरु ॥ ३६ ॥

अरियदिर्दरु एम्मोळिद्दनवरत विषयगळुंब,
ज्ञानोत्तरदि तनगर्पिसलु चित्सुखवित्तु संतैप,
सरितु कालप्रवहगळु कंडरेयु सरि काणदिरे परिववु,
मरळि मज्जन पान कर्मगळिंद सुखविहवु ॥ ३७ ॥

ऐनु माडुव कर्मगळु लक्ष्मीनिवासनिगर्पिसनुसंधान पूर्वकदिंद-
संदेहिसदे दिनदिनदि,
माननिधि कैकोंडु सुखवित्तानतर संतैप,
तृण जल धेनु तानुंडनवरत पाल्गरेव तेरदंते ॥ ३८ ॥

पूर्व दक्षिण पश्चिमोत्तर पार्वतीपति अग्निवायु सुशार्वरीचर,
दिग्वलयदोळु हंसनामकनु,
सर्वकालदि सर्वरोळु सुरसार्वभौमनु स्वेच्छेयलि-
मत्तोर्वरिगे गोचरिसद अव्यक्तात्मनेंदेनिप ॥ ३९ ॥

परि इडावत्सरनु संवत्सर दोळनिरुद्धादि रूपव धरिसि,
बार्हस्पत्य सौरभ चांद्रमनु एनिसि इरुतिह जगन्नाथ विठल,
स्मरिसुववरनु संतैपनेंदु
उरुपराक्रम उचितसाधन योग्यतेयनरितु ॥ ४० ॥

॥ इति श्री विभूति संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ पंचमहायज्ञ संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

जननि पित भू वारिदांबरवॆनिप पंचाग्नियलि–
नारायणन त्रिंशति मूर्तिगळ व्यापार व्याप्तिगळ नेनेदु,
दिवसगळॆंब समिधेगळनु निरंतर हॊमिसुत,
पावनके पावन नेनिप परमन बॆडु परमसुख ॥ १ ॥

गगन पावक समिधे, रवि रश्मिगळे धूमवु,
अर्चियेनिपुदु हगलु, नक्षत्रगळु किडिगळु, चंद्रमांगार,
मृगवरॊदरनोळगे ऐदु रूपगळ चिंतिसि–
भक्तिरस मातुगळे मंत्रव माडि हॊमिसुवरु विपश्चितरु ॥ २ ॥

पावकनु पर्जन्य समिधेयु, प्रावहीपति धूमगळु,
मॊघावळिगळर्चि, क्षणप्रभे गर्जनवे किडियु,
भाविसुवुदंगार सिडिलॆंदु,
ई विधाग्नियोळब्धिजातन कॊविदरु हॊमिसुवरनुदिन परम भकुतियलि ॥ ३ ॥

धरणियॆंबुदे अग्नि, संवत्सरवे समिधे, विहायसवे पोगे,
इरळुरि दिशांगार, अवांतरदिग्वलय किडियु,
वरुषवॆंबाहुतिगळिंदलि हरिय मेच्चिसि,
सकलरोळगध्वरियनागिरु सर्वरूपात्मकन चिंतिसुत ॥ ४ ॥

पुरुष शिखि, वाक्समिधे, धूमवु परण, अर्चियु जिह्वे,
श्रॊत्रग ळेरडु किडिगळु, लॊचनगळंगारवेनिसुवुवु,
निरुत भुंजिसुवन्न यदुकुलवरनिगवदानगळु–
यंदीपरि समर्पणे गैये कैगोंडनुदिनदि पोरेव ॥ ५ ॥

मत्ते यॊषाग्नियॊळु तिळिवुदु उपस्थतत्त्ववे समिधे,
कामॊत्पत्ति परमातुगळु धूमवु, यॊनि महदर्चि,
तत्प्रवेशांगार, किडिगळु उत्सहगळुत्सर्जनवे,
पुरुषॊत्तमनिगवदानवेने कैकॊंडु मन्निसुव ॥ ६ ॥

ऐदु अग्निगळल्लि मरॆयदे ऐदु रूपात्मकन–
इप्पत्तैदु रूपगळनुदिनदि नॆनॆवरिगे जन्मगळ ऐदिसनु नळिनाक्ष,
रणदॊळु मैदुनन काय्दंते सलहुव,
बैदवगे गतियित्त भयहर भक्तवत्सलनु ॥ ७ ॥

पंचनारीतुरगदंददि पंचरूपात्मकनु ता षट् पंचरूपव धरिसि,
तत्तन्नामदिं करॆसि,
पंचपावक मुखदि गुणमय पंचभूतात्मक शरीरव,
पंचविध जीवरिगे कॊट्टल्लल्ले रमिसुवनु ॥ ८ ॥

विधिभवादि समस्त जीवर हृदयदॊळगॆकात्मनॆनिसुव पदुमनाभनु,
अच्युतानंतादिरूपदलि,
अधिसुभूताध्यात्मवधिदैवदॊळु करॆसुव,
प्राणनागाभिदनु दशरूपदलि दशविधप्राणरॊळगिद्दु ॥ ९ ॥

ईरैदु साविरद इप्पत्तारधिक मुन्नूरु रूपगळीरॆरडु स्थानदलि–
चिंतिपुदनुदिनदि बुधरु,
नूरु इप्पत्तॊळधिक मूरारु साविर रूपदिं–
दशमारुतरॊळिद्दवरवर पेसरिंद करॆसुवनु ॥ १० ॥

चित्तैसुवुदु एंटधिक इप्पत्तु साविर नाल्कुशतदैवत्तु मूरु सुमूर्तिगळु–
अहवल्ले परियंत,
हत्तु नालकु रूपगळ नेरे बित्तरव यीपरि तिळिदु,
पुरुषॊत्तमन सर्वत्र पूजेय माडु कॊंडाडु ॥ ११ ॥

ईरेरडुशत द्व्येष्टधिक हदिनारुसाविर रूप सर्व
शरीरदोळु शब्दादिगळधिष्ठानदोळगिप्प–
मारुतनु नागादि रूपदि मूरने गुणमानि श्री दुर्गारमण
विद्याकुमोहव कोडुव करणक्के ॥ १२ ॥

ऐदविद्येगळोळगे इह नागादिगळधिष्ठानदलि लक्ष्मीधवनु
कृद्धोल्क मोदलादैदु रूपगळ ता धरिसि सज्जनरविद्यव छेदिसुव,
तामसरिगज्ञानादिगळ कोट्टवरवर–
साधनव माडिसुव ॥ १३ ॥

गोवुगळोळुद्गीथनिह, प्रस्थाव हिंकारेरडु रूपदि–
आवि अजगळोळिहनु, प्रतिहाराह्व हयगळोळु,
जीवनप्रद निधन मनुजरोळु, ई विधदोळिह पंचसामव–
झाव झावके नेनेवरिगे ऐदिसनु जन्मगळ ॥ १४ ॥

युगचतुष्टयगळलि तानिद्द्युगप्रवर्तक–
धर्मकर्मगळिगे प्रवर्तक वासुदेवादीरेरडु रूपतेगेदु कोंडु,
युगादिकृतु ता युगप्रवर्तकयेनिसि,
धर्मप्रघटकनु तानागि भकुतरिगीव संपदव ॥ १५ ॥

तलेयोळिह नारायणनु, गंटलडि ओडलोळु वासुदेवनु,
बलदलिह प्रद्युम्न, एडभागदलनिरुद्ध,
केळगिनंगदि संकरुषणन तिळिदु,
ई परि सकल देहगळोळगे पंचात्मकन रूपव नोडु कोंडाडु ॥ १६ ॥

तनुविशिष्टदि इप्प नारायणनु,
कटिपादांत संकरुषणनु, शिरजघनांत वागिह वासुदेवाख्य,
अनिमिषेषनिरुद्ध प्रद्युम्ननु एडदि बलभागदि,
चिंतनेय माळ्परिगुंटे मैलिगे विधिनिषेधगळु ॥ १७ ॥

पदुमनाभनु पाणियोळगिह, वदनदलि हृशीकेश,
नासिक सदनदलि श्रीधरनु, जिह्वेयोळिप्प वामननु,
विदित नेत्रदि त्रिविक्रमनु, मधुह त्वग्देशदोळगिह,
कर्णदलि इप्पनु विष्णुनामक श्रवणनेंदेनिसि ॥ १८ ॥

मनदोळिह गोविंद, माधव धनपसखतत्त्वदोळु,
नारायण महत्तत्वदोळु, अव्यक्तदोळु केशवनु,
इनितु रूपव देहदोळु चिंतनेय गैव महात्मरिळेयोळु-
मनुजरवरल्लमररे सरि हरिकृपाबलदि ॥ १९ ॥

नेलदोळिप्पनु कृष्णरूपदि, जलदोळिप्पनु हरियेनिसि,
शिखियोळगे इप्पनु परशुराम उपेंद्रनेंदेनिसि,
एलरोळिप्पनु जनार्दननु, बांदळदोळच्युत,
गंध नरहरि, पोळेवधोक्षज रसगळोळु रसरूप तानागि ॥ २० ॥

रूप पुरुषोत्तमनु, स्पर्श प्रापकनु अनिरुद्ध,
शब्ददि व्यापिसिह प्रद्युम्न, उपस्थदि वासुदेवनिह,
ता पोळेव पायुस्थनागि जयापतियु संकरुषणनु,
सुस्थापकनेनिसि पाददोळु दामोदरनु पोळेव ॥ २१ ॥

चतुरविंशति तत्त्वदोळु श्रीपतिये अनिरुद्धादि रूपदि,
विदितनागिद्दखिल जीवर संहननदोळगे,
प्रतति यंददि सुत्तुसुत्तुत पितृगळिगे तर्पकनेनिसिकोंडतुळमहिमनु,
षण्णवतिनामदलि नेलेसिहनु ॥ २२ ॥

चतुरविंशति तत्त्वदोळु तत्पतिगळेनिसुव ब्रह्म मुख देवतेगळोळु,
हन्नोंदुनूरैवत्तेरडु रूप-
विततनागिद्देल्ल जीवर जतन माडुव गोसुग,
जगत्पतिगे ऐनादरु प्रयोजनविल्ल विदरिंद ॥ २३ ॥

इंदिराधव शक्ति मोदलादोंदधिक दशरूपदिंदलि,
पोंदिहनु सकलेंद्रियगळलि पुरुषनामकनु,
सुंदरप्रद पूर्णज्ञानानंदमय चिद्देहदोळु,
तानोंदरक्षणवगलदले परमाप्तनागिप्प ॥ २४ ॥

आरधिक दशरूपदिंदलि तोरुतिप्पनु विश्व,
लिंगशरीरदोळु तैजसनु, प्राज्ञनु तुर्यनामकनु,
मूरैदु रूपगळ धरिसुतलीरैदु करणदोळु मात्रदि, ।
खेर शिखि जलभूमियोळगिहनात्मनामदलि ॥ २५ ॥

मनदोळाहंकारदोळु चिंतनेय माळ्पुदु अंतरात्मन,
घन सुतत्त्वदि परमन, अव्यक्तदलि ज्ञानात्म,
इनितु पंचाशद्वरण वेद्यन अजाद्यैवत्तु मूर्तिगळनु,
सदा सर्वत्र देहगळल्लि पूजिपुदु ॥ २६ ॥

चतुरविंशति तत्त्वदोळु तत्पतिगळेनिसुव ब्रह्ममुख देवतेगळोळु,
हदिमूरु साविरदेंटु नूरधिक चतुरविंशति रूपदिंदलि,
विततनागिद्देल्लरोळु प्राकृत पुरुषनंददलि–
पंचात्मकनु रमिसुवनु ॥ २७ ॥

केशवादि सुमूर्ति द्वादश मास पुंड्रगळल्लि,
वेदव्यास अनिरुद्धादि रूपगळारु ऋतुगळलि,
वासवागिहनेंदु त्रिंशति वासरदि,
सत्कर्म धर्म निराशेयिंदलि माडु करुणव बेडु कोंडाडु ॥ २८ ॥

लोष्ठकांचन लोहशैलज काष्टमोदलादखिळ जड,
परमेष्ठि मोदलादखिळचेतनरोळगे अनुदिनवु चेष्टेगळ माडिसुत तिळिसदे,
प्रेष्ठनागिद्देल्लरिगे,
सर्वेष्टदायक संतैसुवनु सर्व जीवरनु ॥ २९ ॥

वासुदेवनिरुद्ध रूपदि पुंशरीरदोळिहनु,
सर्वद स्त्रीशरीरदोळिहनु संकरुषणनु–प्रद्युम्न,
द्वासुपर्णश्रुतिविनुत सर्वासुनिलय नारायणन–
सदुपासनेय गैववरु जीवन्मुक्तरेनिसुवरु ॥ ३० ॥

तन्ननंतानंत रूप हिरण्यगर्भादिगळोळगे कारुण्यसागर हरहि,
अवरवरखिळ व्यापार बन्नबडदले माडि माडिसि,
धन्यरेनिसि समस्त दिविजर, ।
पुण्यकर्मव स्वीकरिसि सुखवित्तु पालिसुव ॥ ३१ ॥

सागरदोळिह नदिय जलभेदागसदोळिप्पब्द बल्लवु,
कागेगुब्बिगळरियबल्लवे नदिय जलस्थितिय,
भोगिवर परियंक शयननोळी गुणत्रयबद्ध जगविहुदु,
आगमज्ञरु तिळिवरज्ञानिगळिगळवडदु ॥ ३२ ॥

करणगुणभूतगळोळगे तद्वरनेनिप ब्रह्मादि दिविजरोळरितु,
रूप चतुष्टयगळनुदिनदि सर्वत्र स्मरिसुतनुमोदिसुत हिग्गुत–
परवशदि पाडुवरिगे, तन्निरव तोरिसि,
भवविमुक्तर माडि पोषिसुव ॥ ३३ ॥

मूलरूपनु मनदोळिह, श्रवणालियोळगिह मत्स्य,
कूर्मनु कोलरूपनु त्वक्, रसनदोळगिप्प नरसिंह,
बालवटु वामननु नासिक नाळदोळु, वदनदलि भार्गव,
वालिभंजन हस्तदोळु, पाद श्रीकृष्ण ॥ ३४ ॥

जिन विमोहक बुद्ध पायुग, दनुजभंजन कल्कि मेढ्रदि,
इनितु दशरूपगळ दशकरणंगळलि तिळिदु,
अनुभविप विषयंगळु कृष्णार्पणवेनलु कैकोंब,
वृजिनार्दन वर जगन्नाथ विठल विश्वव्यापकनु ॥ ३५ ॥

॥ इति श्री पंचमहायज्ञ संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ इति पंचतन्मात्र संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

भू सलिल शिखि पवन भूताकाशदोळगैदैदु तन्मात्रासहित–
ओंदधिक पंचाशद्वरण वेद्य,
ई शरीरदि व्यापिसिद्दु सुरासुररिगे निरंतरदलि,
सुखासुखप्रदनागि आडुव द्वेषिपर बडिव ॥ १ ॥

प्रणवप्रतिपाद्य त्रिनामदि तनुविनोळु–
त्रिस्थानगनिरुद्धनु त्रिपंचक ऐकविंशति चतुरविंशतिगनेनिसि,
एप्पत्तेरडु साविर इनितु नाडिगळोळु नियामिसुतनिभस्तिग
लोकदोळु सर्वत्र बेळगुवनु ॥ २ ॥

जीवलिंगनिरुद्ध स्थूल कळेवरगळलि,
विश्व तुरगग्रीव मूलेशाच्युतत्रय हंस मूर्तिगळ,
ई विध चतुःस्थानदलि शांतीवरन ईरेरडु रूपदि,
भाविसुवुदेकोनविंशति मूर्ति सर्वत्र ॥ ३ ॥

कलुषविल्लद दर्पणदि प्रतिफलिसि सर्व पदार्थगळु कंगोळिसुवंददलि,
बिंबजडचेतनगळोळगिद्दु पोळेव बहुरूपदलि,
सज्जनरोळगे मनदर्पणदि ता,
निश्चल निरामय निर्विकार निराश्रयानंत ॥ ४ ॥

ई शरीर चतुष्टयगळोळु कोशधातुग भारतिप–
प्राणेशनिप्पत्तोंदु साविरदारुनूरेनिप श्वाससरूपक हंस,
भास्कर भेशरोळगिद्दवर कैविडिदु,
ई सरोजभवांडदोळु सर्वत्र तुंबिहनु ॥ ५ ॥

शिरगळैदु, ऐदेरडु बाहुगळु, एरडु पादगळु,
ओंदु मध्योदरदि शोभिप, वाङ्मनोमयनेनिसि नित्यदलि,
करणधातुगळल्लि एप्पत्तेरडु साविर नाडिगळलिप्प,
अरविदूरनु भारतप्रतिपाद्यनेंदेनिसि ॥ ६ ॥

ईरेरडु देहोर्मिभूतगळारधिकदश ऋग्विनुत,
लक्ष्मीरमण विष्ण्वाख्यरूपदि चतुषष्ठिकला धारकनु तानागि,
ब्रह्म पुरारि मुख्यरोळिद्दु सतत विहार माळ्पनु,
चतुष्पादाह्वयदि लोकदोळु ॥ ७ ॥

तृण मोदलु ब्रह्मांत जीवर तनुगळत्रयगळलि,
नारायणन साविरदैदु नूरिप्पत्तु मेलारु गणने माळ्पुदु बुधरु रूपव,
घृणिः सूर्यादित्यनामगळनुदिनदि-
जपिसुवरिगीवारोग्यसंपदव ॥ ८ ॥

ऐदुनूरेप्पत्तु नालकु आधिभौतिकदल्लि तिळिवुदु,
ऐदेरडु शत ऐकविंशति रूपवध्यात्म,
भेदगळिन्नूरु मूवत्ताद मेलोंदधिक मूर्तिगळु-
आदरदलधिदैवदोळु चिंतिपुदु भूसुररु ॥ ९ ॥

सुरुचि शार्वरीकरनेनिसि संकरुषण प्रद्युम्न
शशि भास्कररोळगे अरवत्तधिक मुन्नूरु रूपदलि करेसिकोंबनु,
अहस्संवत्सरनेनिपनु,
विशिष्टनामदलि अरितवरिगे आरोग्यभाग्यवनीवानंदमय ॥ १० ॥

ऐकपंचाशद्वरण गत माकळत्रनु सर्वरोळगे-
अव्याकृताकाशांत व्यापिसि निगमततिगळनु-
व्याकरण भारत मुखाद्यनेकशास्त्र पुराण भाष्यानीकगळ कल्पिसि,
मनोवाङ्मयनेनिसिकोंब ॥ ११ ॥

भारभृन्नामकन साविरदारनूरिप्पत्तुनालकु मूरुतिगळु,
चराचरदि सर्वत्र तुंबिहवु,
आरुनालकु जडगळलि, हदिनारु चेतनगळलि चिंतिसे,
तोरिकोंबनु तन्न रूपव सकल ठाविनलि ॥ १२ ॥

मिसुणि मेलिह मणियवोल् राजिसुव ब्रह्मादिगळ मनदलि–
बिसिजजांडाधारकनु आधेयनेंदेनिसि,
द्विशत नाल्वत्तेरडु रूपदि शशियोळिप्पनु,
शशदोळगे शोभिसुव नाल्वत्तेरडधिक शतरूपदलि बिडदे ॥ १३ ॥

एरडु साविरदेंटु रूपवनरितु सर्व पदार्थदलि,
श्रीवरन पूजेयमाडु वरगळ बेडु कोंडाडु,
बरिदे जलदोळु मुळुगि बिसिलोळु बेरळनेणिसिदरेनु,
सद्गुरु हिरियरनुसरिसि, इदर मर्मवनरियदिह नरनु ॥ १४ ॥

मत्ते चिद्देहद ओळगे,
एंभत्तु साविरदेळुनूरिप्पत्तैदु नरसिंह रूपदलिद्दु,
जीवरिगे नित्यदलि हगलिरळु बप्पपमृत्युविगे ता मृत्युवेनिसुव,
भृत्यवत्सल भयविनाशन भाग्यसंपन्न ॥ १५ ॥

ज्वरनोळिप्पत्तेळु, हरनोळगिरुवनिप्पत्तेंटु रूपदि,
एरडुसाविरदेंटुनूरिप्पत्तेळधिक ज्वरहराह्वय नारसिंहन–
स्मरणेमात्रदि दुरितराशिगळिरदे पोपवु,
तरणिबिंबव कंड हिमदंते ॥ १६ ॥

मासपरियंतरवु बिडदे नृकेसरिय शुभनाम मंत्र,
जितासनदलेकाग्रचित्तदि निष्कपटदिंद,
बेसरदे जपिसलु वृजिनगळ नाशगैसि मनोरथगळ परेश पूर्तिय माडि कोडुवनु,
कडेगे परगतिय ॥ १७ ॥

चतुरमूर्त्यात्मक हरियु त्रिंशतिसुरूपदि ब्रह्मनोळु,
मारुतनोळिप्पत्तॆळु रूपदॊळिप्प प्रद्युम्न,
सुतरॊळिप्पत्तैदु हदिनॆंटतुळ रूपगळरितु,
वत्सर शतगळलि पूजिसुतलिरु चतुरात्मकन पदव ॥ १८ ॥

नूरु वरुषकॆ दिवस मूवत्तारु साविरवहवु,
नाडि शरीरदॊळगिनितिहवु स्त्रीपुंभेददलि हरिय–
ईरधिक ऎप्पत्तुसाविर मूरुतिगळने नेनॆदु,
सर्वाधारकन सर्वत्र पूजिसु पूर्णनॆंदरिदु ॥ १९ ॥

कालकर्मगुणस्वभावगळालयनु तानागि,
लक्ष्मी लॊल तत्तद्रूपनामदि करॆसुतॊळगिद्दु,
लीलॆयिंदलि सर्वजीवर पालिसुव–संहरिप–सृष्टिप,
मूलकारण प्रकृति गुणकार्यगळ मनॆमाडि ॥ २० ॥

तिलजवर्तिगळनुसरिसि प्रज्ज्वलिसि दीपगळु–
आलयद कत्तलॆय भंगिसि तद्गतार्थव तॊरुवंददलि,
जलरुहेक्षण तन्नवर मनदॊळगॆ,
भक्तिज्ञान कर्मकॆ ओलिदु पॊळॆवुत तॊरुवनु गुणरूपक्रियॆगळनु ॥ २१ ॥

आव दॆहव कॊडलि, हरि मत्तावलॊकदॊलिडलि,
ता मत्तावदॆशदॊलिडलि, आवावस्थॆगळु बरलि,
ई विधदि जडचॆतनदॊळु परावरॆशन रूपगुणगळ भाविसुत,
सुज्ञान भकुतिय बॆडु कॊंडाडु ॥ २२ ॥

ऒंदरॊळगॊंदॊंदु बॆरदिहविंदिरॆशन रूपगळ–
मनबंद तॆरदलि चिंतिसिदकनुमान विनितिल्ल,
सिंधुराजनॊळंबरालय बंधिसलु,
प्रति तंतुगळॊळु उद–बिंदु व्यापिसिदंतॆ इरुतिप्पनु चराचरदि ॥ २३ ॥

ओंदु रूपदोळोंदवयवदोळोंदु रोमदोळोंदु देशदि,
पोंदि इप्पवजांडनंतानंत कोटिगळु,
हिंदे मार्कांडेय काणने,
ओंदु रूपदि सृष्टि प्रळयगळु इंदिरेशनोळेनिदच्चरि अप्रमेय सदा ॥ २४ ॥

ओंदनंतानंत रूपगळोंदे रूपदोळिहवु,
लोकगळोंदे रूपदि सृष्टि स्थिति मोदलाद व्यापार,
ओंदे कालदि माडि तिळिसदे संदणिसि कोंडिप्प जगदोळु,
नंदनंदन रणदोळिंद्रात्मजगे तोरिसने ॥ २५ ॥

श्रीरमेशन मूर्तिगळु नवनारिकुंजरदंते ऐकाकार तोर्पवु,
अवयवाह्वय अवयवगळल्लि,
बेरेबेर् कंगोळिसुव शरीरदोळु नाना प्रकार,
विकारशून्य विराटनेनिसुव पदुमजांडदोळु ॥ २६ ॥

वारिजभवांडदोळु लक्ष्मी नारसिंहन रूपगुणगळु,
वारिधियोळिह तेरगळंददि संदणिसि इहवु,
कारण–अंश–आवेश–व्याप्त–अवतार–कार्य–अव्यक्त–व्यक्तवु,
ईरैदु विभूति अंतर्यामि रूपगळु ॥ २७ ॥

मणिगळोळगिह सूत्रदंददि प्रणवपाद्यनु–
चेतनाचेतन जगत्तिनोळनुदिनदलाडुवनु सुखपूर्ण,
दणिविकेयु इवगिल्ल, बहु कारुणिक,
अनंतानंत जीवर गणदोळेकांशांश रूपदि निंतु नेमिसुव ॥ २८ ॥

जीव जीवर भेद, जड जड, जीव जड,
जडजीवरिंदलि श्रीवरनु अत्यंत भिन्न, विलक्षणनु,
लक्ष्मी मूवरिंदलि पद्मजांददि ता विलक्षणळेनिसुतिप्पळु,
सावधिक समशून्यळेंदरितीर्वरनु भजिसु ॥ २९ ॥

आदितेयरु तिळियदिह गुण वेदमानिगळेंदेनिप वाण्यादिगळु बल्लरु,
अवररियद गुणंगळनु वेध बल्लनु,
बोम्मनरियद अगाधगुणगळु लकुमि बल्लळु,
श्रीधनोब्बनुपास्य सद्गुणपूर्णहरियेंदु ॥ ३० ॥

इंतनंतानंत गुणगळ प्रांतगाणदे महलकुमि,
भगवंतगे आभरण–आयुध–अंबर–आलयगळागि स्वांतदलि नेलेगोळिसि,
परम दुरंतमहिमन दौत्यकर्म निरंतरदि माडुतलि,
तदधीनत्वयैदिहळु ॥ ३१ ॥

प्रळय जलधियोळुळ्ळ नावेयु होलबुगाणदे सुत्तुवंददि,
जलरुहेक्षणनमल गुणरूपगळ चिंतिसुत–
नेलेय गाणदे महलकुमि चंचलवनैदिहळु,
अल्प जीवरिगे अळवडुवदेनिवन महिमेगळी जगत्रयदि ॥ ३२ ॥

श्रीनिकेतन सात्वतांपति, ज्ञानगम्य गयासुरार्दन,
मौनिकुल सन्मान्य, मानद, मातुळध्वंसि,
दीनजन मंदार, मधुरिपु, प्राणद,
जगन्नाथ विठल ताने गतियेंदनुदिनदि नंबिदवर पोरेव ॥ ३३ ॥

॥ इति श्री पंचतन्मात्र संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ मातृका संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

पादमानि जयंतनॊळगे सुमॆधनामकनिप्प,
दक्षिण पाददंगुटदल्लि पवननु भारभृद्रूप,
कादुकॊंडिह टंकि तर मोदलाद नामदि,
संधिगळलीरैदु रूपदलिप्प संतत नडेदु नडेसुतलि ॥ १ ॥

कपिल चार्वांगादि रूपदि वपुगळॊळु,
हस्तगळ संधियॊळपरिमित कर्मगळ माडुतलिप्प दिनदिनदि,
कृपणवत्सल पार्श्वदॊळु परसुफलियेनिसुव,
गुद उपस्थदि विपुळ बलि भग, मनवेनिसि तुंदियॊळगिरुतिहनु ॥ २ ॥

ऐदु मॆलोंदधिक दळवुळ्ळैदु पद्मवु नाभि मूलदि,
ऐदु मूर्तिगळिहवु अनिरुद्धादि नामदलि,
ऐदिसुत गर्भवनु जीवरनादिकर्मप्रकृतिगुणगळ हादि तप्पलुगोडदे,
व्यापारगळ माडुतिह ॥ ३ ॥

नाभियलि षट्कॊणमंडलदी भविष्यद् ब्रह्मनॊळु,
मुक्ताभ श्रीप्रद्युम्न निप्पनु विबुधगणसॆव्य,
शॊभिसुव कौस्तुभवे मोदलादाभरणायुधगळिंद,
महाभयंकर पापपुरुषन शॊषिसुत नित्य ॥ ४ ॥

द्वादशार्कर मंडलवु मध्यॊदरदॊळु सुषुम्नदॊळगिहदु–
ऐदु रूपात्मकनु अरवत्तधिक मुन्नूरु–
ई दिवारात्रिगळ मानिगळाद दिविजर संतयिसुत,
निषाद रूपक दैत्यरनु संहरिप नित्यदलि ॥ ५ ॥

हृदयदोळगिहदष्टदळ कमलदरोळगे–
प्रादॆशनामक नुदित भास्करनंते तॊर्पनु बिंबनेंदेनिसि,
पदुम चक्र सुशंख सुगदांगद कटक मकुटांगुळीयक–
पदक कौस्तुभहार ग्रैवॆयादि भूषितनु ॥ ६ ॥

द्विदळ पद्मवु शॊभिपुदु कंठदलि,
मुख्यप्राण तन्नय सुदतियिंदॊडगूडि हंसॊपासनेय माळ्प,
उदकवन्नादिगळिगवकाशदनु तानागिद्दु,
उदानाभिधनु शब्दव नुडिदु नुडिसुव सर्वजीवरॊळु ॥ ७ ॥

नासिकदि नासत्यदस्ररु श्वासमानी प्राणभारति–
हंस धन्वंत्रिगळु अल्लल्लिप्परवरॊळगे,
भॆश भास्कररु अक्षियुगळकधीशरेनिपरु,
अवरोळगे लक्ष्मीशदधिवामनरु नीयामिसुतलिरुतिहरु ॥ ८ ॥

स्तंभरूपदलिप्प दक्षिण अंबकदि प्रद्युम्न,
गुणरूपंभ्रणियु तानागि इप्पळु,
वत्सरूपदलि पोंबसिर पदयॊग्य पवन,
त्रियंबकादि समस्त दिविज कदंबसॆवितनागि सर्व पदार्थगळ तॊर्प ॥ ९ ॥

नॆत्रगळलि वसिष्ठ–विश्वामित्र–भारद्वाज–गौतम–अत्रि–
आ जमदग्नि नामगळिंद करेसुतलि,
पत्रतापक शक्र सूर्य धरित्रि पर्जन्यादि सुररु,
जगत्रयॆशन भजिपरनुदिन परम भकुतियलि ॥ १० ॥

ज्यॊतियोळगिप्पनु कपिल पुरुहूतमुख दिक्पतिगळिंद समॆतनागि,
दक्षिणाक्षिय मुखदोळिह विश्व श्वॆतवर्ण चतुर्भुजनु,
संप्रीतियिंदलि स्थूल विषयव चॆतनरिगुंडुणिप–
जाग्रतेयित्तु नृगजास्य ॥ ११ ॥

नेलेसिहरु दिग्देवतेगळिक्करद कर्णंगळलि,
तीर्थंगळिगे मानिगळाद सुरनदि मुख्य निर्जररु–
बलद किवियलि इरुतिहरु, बांबोळेय जनक त्रिविक्रमनु–
निर्मलिनरनु माडुवनु ईपरि चिंतिसुव जनर ॥ १२ ॥

चित्तजेंद्ररु मनदोळिप्परु, कृत्तिवासनु अहंकारदि,
चित्तचेतनमानिगळु विहगेंद्र फणिपरोळु नित्यदलि नेलेगोंडु,
हत्तोंभत्तुमोग तैजसनु स्वप्नावस्थेयैदिसि,
जीवरनु प्रविविक्त भुकुवेनिप ॥ १३ ॥

ज्ञानमय तैजसनु हृदयस्थानवैदिसि–
प्राज्ञनेंबभिधानदिं करेसुत्त चित्सुखव्यक्तियने कोडुत,
आनतेष्टप्रदनु अनुसंधानवीयदे सुप्तियैदिसि,
ताने पुनरपि स्वप्न जाग्रतेयीव चेतनके ॥ १४ ॥

नालिगेयोळिह वरुण मत्स्य, अणुनालिगेयोळु उपेंद्रइंद्ररु,
तालु पर्जन्याख्य सूर्यनु अर्धगर्भनिह,
आलेयोळु वामन सुभामन, फालदोळु शिवकेशवनु,
सुकपोलदोळगे रतीशकामनु अल्लि प्रद्युम्न ॥ १५ ॥

रोमगळलि वसंत त्रिककुद्धाम,
मुखदोळगग्नि भार्गव, तामरसभव वासुदेवरु मस्तकदोळिहरु,
ई मनदोळिह विष्णु, शिखदोळुमामहेश्वर नारसिंह स्वामि–
तन्ननुदिनदि नेनेवरमृत्यु परिहरिप ॥ १६ ॥

मौळियल्लिह वासुदेवनु ऐळधिकनवजाति रूपव ताळि–
मुखदोळु श्रवणनयनाद्यवयवगळिगे आळरसु तानागि,
सतत सुलीलेगैयुतलिप्प सुखमय,
केळि केळिसि नोडि नोडिसि नुडिदु नुडिसुवनु ॥ १७ ॥

एरडधिकवेप्पत्तेनिप साविरद नाडिगे मुख्यवु ऐकोत्तर शतगळु,
अल्लिहवु नूरा ओंदु मूर्तिगळु,
अरिदु देहदि कलशनामक हरिगे कळेगळिवेंदु–
नैरंतरदि पूजिसुतिहरु परमादरदि भूसुररु ॥ १८ ॥

इदके कारणवेनिसुववु एरडधिक दश नाडिगळोळगे,
सुरनदिये मोदलादमल तीर्थगळिहवु करणदलि,
पदुमनाभनु केशवादि द्विदशरूपदलिप्पनल्लि,
अतिमृदुळवाद सुषुम्नदोळगेकात्मनेनिसुवनु ॥ १९ ॥

आम्नयप्रतिपाद्य श्रीप्रद्युम्न देवनु देहदोळगे–
सुषुम्नदीडापिंगळदि विश्वादि रूपदलि,
निर्मलात्मनु वाणि वायु चतुर्मुखरोळिद्दु,
अखिळ जीवर कर्मगुणवनुसरिसि नडेवनु विश्वव्यापकनु ॥ २० ॥

अब्दयन ऋतु मास पक्ष सुशब्ददिंदलि करेसुतलि,
नीलाब्दवर्णनिरुद्धनॆ मोदलादैदु रूपदलि हब्बिहनु सर्वत्रदलि,
करुणाब्धि नाल्वत्तैदु रूपदि,
लभ्यनागुवनी परि ध्येनिसुव भकुतरिगे ॥ २१ ॥

ऐदु रूपात्मकनु इप्पत्तैदु रूपदलिप्प,
मत्त्हदिनैदु तिथि, यिप्पत्तुनालकरिंद पेच्चिसलु–
ऐदुवदु अरवत्तधिक आरैदु दिवस,
आह्वयनोळगे मनतोय्दवगे तापत्रयद महदोषवेल्लिहदो ॥ २२ ॥

दिवस याम मूहूर्त घटिकाद्यवयवगळोळगिद्दु,
गंगाप्रवहदंददि कालनामक प्रवहिसुतलिप्प,
इवन गुणरूप क्रियंगळ निवहदोळु मुळुगाडुतलि भार्गवि–
सदानंदात्मळागिहळेल्लकालदलि ॥ २३ ॥

वॆदततिगळ मानि लक्ष्मी, धराधरन गुणरूपक्रियॆगळ–
आदिमध्यांतवनु काणदॆ मनदियॊचिसुत आदपॆने ईतनिगॆ पत्नि?,
कृपॊदधियु स्वीकरिसिदनु,
लॊकाधिपनु भिक्षुकन मनॆयौतनव कॊंबंते ॥ २४ ॥

कॊविदरु चित्तैसुवदु श्रीदॆवियॊळगिह निखिलगुण
तृण जीवरलि कल्पिसि युकुतियलि मत्तु क्रमदिंद,
दॆवदॆवकियिप्पळॆंदरिदा विरिंचन जननि,
यीतन आवकालकु अरियळंतव नरर पाडॆनु ॥ २५ ॥

क्षीर दधि नवनीत घृतदॊळु सौरभरसाह्वयनॆनिसि–
शांतीरमण ज्ञानॆच्छाक्रियाशक्तियॆंदॆंब ईरॆरडु नामदलि करॆसुत,
भाराती वाग्दॆवि वायु सरॊरुहासनरल्लि,
नॆलॆसिहरॆल्ल कालदलि ॥ २६ ॥

वसुगळॆंटु, नवप्रजॆशरु, श्वसनगणवैवत्तु,
ऐकादश दिवाकररु, अनितॆ रुद्ररु, अश्विनिगळॆरडु,
दशविहीन शताख्य ई सुमनसरॊळगॆ,
चतुरात्मनीयामिसुव ब्रह्मसमीरखगफणींद्ररॊळगिद्दु ॥ २७ ॥

तॊरुतिप्पनु चक्रदलि हिंकारनामक, शंखदलि प्रतिहार,
गदॆयलि निधन, पद्मदलिप्प प्रस्थान,
कारुणिकनुद्गीथ नामदि मारमणनैरूपगळ,
शंखारि मॊदलादायुधगळॊळु स्मरिसि धरिसुतिरु ॥ २८ ॥

तनुवॆ रथ, वागाभिमानियॆ गुणवॆनिसुवळु,
श्रॊत्रदॊळु रॊहिणि शशांकरु पाशपाणिगळु,
अश्ववॆंदॆनिसि इननु संज्ञा दॆवियरु, इहरनललॊचन,
सूतनॆनिसुव प्रणव पाद्य प्राणनामक रथिकनॆनिसुवनु ॥ २९ ॥

अमितमहिमनपारगुणगळ समितवर्णात्मक श्रुति स्मृति गमिसलापवे?
तदभिमानिगळेंदेनिसिकोंब कमल संभव भव सुरेंद्राद्यमररु–
अनुदिन तिळियलरियरु,
स्वमहिमेगळ आद्यंतमध्यगळरिव सर्वज्ञ ॥ ३० ॥

वित्तदेहागार दारापत्य मित्रादिगळोळगे,
हरि प्रत्यगात्मनु एंदेनिसि नेलेसिप्पनेंदरिदु,
नित्यदलि संतृप्ति बडिसुत उत्तमाधममध्यमर,
कृत कृत्यनागुन्मत्तनागदे भृत्यनानेंदु ॥ ३१ ॥

देवदेवेशन सुमूर्ति कळेवरगळोळगनवरत–
संभाविसुत–पूजिसुत–नोडुत सुखिसुतिरु बिडदे,
श्रीवर जगन्नाथ विठल ता ओलिदु कारुण्यदलि
भव नोव परिहरिसुवनु, प्रवितत पतित पावननु ॥ ३२ ॥

॥ इति श्री मातृका संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री वर्णप्रक्रिय संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

हरियॆ पंचाशद्वर्ण, सुस्वरवुदात्तानुदात्त प्रचय स्वरित संधि–
विसर्ग बिंदुगळॊळगॆ तद्वाच्य इरुव,
तन्नामरूपगळरितुपासने गैवरिळॆयॊळु सुररॆ सरि, नररल्ल,
अवराडुवुदॆ वॆदार्थ ॥ १ ॥

ईशनलि विज्ञान, भगवद्दासरलि सद्भक्ति, विषयनिराशॆ,
मिथ्यावाददलि प्रद्वॆष,
नित्यदलि ई समस्त प्राणिगळलि रमॆशनिहनॆंदरिदु,
अवरभिलाषॆगळ पूरयिसुवुदॆ महयज्ञॆ हरिपूजॆ ॥ २ ॥

त्रिदश ऎकात्मकनॆनिसि भूउदक शिखियॊळु हत्तु करणदि–
अधिपरॆनिसुव प्राणमुख्यादित्यरॊळु नॆलॆसि,
विदितनागिद्दनवरत निरवधिकमहिमनु सकल विषयव–
निधननामक संकरुषणाह्वयनु स्वीकरिप ॥ ३ ॥

दैहिक दैशिक कालिकत्रय गहन कर्मगळुंटु,
इदरॊळु विहित कर्मगळरितु निष्कामकनु नीनागि,
बृहतिनामक भारतीशन महितरूपव नॆनॆदु मनदलि,
अहरहर्भगवंतगर्पिसु परम भकुतियलि ॥ ४ ॥

मूरु विध कर्मगळॊळगॆ कंसारि भार्गव हयवदन,
संप्रॆरकनु तानागि नवरूपंगळनु धरिसि,
सूरि मानव दानवरॊळु विकारशून्यनु माडि माडिसि,
सारभॊक्तनु स्वीकरिसि कॊडुतिप्प जीवरिगॆ ॥ ५ ॥

अनळ पक्वव गैसिदन्नव अनळनोळु हॊमिसुव तॆरदंदनिमिषॆशनु–
माडि माडिसिदखिळ कर्मगळ मनवचन कायदलि तिळिदु,
अनुदिनदि कोडु शंकिसदे,
वृजिनार्दन सदा कैकॊंडु संतयिसुवनु तन्नवर ॥ ६ ॥

कुदुरे बालद कोनेय कूदलु तुदि विभागव माडि–
शतविधवदरॊळॊंदनु नूरु भागव माडलॆंतिहुदो,
विधि भवादि समस्त दिविजर मोदलु माडि–
तृणांत जीवरॊळधिक न्यूनते यिल्ल वॆंदिगु जीव परमाणु ॥ ७ ॥

जीवनंगुष्ठाग्रमूरुति, जीवनंगुटमात्र मूरुति,
जीवन प्रादॆश, जीवाकार मूर्तिगळु,
ऎवमादि अनंत रूपदि यावदवयवगळॊळु व्यापिसि काव–
करुणाळुगळ दॆवनु ई जगत्रयव ॥ ८ ॥

बिंब जीवांगुष्ठमात्रदि इंबुगॊंडिह सर्वरॊळु,
सूक्ष्मांबरदि हृत्कमलमध्य निवासियॆंदॆनिसि,
एंबरीतगे कॊविदरु विश्वंभरात्मक–प्राज्ञ,
भक्त कुटुंबि संतैसुवनु ई परि बल्ल भजकरनु ॥ ९ ॥

पुरुष नामक सर्वजीवरॊळिरुव दॆहाकार रूपदि,
करण नियामक हृषीकपनिंद्रियंगळलि,
तुरिय नामक विश्व, ता हन्नॆरडु बेरळुळिदुत्तमांगदि,
एरडधिक एप्पत्तु साविर नाडियोळगिप्प ॥ १० ॥

व्यापकनु तानागि जीव स्वरूप दॆहद ओळहोरगे निर्लेपनागिह–
जीवकृत कर्मगळनाचरिसि,
श्री पयॊजभवॆररिंद प्रदीपवर्ण स्वमूर्ति मध्यग ता पोळेव,
विश्वादिरूपदि सॊवे कैकोळुत ॥ ११ ॥

गरुड शेष भवादि नामव धरिसि पवन,
स्वरूपदेहदि करणनियामकनु तानागिप्प हरियंते,
सरसिजासन वाणि भारति भरतनिंदोडगूडि लिंगदि इरुतिहनु,
मिक्कादितेयरिगिल्लवास्थान ॥ १२ ॥

जीवनके तुषदंते लिंगवु सावकाशदि पोंदि सुत्तलु,
प्रावरण रूपदलि इप्पुदु भगवदिच्छेयलि,
केवल जडप्रकृतियु इदकधिदेवतेयु महलकुमि येनिपळु,
आ विरजेय स्नान परियंतरदि हत्तिहुदु ॥ १३ ॥

आरधिक दशकळेगळुळ्ळ शरीरवु अनिरुद्धगळ मध्यदि सेरि इप्पदु–
जीव परमाच्छादिकद्वयवु,
बारदंददि दानवरनतिदूरगैसुत श्रीजनार्दन,
मूरुगुणदोळगिप्पनेंदिगु त्रिवृतुयेंदेनिसि ॥१४ ॥

रुद्र मोदलादमररिगे अनिरुद्धदेहवे मनेयेनिसुवुदु,
इद्दु केलसव माडरु अल्लिंदित्त स्थूलदलि,
क्रुद्धखिल दिविजरु परस्परस्पर्धेयिंदलि द्वंद्वकर्म–
समृद्धिगळनाचरिसुवरु प्राणेशनाज्ञेयलि ॥ १५ ॥

महियोळगे सुक्षेत्र तीर्थवु तुहिन वरुष वसंतकालदि,
दहिक दैशिक कालिकत्रय धर्मकर्मगळ,
द्रुहिण मोदलादमररेल्लरु वहिसि गुणगळननुसरिसि,
सन्निहितरागिद्देल्लरोळु माडुवरु व्यापार ॥ १६ ॥

केश सासिरविध विभागव गैसलेनतनितिह सुषुम्नवु–
आ शिरांतदि व्यापिसिहदी देहमध्यदलि,
आ सुषुम्नके वज्रक–आर्य–प्रकाशिनी–वैद्युतिगळिहवु
प्रदेशदलि पश्चिमके उत्तर पूर्व दक्षिणके ॥ १७ ॥

आ नळिनभव नाडियोळगे त्रिकोण चक्रवु इप्पुदु,
अल्लि कृशानुमंडलमध्यगनु संकरुषणाह्वयनु,
हीन पापात्मक पुरुषन दहानगैसुत दिनदिनदि-
विज्ञानमय श्रीवासुदेवन ऐदिसुव करुणि ॥ १८ ॥

मध्यनाडिय मध्यदलि, हृत्पद्ममूलदि मूलपति पदपद्ममूलदलि-
इप्प पवनन पादमूलदलि-
होंदिकोंडिह जीवलिंगनिरुद्ध देहविशिष्टनागि,
कपर्दि मोदलादमरेल्लरु कादुकोंडिहरु ॥ १९ ॥

नाळमध्यदलिप्प हृत्कीलालजदोळिप्पष्टदळदि-
कुलालचक्रद तेरदि चरिसुत हंसनामकनु,
कालकालगळल्लि येण्देसे पालकर कैसेवेगोळुत कृपाळु,
अवरभिलाषेगळ पूरैसि कोडुतिप्प ॥ २० ॥

वासवानुज रेणुकात्मज दाशरथि वृजिनार्दनमलजलाशयालय-
हयवदन श्रीकपिल नरसिंह,
ई सुरूपदि अवरवर संतोष बडिसुत नित्यसुखमय,
वासवागिह हृत्कमलदोळु बिंबनेंदेनिसि ॥ २१ ॥

सुरपनालयकैदिदरे मनवेरगुवुदु सत्पुण्यमार्गदि,
बरलु वह्निय मनेगे निद्रालस्यहसितृषेयु,
तरणितनयनिकेतनदि संभरित कोपाटोप तोरुवुदु,
अरविदूरनु निर्‌ऋतियलिरे पापगळ माळ्प ॥ २२ ॥

वरुणनल्लि विनोद हास्यवु, मरुतनोळु गमनागमन,
हिमकर धनाधिपरल्लि धर्मद बुद्धि जनिसुवदु,
हरन मंदिरदल्लि गो धन धरणि कन्यादानगळु-
ओंदरघळिगे तडेयदले कोडुतिह चित्त पुट्टुवुदु ॥ २३ ॥

हृदयदोळगे विरक्ति, कॆसरकोदगे स्वप्न, सुषुप्ति लिंगदि,
मधुह कर्णिकेयल्लि बरे जाग्रतेयु पुट्टवुदु,
सुदरुशन मोदलाद अष्टा युधव पिडिदु–
दिशाधिपतिगळ सदनदलि संचरिसुतीपरि बुद्धिगळ कोडुव ॥ २४ ॥

सूत्रनामक प्राणपति गायत्रि संप्रतिपाद्यनागी गात्रदोळु नेलेसिरलु,
तिळियदे कंडकंडल्लि धात्रियोळु संचरिसि–
पुत्र कळत्र सहितनुदिनदि,
तीर्थ क्षेत्र यात्रेय माडिदेवु एंदेनुत हिग्गुवरु ॥ २५ ॥

नारसिंह स्वरूपदोळगे शरीरनामदि करेसुवनु,
हदिनारु कळेगळु उळ्ळ लिंगदि पुरुषनामकनु,
तॊरुवनु अनिरुद्धदोळु शांतीरमण अनिरुद्धरूपदि,
प्रॆरिसुव प्रद्युम्न स्थूल कळेवरदोळिद्दु ॥ २६ ॥

मोदलु त्वक्चर्मगळु मांसवु रुधिर मॆदॊ मज्जवु–
अस्थिगळिदरोळगे ऐकॊन पंचाशन्मरुद्गणवु,
निधन हिंकारादि सामग अदर नामदि करेसुत,
ओंभत्तधिक नाल्वत्तेनिप रूपदि धातुगळोळिप्प ॥ २७ ॥

सप्तधातुगळोळहोरगे संतप्तलोहगताग्नियंददि,
सप्तसामगनिप्प अन्न मयादि कॊशदोळु,
लिप्तनागदे तत्तदाह्वय क्लुप्तभॊगव कोडुत,
स्वप्न सुषुप्ति जाग्रतेयीव तैजस प्राज्ञ विश्वाख्य ॥ २८ ॥

तीविकॊंडिहवल्लि मज्ज कळेवरदि अंगुळिय पर्वद ठाविनलि–
मुन्नूरु अरवत्तेनिप त्रिस्थळदि,
साविरद एंभत्तु रूपव कॊविदरु पॆळुवरु दॆहदि,
दॆवतेगळोडगूडि क्रीडिसुवनु रमारमण ॥ २९ ॥

कीट पॆशस्कारि नेनविलि कीट भावव तॊरॆदु,
तद्वत् खॊटरूपवनैदियाडुव तेरदि,
भकुतियलि कैटभारिय ध्यानदिंद भवाटवियनति श्रीघ्रदिंदलि दाटि,
सारूप्यवनु ऐदुवरल्पजीविगळु ॥ ३० ॥

ई परी दॆहदॊळु भगवद्रूपगळ मरॆयदलॆ मनदि पदॊपदॆ भकुतियलि
स्मरिसुतलिप्प भकुतरना,
गॊपति जगन्नाथ विठल समीपगनु तानागि संतत,
सापरॊक्षिय माडि पॊरॆवनु एल्ल कालदलि ॥ ३१ ॥

॥ इति वर्णप्रक्रिय संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री सर्वप्रतीक संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

आव परबोम्मनतिविमलांगाव बद्धरु एंदेनिप–
राजीव भव मोदलादमररनुदिनदि हरि पदव सेविपरिगनुकूलरल्लदे–
तावु इवरनु केडिसबल्लरे,
श्रीविलासास्पदन दासरिगुंटे अपजयवु ॥ १ ॥

श्रीदनंघ्रिसरोजयुगळ ऐकादशस्थानात्मदोळगिट्टु–
आदरदि संतुतिसि हिग्गुवरिगी नवग्रहवु,
आदितेयरु संतताधिव्याधिगळ परिहरिसुतवरन कादुकोंडिहरु,
एल्लरोंदागीश नाज्ञेयलि ॥ २ ॥

मेदिनिय मेलुळ्ळ गोष्पादोदकगळेल्लमल तीर्थवु,
पाद पाद्रि धरातळवे सुक्षेत्र,
जीवगण श्रीदन प्रतिमेगळु, अवरुंबोदनवे नैवेद्य,
नित्यदि हादि नडेवुदे नर्तनगळेंदरितवने योगि ॥ ३ ॥

सर्वदेशवु पुण्यदेशवु, सर्वकालवु पर्वकालवु,
सर्वजीवरु दान पात्ररु मूरु लोकदोळु,
सर्वमातुगळेल्ल मंत्रवु, सर्वकेलसगळेल्ल पूजेयु,
शर्ववंद्यन विमल मूर्ति ध्यानवुळ्ळवगे ॥ ४ ॥

देवखात तटाक वापि सरोवरगळभिमानि सुररु,
कळेवरदोळगिह रोम कूपगळोळगे तुंबिहरु,
आ वियद्गंगादि नदिगळु भाविसुवदेप्पत्तेरडेनिप साविर सुनाडिगळोळगे,
प्रवहिसुतलिहवेंदु ॥ ५ ॥

मूरु कोटिय मेले शोभिप ईरधिक एप्पत्तु साविर, ।
मारुतांतर्यामि माधव प्रतिदिवसदल्लि,
ता रमिसुतिहनेंदु तिळिदिह सूरिगळु देवतेगळु,
अवर शरीरवे सुक्षेत्र, अवरर्चनेये हरिपूजे ॥ ६ ॥

श्रीवरनिगभिषेक वेंदरिदी वसुंधरेयोळगे बल्लवरु,
आव जलदलि मिंदरेयु गंगादि तीर्थगळु ता वोलिदु बंदल्लि–
नेलेगोंडीवरखिळार्थगळनु,
अरियद जीवरमर तरंगिणिय नैदिदरु फलवेनु ॥ ७ ॥

नदनदिगळिळेयोळगे परिववु उदधि परियंतरदि,
तरुवायदलि रमिसुववल्लि तन्मयवागि तोरदले,
विधिनिषेधगळाचरिसुवरु बुधरु,
भगवद्रूप सर्वत्रदलि चिंतने बरलु त्यजिसुवरखिळ कर्मगळ ॥ ८ ॥

कलिये मोदलादखिळ दानवरोळगे, ब्रह्म भवादि देवर्कळु नियामकरागि–
हरियाज्ञेयलि अवरवर कलुष कर्मव माडि माडिसि,
जलरुहेक्षणगर्पिसुत,
निश्चल सुभक्ति ज्ञान पूर्णरु सुखिपरवरोळगे ॥ ९ ॥

आव जीवरोळिद्दरेनु, इन्नाव कर्मव माडलेनु,
इन्नाव गुणरूपगळुपासने माडलेनवरु,
कावनय्यन परम कारुण्याव लोकन बलदि चरिसुव देवतेगळनु,
मुट्टलापवे पापकर्मगळु ॥ १० ॥

पतियोडने मनबंद तेरदलि प्रतिदिवसदलि रमिसि मोदिसि,
सुतर पडेदिळेयोळु जितेंद्रियळेंदु करेसुवळु,
कृतिपति कथामृत सुभोजनरत महात्मरिगे,
इतर  दोष प्रततिगळु संबंधिसुववेनच्युतन दासरिगे ॥ ११ ॥

सूसिबह नदियोळगे तन्न सहासतोरुवेनेनुत,
जलकेदुरीसिदरे कैसोतु मुळुगुव,
हरिय बिट्टवनु क्लेश वैदुव, अनादियलि सार्वेश क्लुप्तिय माडिदुद–
बिट्टाशेयिंदलि अन्यराराधिसुव मानवनु ॥ १२ ॥

नानुनन्नदु एंब जडमति मानवनु दिनदिनदि माडुव–
स्नानजप देवार्चनेये मोदलाद कर्मगळ–
दानवरु शेळेदोय्वरल्लदे श्रीनिवासनु स्वीकरिस,
मद्दाने पक्वकपित्थफल भक्षिसिद वोलहुदु ॥ १३ ॥

धात्रियोळगुळ्ळखिळ तीर्थ क्षेत्र चरिसिदरेनु,
पात्रापात्रवरितन्नादि दानव माडि फलवेनु,
गात्र निर्मलनागि मंत्र स्तोत्र पठिसिदरेनु,
हरि सर्वत्रगतनेंदरियदे ता कर्तृ एंबुवनु ॥ १४ ॥

कंड नीरोळु मुळुगि देहव दंडिसिद फलवेनु,
दंड कमंडलंगळ धरिसि यतियेंदेनिसि फलवेनु,
अंडजाधिपनंसगन पद पुंडरीकदि मनवहर्निशि,
बंडुणियवोलिरिसि सुखबडदिप्प मानवनु ॥ १५ ॥

वेदशास्त्रपुराण कथेगळ ओदि पेळिदरेनु,
सकल निषेध कर्मगळ तोरेदु सत्कर्मगळ माडेनु,
ओदनंगळ जरिदु श्वास निरोधगैसिदरेनु,
काम क्रोधवळियदे नानु नन्नदु येंब मानवनु ॥ १६ ॥

ऐनु केळिदरेनु नोडिदरेनु ओदिदरेनु–
पेळिदरेनु पाडिदरेनु माडिदरेनु दिनदिनदि,
श्रीनिवासन जन्मकर्म सदानुरागदि नेनेदु,
तत्तत्स्थानदलि तद्रूप तन्नामकन स्मरिसदव ॥ १७ ॥

बुद्धिविद्याबलदि पेळिद अशुद्धकाव्यविदल्ल,
तत्व सुपद्धतिगळनु तिळिद मानवनल्ल बुधरिंद,
मध्व वल्लभ ताने हृदयदोळिद्दु नुडिदंददलि नुडिदेनु,
अपद्धगळ नोडदले किविगोट्टालिपुदु बुधरु ॥ १८ ॥

कब्बिनोळगिह रस विदंतनिगब्बु बल्लुदे,
भाग्य यौवन मब्बिनलि मैमरेदवगे हरिसुचरितामृतवु लभ्यवागदु,
हरि पदाब्जदि हब्बिदति सद्भक्तिरस-
वुंडुब्बि कोब्बि सुखाब्धियोळगाडुववगल्लदले ॥ १९ ॥

खगवरध्वजनंघ्रि भकुतिय बगेयनरियद मानवरिगिदु,
ओगटिनंददि तोरुतिप्पुदु एल्ल कालदलि,
त्रिगुण वर्जितनमल गुणगळ पोगळि हिग्गुव भागवतरिगे,
मिगे भकुति विज्ञान सुखवित्तवर रक्षिपुदु ॥ २० ॥

परम तत्वरहस्यविदु भूसुररु केळुवुदु सादरदि,
निष्ठुरिगळिगे मूढरिगे पंडितमानि पिशुनरिगे-
अरसिकरिगिदु पेळ्वुदल्ल,
अनवरत भगवत्पादयुगळांबुरुह मधुकरनेनिसुवरिगिदनरुपु मोददलि ॥ २१ ॥

लोकवार्तेयिदल्ल, परलोकैकनाथन वार्ते, केळ्वरे,
काकुमनुजरिगिदु समर्पकवागि सोगसुवदे?,
कोकनद परिमळवु षट्पद स्वीकरिसुवंददलि,
जलचर भेक बल्लुदे इदर रस हरि भकुतगल्लदले ॥ २२ ॥

स्वप्रयोजन रहित, सकलेष्टप्रदायक,
सर्वगुण पूर्णप्रमेय, जरामरणवर्जित, विगतक्लेश,
विप्रतम, विश्वात्म घृणि, सूर्यप्रकाशानंत महिम,
घृतप्रतीकाराधितांघ्रि सरोज सुरराज ॥ २३ ॥

वनचराद्रि धराधरने जय, मनुज मृगवर वॆष जय,
वामन त्रिविक्रम दॆव जय, भृगुराम भूम जय,
जनकजावल्लभने जय, रुग्मिणि मनॊरथ, सिद्धिदायक,
जिनविमॊहक, कलिविदारण, जय जयारमण ॥ २४ ॥

सच्चिदानंदात्म, ब्रह्म करार्चितांघ्रि सरॊज,
सुमनसप्रॊच्च, सन्मंगळद, मध्वांतः करणरूढ,
अच्युत, जगन्नाथ विठल, निच्च नॆच्चिद जनर बिड,
काङ्चिच्चनुंडारण्यदॊळु गॊ गॊपरनु कायिदा ॥ २५ ॥

॥ इति श्री सर्वप्रतीक संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री स्थावरजंगम संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

पादुकेय कंटक सिकत मोदलादवनुदिन बाधिसुववॆ?
ऎकादशॆंद्रियगळलि बिडदे हृषीकपन मूर्ति सादरदि नेनेववनु,
ऎनपराधगळ माडिदरू सरिये,
निरॊधगैसवु मॊक्षमार्गके दुरितराशिगळु ॥ १ ॥

हगलु नंदादीपदंददि निगमवॆद्यन पूजिसुत–
कैमुगिदु नाल्करोळॊंदु पुरुषार्थवनु बॆडदले,
जगदुदर कोट्टदनु भुंजिसु, मगमडदि प्राणॆंद्रियात्मादिगळु–
भगवदधीनवॆंदडिगडिगे नेनेवुतिरु ॥ २ ॥

अस्वतंत्रनु जीव, हरि सर्वस्वतंत्रनु, नित्यसुखमय,
निःस्वबद्ध, अल्पज्ञ शक्त, सदुःख, निर्विण्ण,
ह्रस्वदॆहि सनाथजीवनु, विश्वव्यापक कर्तृ,
ब्रह्म सरस्वतीशाद्यमरनुत हरियॆंदु कोंडाडु ॥ ३ ॥

मत्ते विश्वाद्यॆंटु रूपॊंभत्तरिंदलि पेच्चिसलु,
एप्पत्तेरडु रूपगळहवु ओंदोंदे साहस्र,
पृथ्पृथकु नाडिगळॊळगे सर्वोत्तमन तिळियॆंदु भीष्मनु बित्तरिसिदनु–
धर्मतनयगे शांति पर्वदलि ॥ ४ ॥

एंटु प्रकृतिगळॊळगे विश्वाद्यॆंटु रूपदलिद्दु,
भक्तर कंटकव परिहरिसुतलि पालिसुव प्रतिदिनदि,
नॆंटनंददि एडबिडदे वैकुंठरमणनु–
तन्नवर निष्कंटक सुमार्गदलि नडेसुव, दुर्जनर बडिव ॥ ५ ॥

स्वरमणनु शक्त्यादि रूपदि करणमानिगळोळगे नेलेसिद्दु,
अरविदूरनु स्थूल विषयगळुंडुणिप नित्य,
अरियदले नानुंबेनेंबुव निरयगळुंबुवनु,
निश्चय मरळि मरळि भवाटविय संचरिसि बळलुवनु ॥ ६ ॥

सुरुचि रुचिर सुगंध सुचियेंदिरुतिहनु षड्रसगळोळु.
हन्नेरडु रूपदलिप्प श्री भू दुर्गेयर सहित,
स्वरमणनु एप्पत्तेरडु साविर समीरन रूपदोळगिद्दु,
उरुपराक्रम कर्तृ एनिसुव नाडिगळोळगिद्दु ॥ ७ ॥

निन्न सर्वत्रदलि नेनेववरन्य कर्मव माडिदरु सरि,
पुण्य कर्मगळेनिसुववु संदेहविनितिल्ल,
निन्न स्मरिसदे स्नान जप होमान्न वस्त्र गजाश्व-
भूधन धान्य मोदलादखिळ धर्मव माडि फलवेनु ॥ ८ ॥

इष्ट भोग्य पदार्थदोळु शिपिविष्टनामदि-
सर्वजीवर तुष्टि बडिसुव दिनदिनदि संतुष्ट तानागि,
कोष्टदोळु नेलेसिद्दु रसमय, पुष्टियैदिसुतिंद्रियगळोळु,
प्रेष्टनागिद्देल्ल विषयगळुंब तिळिसदले ॥ ९ ॥

कारणाह्वय ज्ञान कर्म प्रेरकनु तानागि,
क्रियेगळ तोरुवनु कर्मेंद्रियाधिपरोळगे नेलेसिद्दु,
मूरु गुणमय द्रव्यग तदाकार तन्नामदलि करेसुव,
तोरिकोळ्ळदे जनर मोहिप मोहकल्पकनु ॥ १० ॥

द्रव्यनेनिसुव भूतमात्रदोळव्ययनु, कर्मेंद्रियगळोळु भव्य,
सत्क्रियनेनिप ज्ञानेंद्रियगळोळगिद्दु,
स्तव्यकारकनेनिसि सुखमय, सेव्य सेव्यकनेनिसि जगदोळु,
हव्यवाहननरणि योळगिप्पंते इरुतिप्प ॥ ११ ॥

मनवे मोदलादिंद्रियगळोळगनिलदॆवनु–
शुचियॆनिसिकॊंडनवरत नेलॆसिप्प शुचिषद्धोतनॆंदॆनिसि,
तनुविनोळगिप्पनु सदा वामन हृषीकॆशाख्यरूपदलि,
अनुभवके तंदीव विषयज सुखव जीवरिगॆ ॥ १२ ॥

प्रॆरक प्रॆर्यरोळु प्रॆर्य प्रॆरकनु तानागि,
हरि निर्वैरदिंद प्रवर्तिसुव तन्नामरूपदलि,
तॊरिकोळ्ळदे सर्वरोळु भागीरथी जनकनु सकल व्यापारगळ–
ता माडि माडिसि नॊडि नगुतिप्प ॥ १३ ॥

हरियॆ मुख्यनियामकनु एंदरिदु, पुण्यापुण्य–हरुषाहरुष–
लाभालाभ सुखदुःखादि द्वंद्वगळ,
निरुत अवरंघ्रिगॆ समर्पिसि, नरक भू स्वर्गाप वर्गदि,
करण नियामकन सर्वत्रदलि नेनॆवुतिरु ॥ १४ ॥

माणवक तत्फलगळनुसंधानविल्लदे कर्मगळ स्वॆच्छानुसारदि–
माडि मॊदिसुवंते प्रतिदिनदि,
ज़ानपूर्वक विधिनिषॆधगळॆनु नॊडदे माडु,
कर्म प्रधान पुरुषॆशनलि भकुतिय माडु कॊंडाडु ॥ १५ ॥

हानि वृद्धि जयापजयगळु ऐनु कोट्टद भुंजिसुत,
लक्ष्मीनिवासन करुणवने संपादिसनुदिनदि,
ज़ान सुखमय तन्नवर परमानुरागदि संतैप,
दॆहानुबंधिगळंते ओळहोरगिद्दु करुणालु ॥ १६ ॥

आ परम सकलॆंद्रियगळोळु व्यापकनु तानागि,
विषयव ता परिग्रहिसुवनु तिळिसदे सर्वजीवरोळु,
पापरहित पुराणपुरुष समीपदलि नेलॆसिद्दु,
नाना रूपधारक तॊरिकोळ्ळदे कर्मगळ माळ्प ॥ १७ ॥

खेचररु भूचररु वारिनिशाचररोळिद्द्वर–
कर्मगळाचरिसुवनु घनमहिम परमाल्पनोपादि,
गोचरिसनु बहु प्रकारालोचनेय माडिदरु मनसिगे,
कीचकारिप्रीय, कविजनगेय, महराय ॥ १८ ॥

ओंदे गोत्र प्रवर संध्यावंदनेगळनु माडि,
प्रांतके तंदे तनयरु बेरे तम्मय पेसरुगोंबंते,
ओंदे देहदोळिद्दु निंद्यानिंद्य कर्मव माडि माडिसि,
इंदिरेशनु सर्वजीवरोळीश नेनिसुवनु ॥ १९ ॥

किट्टगट्टिदलोह पावक सुट्टविंगड माडुवंते,
घरट्टव्रीहिगळोळिप्प तंडुल कडेगे तेगेवंते,
विठला एंदोम्मे मैमरे दट्टहासदि करेये,
दुरितगळट्टळिय बिडिसेवन तन्नोळगिट्ट सलहुवनु ॥ २० ॥

जलधियोळु स्वेच्छानुसारदि जलचरप्राणिगळु,
तत्तत्–स्थलगळलि संतोषबडुतलि संचरिसुवंते,
नळिननाभनोळब्जभव मुप्पोळलुरिग मैगण्ण मोदलाद्हलवु जीवरगणवु,
वर्तिसुतिहदु नित्यदलि ॥ २१ ॥

वासुदेवनु ओळहोरगे अवकाशदनु तानागि,
बिंब प्रकाशिसुव तद्रूप तन्नामदलि सर्वत्र,
ई समन्वयवेंदेनिप सदुपासनव गैववनु,
मोक्षान्वेषिगळोळुत्तमनु जीवन्मुक्तनवनियोळु ॥ २२ ॥

भोग्यवस्तुगळोळगे योग्यायोग्य रसगळनरितु,
योग्यायोग्यरलि नेलेसिप्प हरिगे समर्पिसनुदिनदि,
भाग्य बडतन बरलु हिग्गदे, कुग्गि सोरगदे,
सद्भकुति वैराग्यगळने माडु नी निर्भाग्यनेनिसदले ॥ २३ ॥

स्थलजलाद्रिगळल्लि जनिसुव फलसुपुष्पज गंधरस–
श्री तुलसि मोदलादखिळ पूजासाधन पदार्थ,
हलवु बगेयिंदर्पिसुत बांबोळेय जनकगे नित्यनित्यदि तिळिवुदिदु,
व्यतिरेक पूजेगळेंदु कोविदरु ॥ २४ ॥

श्रीकरन सर्वत्रदलि अवलोकिसुत गुणरूपक्रिय–
व्यतिरेक तिळियदलन्वयिसु बिंबनलि मरेयदले,
स्वीकरिसुवनु करुणदिंद, निराकरिसदे कृपाळु,
भक्तर शोकगळ परिहरिसि सुखवित्तनवरत पोरेव ॥ २५ ॥

इनितु व्यतिरेकान्वयगळेंदेनिप पूजाविधिगळने तिळिदु,
अनिमिषेशन तृप्तिबडिसुतलिरु निरंतरदि,
घनमहिम कैकोंडु स्थितिमृति जनुमगळ परिहरिसि,
सेवक जनरोळिट्टानंदबडिसुव भक्तवत्सलनु ॥ २६ ॥

जलजनाभनिगेरडु प्रतिमेगळिळेयोळगे जडचेतनात्मक,
चलदोळिर्बगे स्त्रीपुरुष भेददलि,
जडदोळगे तिळिवुदाहितप्रतिमे, सहजाचलगळेंदिर्बगे प्रतीकदि,
ललित पंचत्रय सुगोळकवरितु भजिसुतिरु ॥ २७ ॥

वारिजासन वायुवींद्र उमारमण नाकेश स्मरहंकारिकप्राणादिगळु–
पुरुषर कळेवरदि,
तोरिकोळदनिरुद्ध दोषविदूर नारायणन रूप,
शरीरमानिगळागि भजिसुत सुखव कोडुतिहरु ॥ २८ ॥

सिरि सरस्वति भारती सौपरणि वारुणि पार्वतीमुखरिरुतिहरु–
स्त्रीयरोळगभिमानिगळु तावेनिसि,
अरुणवर्ण निभांग श्रीसंकरुषण प्रद्युम्न रूपगळ,
इरुळु हगलु उपासनव गैवुतले मोदिपरु ॥ २९ ॥

कृतप्रतीकदि टंकि भार्गव हुतवहानिल मुख्य दिविजरु–
तुतिसिकॊळुतभिमानिगळु तावागि नेलेसिद्दु,
प्रति दिवस श्रीतुलसि गंधाक्षते कुसुम फल दीप पंचामृतदि,
पूजिप भकुतरिगे कॊडुतिहनु पुरुषार्थ ॥ ३० ॥

नगगळभिमानिगळेनिप सुररुगळु, सहजाचलगळिगे मानिगळेनिसि,
श्रीवासुदॆवन पूजिसुतलिहरु,
स्वगतभॆदविवर्जितन नाल्बगे प्रतीकदि तिळिदु पूजिसे,
विगत संसाराब्धि दाटिसि मुक्तरनु माळ्प ॥ ३१ ॥

आव क्षॆत्रकॆ पॊदरॆनु? इन्नाव तीर्थदि मुळगलॆनु?
इन्नाव जपतप हॊमदानव माडि फलवॆनु,
श्रीवर जगन्नाथ विठलन ई विधदि जंगमस्थावर जीवरॊळु–
परिपूर्णनॆंदरियदिह मानवनु ॥ ३२ ॥

॥ इति श्री स्थावरजंगम संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री नाडीप्रकरण संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

वासुदॆवनु प्राणमुख तत्वॆशरिंदलि सॆवे कैकॊळुती–
शरीरदॊळिप्प मूवत्तारु साहस्र–
ई सुनाडिगळॊळगे श्रीभूमी समॆत विहारगैव,
परॆशनमल सुमूर्तिगळ चिंतिसुत हिग्गुतिरु ॥ १ ॥

चरणगळॊळिह नाडिगळु हन्नेरडुसाविर,
मध्यदॆहदॊळिरुतिहवु हदिनाल्कु, बाहुगळॊळगे ईरेरडु,
शिरदॊळारुसाहस्र चिंतिसि, इरळुहगलभिमानि दिविजर नरितु–
उपासनेगैवरिळेयॊळु स्वर्गवासिगळु ॥ २ ॥

बृहतिनामक वासुदॆवनु वहिसि स्त्रीरूप,
दॊषविरहित एप्पत्तेरडु साविर नाडिगळॊळगिद्दु,
द्रुहिण मॊदलादमरगण सन्महिम,
सर्वप्राणिगळ महमहिम संतैसुवनु संतत परम करुणाळु ॥ ३ ॥

नूरु वरुषके दिवस मूवत्तारुसाविर वहवु,
नाडि शरीरदॊळगिनितिहवु एंदरितु, ऒंदु दिवसदलि सूरिगळ सत्करिसिदव,
प्रतिवारदलि दंपतिगळर्चने ता रचिसिदव,
सत्य संशयविल्लवेंदेंदु ॥ ४ ॥

चतुरविंशति तत्त्वगळु, तत्पतिगळेनिसुव ब्रह्ममुख दॆवतेगळनुदिन,
प्रतिप्रति नाडिगळॊळिरुतिद्दु,
चतुरदश लॊकदॊळु जीव प्रततिगळ संरक्षिसुव शाश्वतन,
तत्तत्स्थानदलि नॊडुतले मॊदिपरु ॥ ५ ॥

सत्यसंकल्पनु सदा एप्पत्तेरडु साहस्रदोळु–
मूवत्तुनालकुलक्षदैवत्तारु साहस्र,
चित्प्रकृतियोडगूडि परमनु नित्यमंगळमूर्ति,
भक्तर तेत्तिगनु तानागि सर्वत्रदलि संतैप ॥ ६ ॥

मणिगळोळगिह सूत्रदंददि प्रणवपाद्यनु,
सर्वचेतन गणदोळिद्दनवरत संतैसुवनु तन्नवर,
प्रणत कामद भक्त चिंतामणि, चिदानंदैक देहनु,
अणुमहद्गतनल्परोपादियलि नेलेसिप्प ॥ ७ ॥

ई सुषुम्नाद्यखिळ नाडी कोश नाभीमूलदलि,
वृषणासदन मध्यदलि इप्पदु तुंदिनामदलि,
आ सरोजासन मुखरु मूलेशनानंदादि सुगुणोपासनेय गैवुतलि,
देहगळोळगे इरुतिहरु ॥ ८ ॥

सूरिगळु चित्तैसुवुदु, भागीरथिये मोदलाद तीर्थगळु,
ईरधिक एप्पत्तु साविर नाडिगळोळिहवु,
ई रहस्यवनल्प जनरिगे तोरि पेळदे,
नाडिनदियोळु धीररनुदिन मज्जनव माडुतले सुखिसुवरु ॥ ९ ॥

तिळिवुदी देहदोळगिह एडबलद नाडिगळोळगे दिविजरु,
जलजसंभव वायु वाण्यादिगळु बलदल्लि,
एलरुणिग विहगेंद्र चळिवेट्टळिय षण्महिशियरु–
वारुणि कुलिशधर कामादिगळु एडभागदोळिहरु ॥ १० ॥

इक्कलदोळिह नाडियोळु देवर्कळिंदोडनाडुतलि पोंबक्किदेरनु,
जीवरधिकारानु सारदलि तक्क साधनव माडि माडिसुत–
अक्करदि संतैप भक्तर,
दक्कगोडनसुरर्गे सत्पुण्यगळनपहरिप ॥ ११ ॥

तुंदिविडिदाशिरद परियंतोंदु व्यापिसि इहुदु,
तावरकंदनिहनदरोळगे अदकीरैदु शाखेगळु,
ओंदधिक दश करणदोळु संबंधगैदिहवल्लि,
रविशशि सिंधुनासत्यादिगळु नेलेगोंडिहरु सतत ॥ १२ ॥

पोक्कळडिविडिदोंदे नाडियु सुक्कदले धाराळरूपदि,
सिक्किहुदु ई देहदोळगे सुषुम्ननामदलि,
रक्कसरनोळ पोगगोडदे दश दिक्किनोळगे समीर देवनु,
लेक्किसदे मत्तोब्बरनु संचरिप देहदोळु ॥ १३ ॥

इनितु नाडीशाखेगळु तनुविनोळगिहवेंदरिदु,
ऐकात्मनु द्विसप्तति साविरात्मकनागि नाडियोळु,
वनितेयिंदोडगूडि नारायण दिवारात्रिगळळी परि,
वनज जांडदोळखिळजीवरोळिद्दु मोहिसुव ॥ १४ ॥

दिनदिनदि वर्धिसुव कुमुदाप्तन मयूखद सोबग गतलोचन विलोकिसि,
मोडबडबल्लने निरंतरदि,
कुनरगी सुकथामृतद भोजनदसुख दोरकुवदे,
लक्ष्मी मनोहरन सद्गुणव कीर्तिप भकुतगल्लदले ॥ १५ ॥

ई तनुविनोळगिहवु ओतप्रोतरूपदि नाडिगळु,
पुरुहूतमुखरल्लिहरु तम्मिंदधिक रोडगूडि,
भीतिगोळिसुत दानवर संघातनामक हरिय गुण,
संप्रीतियलि सदुपासनेय गैवुतले मोदिपरु ॥ १६ ॥

जलटकुक्कुट खेट जीवर कळेवरगळोळिद्दु,
काणिसि कोळदे तत्तद्रूप नामगळिंद करेसुतलि,
जलरुहेक्षण विविध कर्मगळनुदिनदि माडि,
तत्तत्फलगळुण्णदे संचरिसुवनु नित्यसुखपूर्ण ॥ १७ ॥

तिळिदुपासने गैवुतीपरि मलिननंतिरु दुर्जनर कंगळिगे गोचिरिसदे,
विपश्चितरोडने गर्विसदे,
मळेबिसिलुहसितृषि जयाजय खळर निंद्यानिंद्य भयगळिगळुकदले,
मद्दानेयंददि चरिसु धरेयोळगे ॥ १८ ॥

काननग्रामस्थ सर्व प्राणिगळु प्रतिदिवसदलि,
ऍनेनु माडुव कर्मगळु हरिपूजे येंदरिदु दॆनिसुत सद्भक्तियलि,
पवमानवंदित दॆवांतरात्मक श्रीनिवासनिगर्पिसुत,
मोदिसुत नलिवुतिरु ॥ १९ ॥

नोकनीयनु लोकदोळु शुनि सूकरादिगळोळगे नेलेसिद्दु,
ऍकमॆवाद्वितिय बहुरूपाह्वयगळिंद,
ता करेसुतोळगिद्दु तिळिसदे, श्रीकमलभवमुख्य सकल दिवौकसगणाराध्य,
कैकोंडनवरत पोरेव ॥ २० ॥

इनितुपासनेगैवुतिह सज्जनरु, संसारदलि प्रतिप्रति दिनगळलि,
ऍनेनु माडुवुदेल्ल हरिपूजे एनिसिकोंबुदु, सत्यवु,
ई मातिनलि संशय बडुव नरनल्पनु सुनिश्चय,
बाह्यकर्मव माडि फलवेनु ॥ २१ ॥

भोग्यभोक्तृगळोळगे हरि ता भोग्य भोक्तनु एनिसि,
योग्या योग्यरसगळ दॆवदानवगणके उणिसुवनु,
भाग्यनिधि भक्तरिगे सद्वैराग्य भक्ति ज्ञानवीव,
अयोग्यरिगे द्वेषादिगळ तन्नल्लि कोडुतिप्प ॥ २२ ॥

ई चतुर्दशभुवनदोळगे चराचरात्मक जीवरल्लि,
विरोचनात्मज वंचकनु नेलेसिद्दु दिनदिनदि,
याचकनु येंदेनिसिकोंब, मरीचिदमन, सुहंसरूप,
निषेचकाह्वयनागि जनरभिलाषे पूरैप ॥ २३ ॥

अन्नदन्नादन्नमय स्वयमन्न, ब्रह्माद्यखिळ चॆतनकॆ,
अन्नकल्पकनाहननिरुद्धादि रूपदलि,
अन्यरनपॆक्षिसदॆ, गुणकारुण्यसागर सृष्टिसुवनु हिरण्यगर्भनॊळिद्दु,
पालिसुवनु जगत्रयव ॥ २४ ॥

त्रिपद त्रिदशाध्यक्ष त्रिस्थ त्रिपथगामिनिपित त्रिविक्रम,
कृपणवत्सल कुवलयदळश्याम निस्सीम,
अपरिमितचित्सुखगुणात्मक, वपुष वैकुंठादि लॊकाधिप, त्रयीमय,
तन्नवर निष्कपटदिं पॊरॆव ॥ २५ ॥

लवण मिश्रित जलवु तॊर्पदु लवणदॊपादियलि जिह्वॆगॆ,
विवरगैसलु शक्यवागुवदॆनो नॊळ्परिगॆ,
स्ववशव्यापी यॆनिसि लक्ष्मीधव चराचरदॊळगॆ तुंबिहनु,
अविदितन साकल्यबल्लवरारु सुररॊळगॆ ॥ २६ ॥

व्याप्यनंददि सर्वजीवरॊळिप्प चिन्मय,
घॊरभव संतप्यमानरु भजिसॆ भकुतियळिंदलिहपरदि प्राप्यनागुवनु,
अवरवगुणगळॊप्पुगॊंबनु, भक्तवत्सल,
तप्पिसुव जन्मादिदॊषगळवरिगनवरत ॥ २७ ॥

हलवु बगॆयलि हरिय मनदलि ओलिसि निल्लिसि,
ऎनु माडुव कॆलसगळु अवनंघ्रि पूजॆगळॆंदु नॆनॆवुतिरु,
हलधरानुज तानॆ सर्व स्थलगळलि नॆलॆसिद्दु,
निश्चंचल भकुति सुज्ञान भाग्यव कॊट्टु संतैप ॥ २८ ॥

दॊषगंधविदूर, नाना वॆषधारक, ई जगत्रय पॊषक,
पुरातन पुरुष, पुरुहूत मुख विनुत,
शॆषवर परियंक शयन, विभीषणप्रिय, विजय सख,
संतॊष बडिसुव जनरिगिष्टार्थगळ पूरैसि ॥ २९ ॥

श्रीमहीसॆवितपदांबुज, भूम सद्भक्तैक लभ्य,
पितामहाद्यमरा सुरार्चित पाद पंकॆज,
वामवामन राम, संसारामयौषध, हॆ मम कुलस्वामि संतैसॆनलु,
बंदॊदगुवनु करुणाळु ॥ ३० ॥

दनुजदिविजरॊळिद्दु अवरवरनुसरिसि कर्मगळ माळ्पनु,
जननमरणाद्यखिळ दॊषविदूर एम्मॊडने जनिसुवनु-जीविसुव-
संरक्षणॆय माडुव एल्ल कालदि,
धनव काय्दिह सर्पनंतनिमित्त बांधवनु ॥ ३१ ॥

बिसरुहाप्तागसदि तानुदयिसलु वृक्षंगळ नॆळलु पसरिसुवविळॆयॊळु-
अस्तमिसलल्लल्ले लीनहवु,
श्वसनमुख्य अमरांतरात्मकन ओषदॊळिरुतिप्पवु ई जगत्रय,
बसिरॊळिंबिट्टॆल्ल कर्मव तॊर्प नॊळ्परिगॆ ॥ ३२ ॥

त्रिभुवनैकाराध्य लक्ष्मी सुभुजयुगळालंगितांग, स्वभु,
सुखात्म सुवर्णवर्ण सुपर्णवरवहन,
अभयदानंतार्कशशि सन्निभ, निरंजन,
नित्यदलि तनगभिनमिसुवरिगीव सर्वार्थगळ तडॆयदलॆ ॥ ३३ ॥

कविगळिंदलि तिळिदु प्रातः सवन मध्यंदिनवु सायम सवनगळ,
वसुरुद्रादित्यरॊळु राजिसुव पवननॊळु-
कृति जय सुमायाधवन मूर्तित्रयव चिंतिसि,
दिवसवॆंबाहुतिगळिंदर्चिसुत सुखिसुतिरु ॥ ३४ ॥

चतुरविंशत्यब्द वसुदॆवतॆगळॊळु प्रद्युम्ननिप्पनु,
चतुरचत्वारिंशतिगळलि संकरुषणाख्य,
हुतवहाक्षनॊळिहनु मायपतियु हदिनारधिक द्वात्रिंशति-
वरुषगळलिप्पनादित्यनॊळु सितकाय ॥ ३५ ॥

षोडशोत्तरशत वरुषदलि, षोडशोत्तरशत सुरूपदि,
क्रीडिसुव वसुरुद्रादित्यरोळु सतिसहित,
व्रीडविल्लदे भजिप भक्तर पीडिसुव दुरितौघगळ दूरोडिसुत,
बळियलि बिडदे नेलेसिप्प भयहारि ॥ ३६ ॥

मूरधिक एंभत्तु सहस्रैनूर इप्पत्तेनिपरूपदि,
तोरुतिप्प दिवानिशाधिपरोळगे नित्यदलि,
भारती प्राणरोळगिद्दु निवारिसुत भक्तर दुरित,
हिंकार-निधन, प्रथमरूपदि पितृगळने पोरेव ॥ ३७ ॥

बुद्धिपूर्वक उत्तमोत्तम शुद्ध ऊर्णांबरव पंकदोळद्दि तेगेयलु,
लेपवागुवदे परीक्षिसलु,
पद्मनाभनु सर्वजीवरोळिद्दरेनु गुणत्रयगळिं बद्धनागुवनेनो,
नित्यसुखात्म चिन्मयनु ॥ ३८ ॥

सकल दोषविदूर, शशि पावक सहस्रानंतसूर्य प्रकर सन्निभगात्र,
लकुमिकळत्र सुरमित्र ॥
विखनसांडदोळिप्प ब्रह्माद्यखिळ चेतनगणके,
ताने सखनेनिसिकोंडु अकुटिलात्मकनिप्पनवरंते ॥ ३९ ॥

देशभेदगळल्लि इप्पाकाशदोपादियलि,
चेतन राशियोळु नेलेसिप्पनु, अव्यवधानदलि निरुत,
श्रीसहित सर्वत्रदि निरवाकाश कोडुवंददलि कोडुत,
निराशेयलि, सर्वांतरात्मक शोभिसुव सुखद ॥ ४० ॥

श्रीविरिंचाद्यमरगण संसेवितांघ्रिसरोज,
ई जड जीवराशिगळोळहोरगे नेलेसिद्दु नित्यदलि,
सावकाशनु एनिसि, तन्न कळेवरदोळिंबिट्टु सलहुव,
देव देवकीरमण, दानवहरण जितमरण ॥ ४१ ॥

मास ओंदके प्रतिदिवसदलि श्वासगळु अहवु,
अष्ट चत्वारिंशति सहस्राधिकारु सुलक्षसंख्येयलि,
हंसनामक हरिय षोडश ई शताब्ददि भजिसे ओलिव,
दयासमुद्र कुचेलगोलिदंददलि दिनदिनदि ॥ ४२ ॥

स्थूलदेहदोळिद्दु वरुषके ऐळधिक एप्पत्तु लक्षद मेले-
एप्पत्तारुसाविर श्वासजपगळनु गाळिदेवनु करुणदलि-
ईरेळुलोकदोळुळ्ळ चेतन जालदोळु माडुवनु,
त्रिजगद्व्याप्त परमाप्त ॥ ४३ ॥

ईरेरडु देहगळोळगिद्दु समीरदेवनु श्वासजप नानूरधिकवागिप्प-
एंभत्तारुसाहस्र ता रचिसुवनु दिवस ओंदके-
मूरुविध जीवरोळगिद्दु,
खरारि करुणाबलवदेंतुटो पवनरायनोळु ॥ ४४ ॥

श्रीधव जगन्नाथ विठल ता दयदि वदनदोळु नुडिदोपादियलि,
ना नुडिदेनल्लदे केळि बुध जनरु,
साधुलिंगप्रदर्शकरु निषेधगैसिदरेनहुदु,
एन्नपराधवेनिदरोळगे पेळ्वुदु, तिळिदु कोविदरु ॥ ४५ ॥

॥ इति श्री नाडीप्रकरण संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री नामस्मरण संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

मक्कळाडिसुवाग, मडदियोळक्करदि नगुवाग,
हय पल्लक्कि गज मोदलाद वाहनगळेरि मेरेवाग,
बिक्कुवाग, आकळिसुतलि देवक्कितनयन स्मरिसुतिह नर,
सिक्क यमदूतरिगे आवावल्लि नोडिदरु ॥ १ ॥

सरितुप्रवहगळल्लि, दिव्यांबरदि, पत्रादियलि, हरुषामरुष–
विस्मृतियिंदलागलि ओम्मे बाय्देरेदु हरि हरी हरियेंब–
एरडक्षर नुडिदमात्रदलि,
दुरितगळिरदे पोपवु तूलराशियोळनल पोक्कंते ॥ २ ॥

मलगुवागलि, ऐळुवागलि, कुळितु माताडुतलि, मनेयोळु केलसगळ माडुतलि,
मैदोळेवाग मेलुवाग,
कलुषदूरन सकल ठाविलि तिळिये, तत्तन्नामरूपव बळियलिप्पनु,
ओंदरक्षण बिट्टगलनवर ॥ ३ ॥

आव कुलदवनादडेनु, इन्नाव देशदोळिद्दडेनु,
इन्नाव कर्मव माडलेनु, इन्नाव कालदलि,
श्रीवरन सर्वत्रदलि संभाविसुत पूजिसुत मोदिप–
कोविदरिगुंटेनो भय दुःखादि दोषगळु ॥ ४ ॥

वासुदेवन गुणसमुद्रदोळीसबल्लव,
भवसमुद्रायासविल्लदे दाटुवनु शीघ्रदलि जगदोळगे,
बेसरदे दुर्विषयगळ अभिलाषेयलि बळलुवव,
नाना क्लेषगळननुभविप भक्तिसुमार्ग काणदले ॥ ५ ॥

स्नान जप दॆवार्चनॆयु, व्याख्यान भारत मुख महॊपपुराण कथॆगळ–
पॆळि कॆळिदरॆनु दिनदिनदि,
ज्ञान कर्मॆंद्रियगळिंदॆनॆनु माडुव कर्मगळु,
लक्ष्मीनिवासन पूजॆयॆंदर्पिसद मानवनु ॥ ६ ॥

दॆवगंगॆयॊळुळ्ळवगॆ दुरितावळिगळुंटॆ विचारिसॆ,
पावुगळ भयवुंटॆ विहगाधिपन मंदिरदि,
जीवकर्तृत्ववनु मरॆदु, परावरॆशनॆ कर्तृ ऎंदरिदु,
आव कर्मव माडिदरु लॆपिसवु कर्मगळु ॥ ७ ॥

ऐनु माडुव पुण्य पापगळाने माडुवेनॆंबुवाधम,
हीनकर्मके पात्रना पुण्यक्के हरियॆंब मानवनु मध्यमनु,
द्वंद्वके श्रीनिवासने कर्तृवॆंदु सदानुरागदि–
नेनॆदु सुखिसुवरॆ नरॊत्तमरु ॥ ८ ॥

ई उपासनॆगैवरिळॆयॊळु दॆवतॆगळल्लदले नररल्ल,
आवबगॆयिंदादरवरर्चनॆयु हरिपूजॆ,
कॆवल प्रतिमॆगळॆनिपरु रमाविनॊदिगॆ,
इवरनुग्रहवॆ वरानुग्रहवॆनिसुवुदु मुक्ति यॊग्यरिगॆ ॥ ९ ॥

तनुवे नानॆंबुवनु सतिसुत मने धनादिगळॆन्नदॆंबुव,
द्युनदि मोदलादुदकगळे सत्तीर्थवॆंबुवनु,
अनल लॊहादि प्रतीकार्चनवे दॆवरपूजे,
सुजनर मनुजरहुदॆंबुवनु गॊखरनॆनिप बुधरिंद ॥ १० ॥

अनलसॊमार्कॆंदु तारावनि सुरापग मुख्यतीर्थगळु,
अनिल गगनमनादि इंद्रियगळिगॆ अभिमानि ऎनिप सुररु,
विपश्चितर सन्मनदि भजिसदॆ यिप्परन पावनव माडरु,
तम्म पूजॆय माडिदरु सरियॆ ॥ ११ ॥

केंड काणदे मुट्टिदरु सरि कंडु मुट्टलु दहिसदिप्पुदे,
पुंडरीकदळायताक्षन विमल पदपद्म–
बंडुणिगळेंदेनिप भक्तर हिंडुनोडिद मात्रदलि,
तनुदिंडु गेडहिद नरन पावनमाळ्पराक्षणदि ॥ १२ ॥

ई निमित्त पुनः पुनः सुज्ञानिगळ सहवास माडु,
कुमानवर कूडाडदिरु लौकिकके मरुळागि,
वैनतेयांसगन सर्व स्थानदलि तन्नामरूपव धेनिसुत संचरिसु,
इतरालोचनेय बिट्टु ॥ १३ ॥

ई नळिनजांडदोळु सर्व प्राणिगळोळगिद्दनवरत–
विज्ञानमय व्यापारगळ माडुवनु तिळिसदले,
ऐनु काणदे सकल कर्मगळाने माडुवेनेंब नरनु कुयोनि ऐदुव,
कर्तृ हरि एंदवने मुक्तनह ॥ १४ ॥

कलिमलापहळेनिसुतिह बांबोळेयोळगे संचरिसि बदकुव–
जलचरप्राणिगळु बल्लवे तीर्थमहिमेयनु,
हलवु बगेयलि हरिय करुणाबलदि बल्लिदराद–
ब्रह्मानिलविपेशाद्यमररु अरियरनंतनमलगुण ॥ १५ ॥

श्रीलकुमिवल्लभनु हृत्कीलालजदोळिद्दखिळ चेतन जालवनु मोहिसुव–
त्रिगुणदि बद्धरनु माडि,
स्थूलकर्मदि रतर माडि स्वलीलेगळ तिळिसदले भवदि–
कुलालचक्रद तेरदि तिरुगिसुतिहनु मानवर ॥ १६ ॥

वेदशास्त्र विचारगैदु निषेध कर्मव तोरेदु–
नित्यदि साधु कर्मव माळ्परिगे स्वर्गादिसुखवीव ॥
ऐदिसुव पापिगळ निरयव, खेदमोद मनुष्यरिगे,
दुर्वादिगळिगंधंतमदि महदुःखगळनुणिप ॥ १७ ॥

निर्गुणोपासकगे गुणसंसर्गदोषगळीयदले,
अपवर्गदलि सुखवित्तु पालिसुवनु कृपासांद्र,
दुर्गमनु एंदेनिप त्रैविध्यर्गे, त्रिगुणातीत,
संतत स्वर्गभूनरकदलि संचारवने माडिसुव ॥ १८ ॥

मूवरोळगिद्दरु सरिये सुखनोवुगळु संबंधवागवु,
पावनके पावन परात्पर पूर्णसुखवनधि,
ई वनरुहभवांडदोळु स्वकळेवर तदाकारमाडि,
परावरेश चराचरात्मक लोकगळ पोरेव ॥ १९ ॥

ई निमित्त निरंतर स्वाधीनकर्तृत्ववनु मरेदु,
ऐनेनु माडुवदेल्ल हरि ओळहोरगे नेलेसिद्दु ताने माडुवनेंदु–
मद्दानेयंददि संचरिसु,
पवमानवंदित ओंदरक्षण बिट्टगल निन्न ॥ २० ॥

हलवु कर्मव माडि देहव बळलिसदे दिनदिनदि,
हृदयकमलसदनदि विराजिसुव हरिमूर्तियने भजिसु,
तिळियदी पूजाप्रकरणव फलसुपुष्पाग्रोदक श्री तुलसिगळनर्पिसलु,
ओप्पनु वासुदेव सदा ॥ २१ ॥

धरणि नारायणनु, उदकदि तुरियनामक,
अग्नियोळु संकरुषणाह्वय, वायुगनु प्रद्युम्न,
अनिरुद्ध इरुतिहनु आकाशदोळु, मूरेरडु रूपव धरिसि भूतग करेसुवनु,
तन्नामरूपदि प्रजर संतैप ॥ २२ ॥

घनगतनु तानागि नारायणनु तन्नामदलि करेसुत,
वनद गर्भोदकदि नेलेसिह वासुदेवाख्य,
ध्वनिसिडिलु संकरुषणनु, मिंचिनोळु श्रीप्रद्युम्न,
वृष्टिय हनिगळोळगनिरुद्धनिप्पनु वरुषनेंदेनिसि ॥ २३ ॥

गृहकुटुंब धनादिगळ सन्नहगळुळ्ळवरागि,
विहिताविहित धर्म सुकर्मगळ तिळियदले नित्यदलि,
अहर मैथुन निद्रेगोळगागिहरु सर्वप्राणिगळु,
हृद्गुहनिवासियनरियदले भवदोळगे बळलुवरु ॥ २४ ॥

जडजसंभव खग फणिप केंजेडेयरिंदोडगूडि राजिसुत–
अडवियोळगिप्पनु सदा गोजाद्रिजनु एनिसि,
उडुपनिंदभिवृद्धिगळ ता कोडुत०
पक्षि मृगाहिगळ कारोडल कावनु, तत्तदाह्वयनागि जीवरन ॥ २५ ॥

अपरिमितसन्महिम नरहरि विपिनदोळु संतैसुवनु,
काश्यपियनळिदव स्थलगळलि, सर्वत्र केशवनु,
खपति गगनदि, जलगळलि महशफरनामक,
भक्तरनु निष्कपटदिंदलि सलहुवनु करुणालु दिनदिनदि ॥ २६ ॥

कारणांतर्यामि स्थूलवतार व्याप्तांशादिरूपके–
सार शुभप्रविविक्तनंद स्थूल निस्सार,
आरु रसगळनु अर्पिसल्परिगी रहस्यव पेळदे,
सदापारमहिमन रूपगुणगळ नेनेदु सुखिसुतिरु ॥ २७ ॥

जलगतोडुपनमल बिंबव मेलुवेवेंबति हरुषदिंदलि–
जलचरप्राणिगळु नित्यदि यत्नगैवंते,
हलधरानुज भोग्यरसगळ नेलेयनरियदे पूजिसुत,
हंबलिसुवरु पुरुषार्थगळ सत्कुलजरावेंदु ॥ २८ ॥

देव ऋषि गंधर्व पितृ नर देव मानव दनुज गोज खरावि–
मोदलादखिळ चेतन भोग्यरसगळनु,
यावदवयवगळोळगिद्दु रमावरनु स्वीकरिप,
यावज्जीवगणके स्वयोग्यरसगळनीवनेंदेंदु ॥ २९ ॥

ओरटु बुद्धिय बिट्टु लौकिक हरटेगळ नीडाडि,
कांचन परटिलोष्टादिगळु समवेंदरिदु नित्यदलि,
पुरुटगर्भांडोदरनु सत्पुरुषनेंदेनिसेल्लरोळगिद्दु,
उरुट कर्मव माळ्पनेंदडिगडिगे नेनेवुतिरु ॥ ३० ॥

भूतळदि जनरुगळु मर्मक मातुगळनाडिदरे सहिसदे,
घातिसुवरतिकोपदिंदलि हेच्चरिप तेरदि,
मातुळांतक जार हे नवनीत चोरने एनलु,
तन्न निकेतनदोळिट्टवर संतैसुवनु करुणाळु ॥ ३१ ॥

हरिकथामृतसारविदु संतरु सदा चित्तैसुवुदु,
निष्ठुरिगळिगे पिशुनरिगयोग्यरिगिदनु पेळदले,
निरुत सद्भक्तियलि भगवच्चेरितेगळ कोंडाडि हिग्गुव परम भगवद्दासरिगे,
तिळिसुवुदु ई रहस्य ॥ ३२ ॥

सत्यसंकल्पनु सदा ऐनित्तदे पुरुषार्थवेंदरिदु,
अत्यधिक संतोषदिं नेनेवुत्त भुंजिपुदु,
नित्य सुख संपूर्ण परम सुहृत्तम जगन्नाथ विठल,
बत्तिसि भवांबुधिय चित्सुखव्यक्ति कोडुतिप्प ॥ ३३ ॥

॥ इति श्री नामस्मरण संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री पितृगण संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

कृतिरमण प्रद्युम्न वसुदॆवतॆगळाहंकारत्रयदोळु–
चतुरविंशति रूपदिंदलि भॊज्यनॆनिसुवनु,
हुतवहाक्षांतर्गत जयापतियु तानॆ मूरधिक त्रिंशति सुरूपदि–
भॊक्तृ एनिसुव भॊक्तृगळोळिद्दु ॥ १ ॥

आरधिक मूवत्तु रूपदि वारिजाप्तनोळिरुतिहनु–
मायारमण श्रीवासुदॆवनु कालनामदलि,
मूरुविध पितृगळोळु वसु त्रिपुरारि आदित्यगनिरुद्धनु,
तॊरिकोळ्ळदे कर्तृ कर्म क्रियनॆनिसिकोंब ॥ २ ॥

स्ववश नारायणनु ता षण्णवतिनामदि करॆसुतलि,
वसुशिव दिवाकर कर्तृ कर्म क्रियॆगळोळगिद्दु,
नॆवनविल्लदे नित्यदलि तन्नवरु माडुव सॆवे कैकोंडु,
अवर पितृगळिगीवनंतानंत सुखगळनु ॥ ३ ॥

तंतु पटदंददलि लक्ष्मीकांत पंचात्मकनॆनिसि,
वसु कंतुहर रवि कर्तृगळोळिद्दु,
अनवरत तन्न चिंतिसुव संतरनु गुरु मध्वांतरात्मक संतयिसुवनु,
संततखिळार्थगळ पालिसि इहपरंगळलि ॥ ४ ॥

तंदे ताय्गळ प्रीतिगॊसुग निंद्यकर्मव तोरॆदु–
विहितगळॊंदु मीरदे सांगकर्मगळनाचरिसुववरु,
वंदनीयरागिळॆयोळगे दैनंदिनदि दैशिक दैहिक सुखदिंद बाळ्वरु,
बहु दिवसदलि कीर्तियुतरागि ॥ ५ ॥

अंशि अंशांतर्गतत्रय हंस वाहन मुख्यदिविजर असंशयदि तिळिदु,
अंतरात्मक श्रीजनार्दनन संस्मरणे पूर्वकदि,
षडधिक त्रिंशतित्रयरूपवरितु विपांसगन पूजिसुवरु,
अवरे कृतार्थरेनिसुवरु ॥ ६ ॥

मूरुवरेसाविरद मॆलरेनूरैदु रूपदि जनार्दन,
सूरिगळु माडुव समाराधनेगे विघ्नगळु बारदंते बहुप्रकार-
खरारि कापाडुवनु,
सर्व शरीरगळॊळिद्दवरवर पेसरिंद करेसुतलि ॥ ७ ॥

जयजय जयाकांत-दत्तात्रय-कपिल-महिदास-भक्तप्रिय-
पुरातन पुरुष-पूर्णानंद-मानघन-
हयवदन-हरि-हंस-लॊकत्रय विलक्षण-
निखिळ जगदाश्रय-निरामय, दयदि संतैसेंदु प्रार्थिपुदु ॥ ८ ॥

षण्णवतियेंबक्षरॆळ्यनु षण्णवति नामदलि करेसुत,
तन्नवरु सद्भक्ति पूर्वकदिंद माडुतिह पुण्यकर्मव स्वीकरिसि,
कारुण्यसागर सलहुवनु,
ब्रह्मण्यदेव भवाब्धिपॊत बहुप्रकारदलि ॥ ९ ॥

दॆहगळ कॊडुववनु अवरवरहरगळ कोडदिहने,
सुमनस महित मंगळचरित सद्गुणभरितननवरत,
अहिक पारत्रिक सुखप्रद, वहिसि बेन्निलि बेट्टव-
अमृतव द्रुहिण मोदलादवरिगुणिसिद मुरिदनहितरन ॥ १० ॥

द्रुहिण मोदलादमररिगे सन्महित, मायारमण,
तानॆ स्वहनेनिसि संतृप्तिबडिसुव सर्वकालदलि,
प्रहित संकरुषणनु पितृगळिगहरनेनिप स्वधाख्यरूपदि,
महिज फलतृण पेसरिनलि प्रद्युम्न अनिरुद्ध ॥ ११ ॥

अन्ननेनिसुव नृपशुगळिगे हिरण्यगर्भांडदोळु,
संतत तन्ननीपरियिंदुपासने गैव भक्तरन–
बन्नबडिसदे भवसमुद्र महोन्नतिय दाटिसि,
चतुर्विध अन्नमयनात्म प्रदर्शन सुखवनीव हरि ॥ १२ ॥

मनवचनकायगळ देशेयिंदनुदिनदि बिडदाचरिसुतिप्प–
अनुचितोचित कर्मगळ सद्भक्तिपूर्वकदि–
अनिळदेवनोळिप्प नारायणगिदन्नवु एंदु कृष्णार्पणवेनुत कोडु,
स्वीकरिसि संतैप करुणालु ॥ १३ ॥

ऐळु विध अन्न प्रकरणव केळि कोविदरास्यदिंदलि,
आलसव माडदले अनिरुद्धादि रूपगळ कालकालदि नेनेदु पूजिसु–
स्थूलमतिगळिगिदनु पेळदे,
श्रीलकुमिवल्लभने अन्नादन्न अन्नदनु ॥ १४ ॥

एंदरिदु सप्तान्नगळ दैनंदिनदि मरेयदे सदा गोविंदगर्पिसु–
निर्भयदि महयज्ञविदुयेंदु,
इंदिरेशनु स्वीकरिसि दयदिंद बेडिसिकोळदे तवकदि तंदु कोडुवनु,
परम मंगळ तन्न दासरिगे ॥ १५ ॥

सूजि करदलि पिडिदु समरव ना जयिसुवेनु एंब नरनंते,
ई जगत्तिनोळुळ्ळ अज्ञानिगळु नित्यदलि,
श्रीजगत्पति चरणयुगळ सरोज भक्तिज्ञान पूर्वक पूजिसदे,
धर्मार्थकामव बयसि बळलुवरु ॥ १६ ॥

शकटभंजन, सकल जीवर निकटगनु तानागि लोकके प्रकटनागदे–
सकल कर्मव माडि माडिसुत,
अकुटिलात्मक भकुत जनरिगे सुखदनेनिसुव सर्वकालदि,
अकटकट ईतन महामहिमेगळिगेनेंबे ॥ १७ ॥

श्रीलकुमिवल्लभनु वैकुंठालयदि,
प्रणव प्रकृति कीलालजासन मुख्य चॊतनरॊळगे नेलेसिद्दु,
मूलकारण अंशिनामदि लीलेगैसुत तॊरिकॊळ्ळदे,
पालिनॊळु घृतविद्दतेरदंतिप्प त्रिस्थळदि ॥ १८ ॥

मूरुयुगदलि मूलरूपनु सूरिगळ संतैसि,
दितिज कुमारकर संहरिसि धर्मवनुळुहबेकेंदु,
कारुणिक भूमियॊळु निजपरिवारसहितवतरिसि–
बहुविध तॊरिदनु नरवत्प्रवृत्तिय, सकल चॊतनके ॥ १९ ॥

कारणाह्वय प्रकृतियॊळगिद्दारधिक हदिनेंटु तत्त्वव तारचिसि,
तद्रूप तन्नामंगळने धरिसि,
नीरज भवांडवनु निर्मिसि, कारुणिक कार्याख्य रूपदि तॊरुवनु,
सहजाहिताचलगळलि प्रतिदिनदि ॥ २० ॥

जीवरंतर्यामि अंशि, कळॆवरगळॊळगिंद्रियगळलि–
ता विहारव गैवुतनुदिन अंशनामदलि,
ई विषयगळनुंडु सुखमय ईव सुख संसार दुःखव,
दॆव मानव दानवरिगविरत सुधामसख ॥ २१ ॥

दॆशदॆशव सुत्ति दॆहायासगॊळिसदे, काम्यकर्मदुराशेगॊळगागदले,
ब्रह्माद्यखिळ चॊतनरु–
भू सलिल पावक समीराकाश मोदलादखिळ तत्त्व
परॆशगिवधिष्ठानवेंदरितर्चिसनवरत ॥ २२ ॥

एरडु विधदलि लॊकदॊळु जीवरुगळिप्परु संतत,
क्षराक्षर–विलिंग सलिंग–सृज्यासृज्य भॆददलि,
करेसुवदु जडप्रकृति प्रणवाक्षर महदणुकालनामदि, ।
हरिसहित भॆदगळ पंचक स्मरिसुसर्वत्र ॥ २३ ॥

जीवजीवर भॆद, जडजड, जीवजडगळ भॆद,
परमनु जीवजड सुविलक्षणनु, एंदरिदु नित्यदलि,
ई विरिंचांडदोळु एल्ला ठाविनलि तिळिदैदु भॆद,
कळॆवरदोळरितच्युतन पद वैदु शीघ्रदलि ॥ २४ ॥

आदियल्लि क्षराक्षराख्यद्वॆध, अक्षरदोळु रमामधुसूदनरु,
क्षरगळोळु प्रकृति प्रणवकालगळु–
वॆधमुख्य तृणांत जीवर भॆदगळनरिती रहस्यव बॊधिसदे मंदरिगे,
सर्वत्रदलि चिंतिपुदु ॥ २५ ॥

दीपदिं दीपगळु पोरमट्टापणालयगळ तिमिरगळ ता परिहर गैसि–
तद्गत पदार्थ तॊर्पंते,
सौपरणि वरवहनु ता बहु रूपनामदि एल्ल कडेयलि व्यापिसिद्दु,
यथॆष्ट महिमेय तॊर्प तिळिसदले ॥ २६ ॥

नळिनमित्रगे इंद्रधनु प्रति फलिसुवंते,
जगत्रयवु कंगोळिपदनुपाधियलि प्रतिबिंबाह्वयदि हरिगे,
तिळिये त्रिककुद्धामनतिमंगळ सुरूपव सर्व ठाविलि,
पोळेव हृदयके प्रतिदिवस प्रह्लादपोषकनु ॥ २७ ॥

रसविशॆषदोळतिविमल सित वसन तॊयिसि अग्नियोळगिडे,
पसरिसुवदु प्रकाश नसगुंददले सर्वत्र,
त्रिशिरदूषण वैरि भक्ति सुरसदि तॊय्द महात्मरनु,
बाधिसवु भवदोळगिद्दरेयु सरि दुरितराशिगळु ॥ २८ ॥

वारिनिधियोळगुळ्ळखिळ नदिगळु बॆरॆबॆरे निरंतरदि–
विहारगैयुत परम मॊददलिप्प तेरदंते,
मूरु गुणगळ मानियेनिसुव श्रीरमारूपगळु हरियलि तॊरितिप्पवु,
सर्वकालदि समरहितवेनिसि ॥ २९ ॥

कोकनदसखनुदय घोकालोकनके सोगसदिरे, भास्कर ता कळंकने?,
ई कृतीपति जगन्नाथनिरे स्वीकरिसि सुख बडलरियद–
अविवेकिगळु निंदिसिदोरेनहुदु,
ई कवित्वव केळि सुख बडदिहरे कोविदरु ॥ ३० ॥

चेतनाचेतनगळलि गुरु मातरिश्वांतर्गत जगन्नाथ विठल–
निरंतरदि व्यापिसि तिळिसिकोळ्ळदले–
कातरव पुट्टिसि विषयदलि, यातुधानर मोहिसुव,
निर्भीत नित्यानंदमय निर्दोष निरवद्य ॥ ३१ ॥

॥ इति श्री पितृगण संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री श्वास संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

भारतीशनु घळिगेयोळु मुन्नूर अरवत्तु सुर जपगळ ता रचिसुवनु–
सर्वजीवरोळिद्दु बेसरदे,
कारुणिक अवरवर साधन पूरयिसि भू स्वर्ग नरकव सेरिसुव,
सर्वज्ञ सकलेष्टप्रदायकनु ॥ १ ॥

तासिगोंभैनूरु श्वासोच्च्वासगळ नडेसुतलि चेतन राशियोलु–
हगलिरुळु जागृतनागि नित्यदलि,
ई सुमनसोत्तंस लेशायास विल्लदे पोषिसुत–
मूलेशनंघ्रि सरोज मूलदलिप्प काणिसदे ॥ २ ॥

अरिवुदोंद्यामदोळु श्वासगळेरडु साविरदेळनूरनु,
शरसहस्रद मेले नानूरहवु द्वितियक्के,
मरळि यामत्रयके वसुसाविरद मेल्नूरेणेकेयलि,
हन्नेरडु तासिगे हत्तुसाविरदेंटु नूरहवु ॥ ३ ॥

ओंदुदिनदोळगनिळ यिप्पत्तोंदु साविरदारुनूरु,
मुकुंदनाज्ञदि माडि माडिसि लोकगळ पोरेवनेंदु पवनन पोगळुतिरु,
येंदेंदु मरेयदे,
ई महिमे संक्रंदनाद्यरिगुंटे नोडलु सर्वकालदलि ॥ ४ ॥

मूरुलक्षद मेले विंशति ईरेरडु साविरवु पक्षके,
आरुलक्षद मेले नाल्वत्तेंटु साविरवु मारुतनु मासके जपिसि,
संसारसागरदिंद सुजनर पारुगाणिसि सलहुवनु,
बहुभोगगळनित्तु ॥ ५ ॥

एरडु तिंगळिगहुदु ऋतु भू सुररु तिळिवुदु–
श्वासजप हन्नेरडु लक्षद मॆले तॊंभत्तारु साहस्र,
करेसुवदु अयनाह्वयदि अरे वरुष मूवत्तॆंटु लक्ष,
ई परि तिळिवुदॆंभत्तु यॆंटु सहस्र कॊविदरु ॥ ६ ॥

वरुषकिदरिम्मडि जपंगळ गुरुवरिय तामाडि माडिसि–
दुरितगळ परिहरिसुवनु चिंतिसुव सज्जनर,
सुर विरॊधिगळॊळगे नेलेसिद्दरविदूर तमॊधिकारिगळ–
इरवरितु सॊहं उपासने माळ्पनवरंते ॥ ७ ॥

इनितुपासने सर्वजीवरॊळनिलदॆवनु माडुतिरे,
चिंतनेय माडदे कंड नीरॊळु मुळुगि नित्यदलि,
मनेयॊळगे कृष्णाजिनाद्यासनदि कुळितु,
विशिष्ट बहुसज्जननेनिसि जपमणिगळॆणिसिदरॆनु बॆसरदे ॥ ८ ॥

ऒदनॊदकवेरडु तॆजदॊळैदुववु लय,
तदभिमानिगळाद शिव पवनरु रमाधीनत्व ऎदिहरु,
ई दिविजरॊडगूडि श्रीमधुसूदनन ऎदुवळु यॆंदरिदु,
आदरदलन्नॊदकव कॊडुतुणुत सुखिसुतिरु ॥ ९ ॥

जालितॊप्पलजाविगळु मेद्वालयदि स्वॆच्छानुसारदि पालगरेवंददलि,
लक्ष्मीरमण तन्नवर कीळु कर्मव स्वीकरिसि,
तन्नालयदॊळिट्टवर पॊरेव कृपाळु–
कामद–कैरवदळश्याम–श्रीराम ॥ १० ॥

शशि–दिवाकर–पावकरॊळिह असित–सित–लॊहितगळलि,
शिव–स्वसन–भार्गवि मूवरॊळु श्रीकृष्ण–हयवदन–वसुधिपार्दन त्रिवृतु येनिसि,
ईवसुमतियॊळन्नॊदकानळ पेसरिनिंदलि–
सर्वजीवर सलहुवनु करुणि ॥ ११ ॥

दीप करदलि पिडिदु काणदे कूपदोळु बिद्दंते,
वॊद महोपनिषदर्थगळ नित्यदि पॆळुववरेल्ल,
श्रीपवनमुखविनुतनमल सुरूपगळ व्यापार तिळियदे,
पापपुण्यके जीवकर्तृ अकर्तृ हरियेंब ॥ १२ ॥

अनिलदॆवनु वाङ्मनोमयनेनिसि पावक–वरुण–संक्रंदन मुखाद्यरोळिद्दु,
भगवद्रूपगुणगळनु नेनेनेनेदु उच्चरिसुतलि,
नम्मनु सदा संतैसुवनु,
सन्मुनिगणाराधित पदांबुज गॊज सुरराज ॥ १३ ॥

पादवेनिपवु वाङ्मनोमय, पादरूपद्वयगळोळु प्रह्लाद पॊषक–
संकरुषणाह्वयदि नेलेसिद्दु,
वॊदशास्त्रपुराणगळ संवादरूपदि मननगैवुत,
मॊदमय सुखवित्तु सलहुव सर्व सज्जनर ॥ १४ ॥

गंधवह दशदिशगळोळगरविंद सौरभ पसरिसुत–
घ्राणेंद्रियगळिगे सुखवनीवुत संचरिसुवंते,
इंदिरेशन सुगुणगळ दैनंदिनदि तुतिसुतनुमॊदिसुत–
अंधबधिरसुमूकनंतिरु मंद जनरोडने ॥ १५ ॥

श्रीरमणनरमनेय पूर्व द्वारदल्लिह संज्ञ सूर्यग–
भारतीपति प्राणनोळगिह लकुमिनरयणन–
सॆरि मनुजोत्तमरु सर्वशरीरगत नारायणन–
अवतारगुणगळ तुतिसुतलि मॊदिपरु मुक्तियलि ॥ १६ ॥

प्रणवप्रतिपाद्यन पुरद दक्षिणकवाटदलिप्प,
शशिरोहिणिगत व्यानस्थ कृति प्रद्युम्न रूपवनु गुणगळनु संस्तुतिसुतलि–
पितृ गण गधाधरनतिविमल पट्टणदोळगे–
स्वॆच्छानुसारदि संचरिसुतिहरु ॥ १७ ॥

अमितविक्रमनालयद पश्चिमकवाटदि सतिसहित संभ्रमदि–
भगवद्गुणगळने पोगळुतलि मॊदिसुव–
सुमनसास्यनॊळिप्पपानग दमन संकरुषणन–
निज हृत्कमलदॊळु धॆनिसुव ऋषिगणवैदि सुखिसुवरु ॥ १८ ॥

स्वरमणन गुणरूप सप्त स्वरगळिंदलि पाडुतिह–
तुंबुरने मॊदलादखिळ गंधर्वरु,
रमापतिय पुरद उत्तरबागिलाधिप सुरपशचिगसमान वायुग हरिन्मणिनिभ–
शांतिपति अनिरुद्धनैदुवरु ॥ १९ ॥

गरुडशेषमरेंद्रमुख पुष्करने कडेयागिप्पखिळ निर्जररु–
ऊर्ध्वद्वारगत भारति उदानदॊळु मेरॆव मायावासुदेवन–
परम मंगळवयवगळ मंदिरवनैदि,
सदा मुकुंदन नॊडि सुखिसुवरु ॥ २० ॥

द्वार पंचक पालरॊळगिह भारती प्राणांतरात्मक–
मारमणनैरूप तत्तद्वारदलि बप्प–
मूरॆरडु विध मुक्तियॊग्यर तारतम्यवनरितवर–
कंसारि संसाराब्धि दाटिसि मुक्तरन माळ्प ॥ २१ ॥

बॆळगिधूजियु नॊळ्परिगॆ थळ थळिसुतलि कंगॊळिसुवंददि,
तॊळॆदु देहव नाममुद्रॆगळिंदलंकरिसि,
ओलिसि नित्य कुतर्क युक्तिगळलवबॊधर शास्त्र मर्मव तिळियदिह नर,
बरिदे इदरॊळु शंकिसिदरॆनु ॥ २२ ॥

उदधियॊळु ऊर्विगळु तॊर्पंददलि, हंसॊद्गीथ हरि हयवदन–
कृष्णाद्यमित अवतारगळु नित्यदलि पदुमनाभनॊळिरुतिहवु,
सर्वद समस्त प्राणिगळ चिद्हृदयगत रूपगळु–
अव्यवधानदलि बिडदे ॥ २३ ॥

शरधियोळु मकरादि जीवरु इरळु हगलॆकप्रकारदि,
चरिसुतनुमॊदिसुत इप्पंददि,
जगत्रयवु इरुतिहदु जगदीशनुदरदि, करॆसुवदु प्रतिबिंबनामदि,
धरिसिहदु हरिनामरूपंगळनु अनवरत ॥ २४ ॥

जननि सौष्ठपदार्थगळु भॊजनव माडलु,
गर्भगत शिशु दिनदिनदि अभिवृद्धियैदुव तॆरदि जीवरिगॆ,
पदुमनाभनु सर्वरस उंडुणिसि संरक्षिसुव,
जाह्नवि जनक जन्माद्यखिळ दॊषविदूर गंभीर ॥ २५ ॥

आशॆगॊळगादवनु जनरिगॆ दासनॆनिसुव,
आशॆयनु निजदासगैदिह पुंसगॆल्लरु दासरॆनिसुवरु,
श्रीशनंघ्रि सरॊजयुगळ निराशॆयिंदलि भजिसॆ ओलिदु,
रमासहित तन्नने कॊडुव करुणासमुद्र हरि ॥ २६ ॥

द्युनदि आद्यंतवनु काणदॆ मनुजनॆकत्रदलि ता मज्जनव गैयॆ,
समस्तदॊषदि मुक्तनह तॆरदि,
अनघनमलानंतानंत सुगुणगळॊळगॊंदॆ गुणॊपासनॆय गैव महात्म,
धन्य कृतार्थनॆनिसुवनु ॥ २७ ॥

वासुदॆवनु करॆसुवनु कार्पासनामदि, संकरुषणनु वासवागिह तूलदॊळु,
तंतुगनु प्रद्युम्न,
वासरूपनिरुद्धदॆवनु,
भूषणनु तानागि तॊर्प परॆशनारायणनु सर्वद मान्य मानदनु ॥ २८ ॥

ललनॆयिंदॊडगूडि चैलगळॊळगॆ ऒतप्रॊतरूपदि नॆलॆसिहनु–
चतुरात्मक जगन्नाथ विठलनु,
छळि बिसिलु मळॆगाळियिंदरघळिगॆ बिडदलॆ कावनॆंदरिदु–
इळॆयॊळर्चिसुतिरु सदा सर्वांतरात्मकन ॥ २९ ॥

॥ इति श्री श्वास संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री स्वगतस्वातंत्र्य संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

स्वगत स्वातंत्रिय गुणव हरि तेगेदु ब्रह्माद्यरिगे कोट्टदु,
भृगुमुनिप पेळिदनु इंद्रद्युम्नक्षितिपनिगे ॥

परम विष्णु स्वतंत्र, माया तरुणि वक्षस्थळ निवासि,
सरसिजोद्भव प्राणरीर्वरु सचिवरेनिसुवरु,
सरुव कर्मगळल्लि तत्प्रियरुरग भूषणहंकृतित्रय,
करेसुवमरेंद्रार्क मुखरिंद्रियपरेनिसुवरु ॥ १ ॥

ई दिवौकसरंते कलिमोदलाद दैत्यरु सर्वदेहदि तोदकरु तावागि,
व्यापारगळ माडुवरु,
वेधनंददि कलियहंकाराधिपाधम,
मधुकुकैटभ क्रोधिशंबर मुखरु मनसिगे स्वामियेनिसुवरु ॥ २ ॥

देवतेगळोपादि नित्यदि ऐवमादी नामदिंदलि,
यावदिंद्रियगळलि व्यापारगळ माडुवरु,
सेवकर सेवानुगुण फलवीव नृपनंददलि,
तन्न स्वभाव स्वातंत्रिय विभागव माडिकोट्ट हरि ॥ ३ ॥

अगणित स्वातंत्रियव नाल्बगे विभागव माडि,
ओंदनु तेगेदु दशविधगैसि, पादरे पंचप्राणनलि,
मोगचतुष्टयनोळु सपादैदुगुणविरसिद,
मत्ते दशविध युगळ गुणवनु माडि एरडु सदाशिवनोळिट्ट ॥ ४ ॥

पाकशासन कामरोळु सार्धैकविट्ट, दशेंद्रियर सुदिवौकसाद्यरोळोंदु,
यावज्जीवरोळगोंदु,
नाल्कुवरे कल्ल्यादि दैत्यानीककित्तनु,
एरडु त्रिविध विवेक गैसि, इंदिरगे ओंदु–एरडात्म तन्नोळगे ॥ ५ ॥

ई विधदि स्वातंत्रियत्वव देवमानव दानवरोळु,
रमाविनोदि विभाग माडिट्टल्ले रमिसुवनु,
मूवरोळगिद्दवर कर्मव ता विकारवगैसदले,
कल्पावसानके कोडुवनु अनायासवर गतिय ॥ ६ ॥

आलयगळोळिप्प दीपज्वाले वर्तिगळनुसरिसि जनरालिगोप्पुव तेरदि,
हरि ता तोर्प सर्वत्र,
कालकालदि श्रीधरा दुर्गाललनेयर कूडि सुखमय,
लीले गैयलु त्रिगुण कार्यगळिहवु जीवरिगे ॥ ७ ॥

इंद्रियगळिं माळ्प कर्म द्वंद्वगळ तनगर्पिसलु,
गोविंद पुण्यव कोंडु पापव भस्मवने माळ्प,
इंदिरेशनु भक्तजनरनु निंदिसुवरोळगिप्प पुण्यव तंदु तन्नवगीव,
पापगळवरिगुणिसुवनु ॥ ८ ॥

होत्तु होत्तिगे पापकर्म प्रवर्तकर निंदिसदे,
तनगिंदुत्तमर गुणकर्मगळ कोंडाडदले इप्प मर्त्यरिगे,
गो ब्राह्मण स्त्री हत्य मोदलादखिळ दोषगळित्तपनु,
संदेह पडसल्लखिळ शास्त्रमत ॥ ९ ॥

तन्नस्वातंत्रिय गुणगळ हिरण्य गर्भाद्यरिगे–
कलिमुखदानवर संततिगे अवरधिकारवनुसरिसि पुण्यपापगळीव,
बहु कारुण्यसागरनु,
अल्पशक्तिगळुण्णलरियदे इरलु उणकलिसिदनु जीवरिगे ॥ १० ॥

सत्यविक्रम पुण्य पाप समस्तरिगे कोडलॊसुगदि,
नाल्वत्तु भागव माडि लॆशांशवनु जनकीव,
अत्यलुप परमाणु जीवगे सामर्थ्यवनु ता कोट्ट,
स्थूल पदार्थगळुंडुणिप सर्वद सर्व जीवरिगे ॥ ११ ॥

तिमिर तरणिगळॆक दॆशदि समनिसिप्पवे एंदिगादरु,
भ्रमणछळि बिसलंजिकेगळुंटॆनो पर्वतके,
अमित जीवरोळिद्दु लक्ष्मीरमण व्यापारगळ माडुव,
कमलपत्र सरॊवरगळोळगिप्प तेरदंते ॥ १२ ॥

अंबुजॊद्भव मुख्यसुर कलि शंबरादि समस्त दैत्यकदंबकनुदिन,
पुण्यपाप विभागवने माडि,
अंबुधिय जलवनु महद्घट दिंबनितु तुंबुवतेरदि,
प्रतिबिंबरोळु तानिद्दु यॊग्यते यंते फलवीव ॥ १३ ॥

इनितु विष्णुरहस्यदोळु भृगु मुनिप इंद्रद्युम्नगरुपिददनु,
बुधरु कॆळुवुदु नित्यदि मत्सरव बिट्टु,
अनुचितॊक्तिगळिद्दरेयु सरि, गणने माडदिरेंदु विद्वज्जनके विज्ञापनेय माडुवे,
विनयपूर्वकदि ॥ १४ ॥

वीतभय–विश्वेश–विधिपित–मातुळांतक–मध्ववल्लभ–भूतभावन–
अनंत भास्कर तॆज–महराज,
गौतमन मडदियनु काय्दानाथरक्षक,
गुरुतम जगन्नाथ विठल तन्ननंबिद भकुतरनु पोरेव ॥ १५ ॥

॥ इति श्री स्वगतस्वातंत्र्य संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री दत्तस्वातंत्र्य संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

कारुणिक हरि तन्नोळिप्पपार स्वातंत्रिय गुणव नानूरु तेगेदु,
सपाद आरोंदधिक अरवत्तु नारिगित्त,
द्विषोडशाधिक नूरु पादत्रयव–
तन्न शरीरदोळगीपरि विभागव माडि त्रिपदाह्व ॥ १ ॥

सत्यलोकाधिपनोळगे ऐवत्तेरडु, पवमाननोळु नाल्वत्तु मेलेंटधिक,
शिवनोळगिट्टनिप्पत्तु,
चित्त जेंद्ररोळैदधिक दश, तत्व मानिगळेनिप सुररोळु हत्तु,
ईरैदखिळ जीवरोळिट्ट निरवद्य ॥ २ ॥

कलि मोदलुगोंडखिळ दानवरोळगे नाल्वत्तैदु,
ई परि तिळिदुपासने माडु मरेयदे परम भकुतियलि,
इळेयोळगे संचरिसु, लक्ष्मी निलयन आळु आनेंदु,
सर्व स्थळगळलि संतैसुतिप्पनु गेळेयनंददलि ॥ ३ ॥

अवनिप स्वामित्व धर्मव स्ववश मात्यरिगित्तु,
ता मत्तवर मुखदलि राजकार्यव माडिसुव तेरदि,
कविभिरीडित तन्न कळेगळ दिविजदानव मानवरोळिट्टु,
अविरत गुणत्रयज कर्मव माडि माडिसुव ॥ ४ ॥

पुण्यपापगळी तेरदि कारुण्यसागर,
देव–दानव–मानवरोळिट्टवर फलव्यत्यासवने माडि,
बन्नबडिसुव भक्तिहीनर सन्नुत सुकर्म फलतेगेदु,
प्रपन्नरिगे कोट्टवर सुखबडिसुवनु सुभुजाह्व ॥ ५ ॥

माणिकव कोंडंगडियोळजिवानकोट्टा पुरुषन समाधान माडुव तेरदि,
दैत्यरु नित्यदलि माळ्प दान यज्ञादिगळ फल,
पवमान पितनपहरिसि,
असमीचीन सुखगळ कोट्टु असुरर मत्तरनु माळ्प ॥ ६ ॥

ऐणलांछननमलकिरण क्रमेण वृद्धियनैदि,
लोगर काणगोडदिह कत्तलेय भंगिसुव तेरदंते,
वैनतेयांसगन मूर्ति ध्यानवुळ्ळ महात्मरिगे,
सुज्ञान भक्त्यादिगळु वर्धिसि सुखवे कोडुतिहरु ॥ ७ ॥

जनपनरिकेय चोर पोळलोळु धनव कद्दोय्दीयलवनव,
अगुणगळेणिसदे पोरेव कोडदिरे शिक्षिसुव तेरदि,
अनुचितोचित कर्म कृष्णार्पणवेनलु कैकोंडु,
तन्नरमनेयोळिट्टानंद बडिसुव माधवानतर ॥ ८ ॥

अन्नदन्नादन्न नामक मुन्न पेळ्द प्रकार,
जीवरोळन्नरूप प्रवेषगैदवरवर व्यापार-
बन्नबडदले माडि माडिसि धन्यरिवरहुदेंदेनिसि,
त्रैगुण्यवर्जित तत्तदाह्वयनागि करेसुवनु ॥ ९ ॥

सलिलबिंदु पयोब्धियोळु बीळलु विकारवनैद बल्लदे,
जलवु तद्रूपवने ऐदुवदेल्ल कालदलि,
कलिमलापहनर्चिसुव सत्कुलजर कुकर्मगळु,
ता निष्कलुष कर्मगळागि पुरुषार्थगळ कोडुतिहरु ॥ १० ॥

मोगदोळगे मोगविट्टु मुद्दिसि मगुविनं बिगिदप्पि रंबिसि,
नेहदि तेगेदु तन्नय स्तनगळुणिसुव जननियंददलि,
अगणितात्मनु तन्न पादाब्जगळ धेनिप भक्त जनरिगे,
प्रघटकनु तानागि सौख्यगळीव सर्वत्र ॥ ११ ॥

तॊटिगनु भूमियॊळु बीजव नाटबेकेंदेनुत हितदलि मॊटेयिं नीरेत्ति-
ससिगळ संतयिसुवंते,
पाटुबडदले जगदि जीवर घॊटकास्यनु सृजिसि,
यॊग्यते दाटगॊडदले सलहुतिप्पनु सर्वकालदलि ॥ १२ ॥

भूमियॊळु जलविरे तृषार्तनु ता मरेदु मोगवेत्ति-
एण्देसे व्यॊम मंडलदॊळगे काणदे मिडुकुवंददलि,
श्रीमनॊरम सर्वरंतर्यामियागिरे, तिळियलरियदे,
भ्रामकरु भजिसुवरु भकुतियलन्य दॆवतेय ॥ १३ ॥

मुख्यफल वैकुंठ, मुख्यामुख्यफल महदादिलॊक,
अमुख्यफल वैषयिकवेंदरिदति भकुतियिंद,
रक्कसारिय भजिसुतलि निर्दुःखनागु निरंतरदि,
मोरे पोक्कवर बिड भृत्यवत्सल, भारतीश पित ॥ १४ ॥

व्याधियिं पीडित शिशुविगे गुडॊदकव नेरेदु,
अदके औषध तेदु कुडिसुव तायियॊपादियलि,
सर्वज्ञ बादरायण भक्त जनके प्रसादरूपकनागि,
भागवतादियलि पॆळिदनु धर्मादिगळे फलवेंदु ॥ १५ ॥

दूरदल्लिह पर्वत घनाकारतॊर्पुदु नॊळ्प जनरिगे,
सार गैयलु सर्व व्याघ्रगळिंद भयविहुदु,
घॊरतर संसार सौख्य असार तरवेंदरितु,
नित्य रमारमणन आराधिसुवरु अदरिंद बल्लवरु ॥ १६ ॥

केसर घटगळ माडि बेसिगे बिसिलॊळगिट्टोणगिसिदरदु,
घन रसवु तुंबलु बहुदे?
सर्वस्वतंत्र नानेंब पशुपनरनेनेनु माळ्पानशन दान स्नान कर्मगळोसरि पॊपपु,
बरिदे देहायासवने कॊट्टु ॥ १७ ॥

एरडु दीक्षेगळिहवु बाह्यंतरवेनिप नामदलि,
बुधरिंदरितु दीक्षितनागु दीर्घद्वेषगळ बिट्टु,
हरिये सर्वोत्तम–क्षराक्षर पुरुष पूजित पाद–
जन्माद्यरविदूर–सुखात्म–सर्वगनेंदु स्मरिसुतिरु ॥ १८ ॥

हेयवस्तुगळिल्लवु, उपादेय वस्तुगळिल्ल,
न्यायान्याय धर्मगळिल्ल, द्वेषासूये मोदलिल्ल,
तायितंदेगळिल्ल कमलदळायताक्षगेयेनलु,
ईसुव कायियंददि मुळगगोडदे भवाब्धि दाटिसुव ॥ १९ ॥

मंदनादरु सरिये गोपीचंदन श्रीमुद्रेगळ नलुविंद धरिसुत,
श्रीतुलसि पदुमाक्षि सरगळनु कंधरद मध्यदलि धरिसि,
मुकुंद–श्रीभूरमण–त्रिजगद्वंद्य–सर्व स्वामि,
मम कुल दैववेने पोरेव ॥ २० ॥

प्रायधनमददिंद जनरिगे नायक प्रभुवेंबि,
पूर्वदि तायि पोट्टेयोळिरलु प्रभुवेंदेके करेयरलै,
काय निन्ननु बिट्टु पोगलु राय नीनेंबुव प्रभुत्व पलायनवनैदितु,
समीपदलिद्दरदु तोरु ॥ २१ ॥

वासुदेवेक प्रकारदि ईशनेनिसुव,
ब्रह्म रुद्र शचीश मोदलादमररेल्लरु दासरेनिसुवरु,
ई सुमार्गव बिट्टु सोहमुपासनेयगैव नर,
देहज दैशिक क्लेशगळु बरलवनेके बिडिसिकोळ ॥ २२ ॥

आ परब्रह्मनलि त्रिजगद्व्यापकत्व–नियामकत्व–स्थापकत्व–
वशत्व–ईशत्वादि गुणगळिगे लोपविल्ल,
ऐकप्रकार स्वरूपवेनिपवु सर्वकालदि पोपुवल्लवु,
जीवरिगे दासत्वदोपादि ॥ २३ ॥

नित्यनूतन–निर्विकार–सुहृत्तम–प्रणवस्थ–
वर्णोत्पत्तिकारण–वाङ्मनोमय–सामगानरत,
दत्त कपिल हयास्य रूपदि पृथ्पृतग्जीवरोळगिद्दु प्रवर्तिसुवनु,
अवरवर योग्यते कर्मवनुसरिसि ॥ २४ ॥

श्रुतिगळातनमातु, विमल स्मृतिगळातन शिक्षे,
जीव प्रतति प्रकृतिगळेरडु प्रतिमेगळेनिसि कोळुतिहवु,
इतर कर्मगळेल्ल लक्ष्मीपतिगे पूजेगळेंदु स्मरिसुत,
चतुरविध पुरुषार्थगळ बेडदिरु स्वप्नदलि ॥ २५ ॥

भूतळाधिपनाज्ञधारक दूतरिगे सेवानुसारदि वेतनव कोट्टु,
अवर संतोषिसुव तेरदंते,
मातरिश्वप्रियनु परमप्रीतिपूर्वक–
सद्गुणंगळ गाधकर संतोषबडिसुव इहपरंगळलि ॥ २६ ॥

दीपदिवदलि कंडरादडे लोपगैसुवराक्षण,
हरि समीपदल्लिरे नंदनामसुनंदवेनिसुववु,
औपचारिकवल्ल सुजनर पापकर्मवु पुण्यवेनिपवु,
पापिगळ सत्पुण्य कर्मवु पापवेनिसुववु ॥ २७ ॥

धनव संपादिसुव प्रद्रावणिकरंददि कोविदर मने मनेगळलि संचरिसु,
शास्त्रश्रवणगोसुगदि,
मननगैदुपदेशिसुत दुर्जनर कूडाडदिरु स्वप्नदि,
प्रणत कामद कोडुव सौख्यगळिहपरंगळलि ॥ २८ ॥

कारकक्रिय द्रव्य विभ्रम मूरुविध जीवरिगे–
बहु संसारकिवु कारणवेनिसुववु एल्ल कालदलि,
दूरवोडिसि भ्रामकत्रय मारिगोळगागदले सर्वाधारकन चिंतिसुतलिरु,
सर्वत्र मरेयदले ॥ २९ ॥

करण कर्मव माडिदरे विस्मरणे कालदि मातुगळिगुत्तरव कोडदले सुम्मनिप्पनु,
जागरावस्थे करुणिसलु व्यापार माडुव,
बरलु नाल्कावस्थेगळु परिहरिसिकोळनेतके–
स्वतंत्रनु तानेयेंबुवनु? ॥ ३० ॥

युक्ति मातुगळल्ल श्रुतिस्मृत्यक्त मातुगळिवु,
विचारिसे मुक्तिगिवु सोपानवेनिपवु प्रतिप्रती पदवु,
भक्तिपूर्वक पठिसुववरिगे व्यक्ति कोडुव स्वरूपसुख,
प्रविविक्तरन माडुवनु भवभयदिंद बहुरूप ॥ ३१ ॥

श्रीनिवासन सुगुण मणिगळ प्राणमत वयुनाख्य सूत्रदि–
पोणिसिद मालिकेय वाङ्मयंगेसमर्पिसिद–
ज्ञानिगळ दृग्विषयवहुदु, अज्ञानिगळिगे असह्य तोर्पुदु,
माणिकव मर्कटन कैयलि कोट्ट तेरदंते ॥ ३२ ॥

श्रीविधीर विपाहिपेश शचीवरात्मभवार्क शशि दिग्देव–
ऋषि गंधर्व किन्नर सिद्ध साध्यगण सेवित पदांभोज,
त्वत्पादावलंबिगळाद भक्तर काव,
करुणासांद्र लक्ष्मी हृत्कुमुदचंद्र ॥ ३३ ॥

आदरिश अगताक्ष भाषाभेददिंदलि करेयलदनु,
निषेधगैदवलोकिसदे बिडुवरे विवेकिगळु,
माधवन गुण पेळव प्राकृत वादरेयु सरि,
केळि परमाह्लाद बडदिप्परे निरंतर बल्ल कोविदरु ॥ ३४ ॥

भास्करन मंडलव कंडु नमस्करिसि मोदिसदे,
द्वेषदि तस्करनु निंदिसलु कुंदहुदे दिवाकरगे?
संस्कृतविदल्लेंदु कुहक तिरस्करिसलेनहुदु?
भक्ति पुरस्करदि केळवरिगे वोलिवनु पुष्कराक्ष सदा ॥ ३५ ॥

पतितन कपालदॊळु भागीरथिय जलविरॆ पॆयवॆनिपुदॆ?
इतर कवि निर्मित कुकाव्या श्राव्य बुधरिंद?
कृतिपति कथान्वितवॆनिप प्राकृतवॆ ता संस्कृतवॆनिसि–
सद्गतियनीवुदु भक्ति पूर्वक कॆळि पॆळ्वरिगॆ ॥ ३६ ॥

वॆद शास्त्र सयुक्ति ग्रंथगळॊदि कॆळ्दवनल्ल,
संतत साधुगळ सहवास सल्लापगळु मोदलिल्ल,
मॊद तीर्थार्यर मतानुगरादवर करुणदलि पॆळ्दॆ,
रमाधव जगन्नाथ विठल तिळिसिददरॊळगॆ ॥ ३७ ॥

॥ श्री दत्तस्वातंत्र्य संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री बिंबापरोक्ष संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

मुक्त बिंबनु तुरिय, जीवन्मुक्त बिंबनु विश्व,
श्रुति संसक्त बिंबनु तैजसनु, असृज्यरिगे प्राज्ञ,
शक्तनादरु सरिये सर्वोद्रक्त महिमनु दुःख सुखगळ- ।
वक्तृ माडुतलिप्प कल्पांतदलि बप्परिगे ॥ १ ॥

अन्ननामक प्रकृतियोळगच्छिन्ननागिह प्राज्ञनामदि,
सोन्नोडल मोदलादवरोळन्नाद तैजसनु,
अन्नदांबुदनाभ विश्वनु,
भिन्ननाम क्रियेगळिंदलि तन्नोळगे तारमिप पूर्णानंद ज्ञानमय ॥ २ ॥

बूदियोळगडगिप्पनळनोपादि चेतन प्रकृतियोळु,
अन्नाद अन्नाह्वयदि करेसुव ब्रह्मशिवरूपि,
ओदनप्रद विष्णु परमाह्लाद वीवुत तृप्ति बडिसुव,
अगाध महिमन चित्र कर्मवनाव बण्णिसुव ॥ ३ ॥

नादभोजन शब्ददोळु, बिंबोदनोदकदोळगे, घोष अनु वाददोळु,
शांताख्य जठराग्नियोळगिरुतिप्प,
वैदिक सुशब्ददोळु पुत्र सहोदरानुगरोळु अति शांतन-
पाद कमलनवरत चिंतिसु ई परियलिंद ॥ ४ ॥

वेदमानि रमानुपास्य-गुणोदधि-गुणत्रय विवर्जित-
स्वोदरस्थित-निखिळ ब्रह्मांडाद्विलक्षणनु,
साधु सम्मत वेनिसुतिह निषुसीद गणपतियेंब श्रुति प्रतिपादिसुवदु-
अनवरतवन गुण प्रांतगाणदले ॥ ५ ॥

करेसुवनु मायारमण ता पुरुषरूपदि त्रिस्थळगळोळु,
परम सत्पुरुषार्थद महत्तत्वदोळगिद्दु,
सरसिज भवांडस्थित स्त्री पुरुष तन्मात्रगळ-
ऐकोत्तर दशेंद्रियगळ महाभूतगळ निर्मिसिद ॥ ६ ॥

ई शरीरग पुरुष त्रिगुणदि स्त्रीसहित तानिद्दु,
जीवरिगाशे लोभ-अज्ञान-मद-मत्सर-कुमोह-क्षुध-
हास-हर्ष-सुषुप्ति-स्वप्न-पिपास-जाग्रति-जन्म-स्थिति-मृति-
दोष-पुण्य-जय-अपजय द्वंद्वगळ कल्पिसिद ॥ ७ ॥

त्रिविध गुणमय देह जीवके कवचदंददि तोडिसि,
कर्म प्रवहदोळु संचार माडिसुतिप्प जीवरना,
कविसि मायारमण मोहव भवके कारणनागुवनु,
संश्रवण मननव माळ्परिगे मोचकनेनिसुतिप्प ॥ ८ ॥

साशनाह्वय स्त्री पुरुषरोळु वासवागिहनेंदरिदु विश्वास पूर्वक,
भजिसि तोषिसु स्वावरोत्तमर,
क्लेश नाशन अचलगळोळु प्रकाशिसुतलिह,
अनशन रूपोपासनव माळ्परिगे तोर्पनु तन्न निजरूप ॥ ९ ॥

प्रकारांतर चिंतिसुवदी प्रकृतियोळु विश्वादिरूपव,
प्रकट माळ्पेनु यथामतियोळु गुरुकृपाबलदि,
मुकुरनिर्मित सदनदोळु पोगेस्वकिय रूपव कांब तेरदंते,
अकुटिलात्म चराचरदि सर्वत्र तोरुवनु ॥ १० ॥

परिच्छेदत्रय प्रकृतियोळगिरुतिहनु विश्वादि रूपक,
धरिसि आत्मादि त्रिरूपव ईषणत्रयदि,
सुरुचि ज्ञानात्म स्वरूपदि तुरिय नामक वासुदेवन स्मरिसु-
मुक्ति सुखप्रदायक नीतनहुदेंदु ॥ ११ ॥

कमलसंभव जनक जड जंगमरोळगे नेलेसिद्दु–
क्रमव्युत्क्रमदि कर्मव माडि माडिसुतिप्प बेसरदे,
क्षम क्षाम क्षमीहनाह्वय सुमनसासुररोळगे–
अहं मम नमम एंदी उपासने ईव प्रांतदलि ॥ १२ ॥

ई समस्त जगत्तु ईशावास्यवेनिपुदु,
कार्यरूपवु नाशवादरु नित्यवे सरि कारण प्रकृति,
श्रीशगे जड प्रतिमे येनिपुदु मासदोम्मिगु सन्निधानवु,
वासवागिह नित्य शालग्रामदोपादि ॥ १३ ॥

ऐकमेवाद्वितीय रूपानेक जीवरोळिद्दु,
ता प्रत्येक कर्मव माडि मोहिसुतिप्प तिळिसदले,
मूक बधिरांधादि नामक ई कळेवरदोळगे करेसुव,
माकळत्रन लौकिक महामहिमेगेनेंबे ॥ १४ ॥

लोकबंधुर्लोकनाथ विशोकभक्तर शोकनाशन,
श्रीकरार्चित सोकदंददलिप्प सर्वरोळु,
साकुवनु सज्जनर परम कृपाकरेश पिनाकिसन्नुत,
स्वीकरिसुवानतरु कोट्ट समस्त कर्मगळ ॥ १५ ॥

आहित प्रतिमेगळेनिसुववु देहगेहापत्य सतिधन लोहकाष्ठ–
शिलामृदात्मकवाद द्रव्यगळु,
नेह्यदलि परमात्म एनगित्तीहनेंदरिदनुदिनदि–
सम्मोहकोळगागदले पूजिसु सर्वनामकन ॥ १६ ॥

श्रीतरुणि वल्लभगे जीवरु चेतन प्रतिमेगळु,
ओतप्रोतनागिद्देल्लरोळु व्यापार माडुतिह,
होत सर्वेंद्रियगळोळु संप्रीतियिंदुंडुणिसि विषय,
निर्वात देशग दीपदंददलिप्प निर्भयदि ॥ १७ ॥

भूतसोकिद मानवनु बहु मातनाडुव तेरदि,
महाभूत विष्णवावेशदिंदलि वर्तिपुदु जगवु,
कैतवोक्तिगळल्ल शेष फणात पन्नगे-
जीव पंचक व्रातवेंदिगु भिन्नपादाह्वयदि करेसुवदु ॥ १८ ॥

दिवियोळिप्पुवु मूरु पादगळु, अवनियोळगिहुदोंदु,
ई विध कविभिरीडित करेसुव चतुष्पातु तानेंदु,
इवन पाद चतुष्टयगळनु भवके तंदु निरंतरदि,
उद्धवन सख सर्वांतरात्मकनेंदु स्मरिसुतिरु ॥ १९ ॥

वंशबागलु बेळेये कंडु नरांशदलि शोभिपुदु,
बागद वंश पाशदि कट्टि ऐरुप डोंब मस्तकके,
कंसमर्दन दासरिगे निस्संशयदि एरगदले-
ना विद्वांसनेंदहंकरिसे भवगुणदि बंधिसुव ॥ २० ॥

ज्योतिरूपगे प्रतिमेगळु सांकेतिकारोपित,
सुपौरुष धातु सप्तक धैर्यशौर्योदार्य चातुर्य,
मातुमान महत्व सहन सुनीति निर्मल देश ब्राह्मण-
भूत पंचक बुद्धि मोदलादिंद्रियस्थान ॥ २१ ॥

जीवराशियोळमृत शाश्वत, स्थावरगळोळु स्थाणु नामक,
आवकालदलिप्प अजितानंतनेंदेनिसि,
गोविदांपति गायनप्रिय सावयव साहस्रनाम-
परावरेश पवित्रकर्म विपश्चित सुसाम ॥ २२ ॥

माधवन पूजार्थवागि निषेध कर्मव माडि धन संपादिसलु
सत्पुण्य कर्मगळेनिसिकोळुतिहवु,
सोदरंभरणार्थ नित्यदि साधुकर्मव माडिदरु सरि, ।
यैदुवनु देहांतरव संदेहविनितिल्ल ॥ २३ ॥

अपगताश्रय एल्लरोळगिद्दुपमनेनिपानुपम रूपनु,
शफरकॆतन जनक मॊहिप मॊहकन तेरदि,
तपनकॊटि समप्रभासित वपुवेनिप कृष्णादि रूपक,
विपगळंतुंडुणिप सर्वत्रदलि नेलेसिद्दु ॥ २४ ॥

अडवियोळु बित्तदले बेळेदिह गिडद मूलिके,
सकल जीवर ओडलोळिप्पामयव परिहरगैसुवंददलि,
जडज संभव जनक त्रिजगद्वडेय संतैसेनलु,
अवरिद्देडेगे बंदोदगुवनु भक्तरभिडेय मीरदले ॥ २५ ॥

श्रीनिकॆतन तन्नवर दॆहानुबंधिगळंते अव्यवधानदलि नेलेसिप्प-
सर्वद सकल कामदनु,
ऎनु कोट्टरु भुंजिसुत मद्वाने येंददि संचरिसु,
मत्तेनु बॆडदे भजिसुतिरु अवनंघ्रिकमलगळ ॥ २६ ॥

बॆडदले कोडुतिप्प सुररिगे, बॆडिदरे कोडुतिहनु नररिगे,
बॆडिबळलुव दैत्यरिगे कोडनोम्मे पुरुषार्थ,
मूढरनुदिन धर्म कर्मव माडिदरु सरि,
अहिक फलगळ नीडि उन्मत्तरनु माडि महा निरयवीव ॥ २७ ॥

तरणि सर्वत्रदलि किरणव हरहि तत्तद्वस्तुगळनु सरिसि-
अदरदरंते छायव कंगोळिप तेरदि,
अरिधरॆजानॆज जगदोळगिरुव छाया तपवेनिसि-
संकरुषणाह्वय अवरवर यॊग्यतेगळंतिप्प ॥ २८ ॥

ई विधदि सर्वत्र लक्ष्मी भूवनितेयर कूडि,
तन्न कळाविशॆषगळेल्ल कडेयलि तुंबि सॆव्यतम,
सॆवकनु तानेनिसि मायादॆविरमण प्रविष्ट रूपव सॆवे माळ्प,
शरण्य शाश्वतकरुणि कमलाक्ष ॥ २९ ॥

प्रणव कारण कार्य प्रतिपाद्यनु–परात्पर–
चेतनाचेतन विलक्षण–अनंत सत्कल्याण गुणपूर्ण–
अनुपमनु–उपासित–गुणोदधि–अनघ–अजित–अनंत–
निष्किंचन जनप्रिय–निर्विकार–निराश्रयाव्यक्ता ॥ ३० ॥

गोपभीय भवांधकारके दीपवट्टिगे,
सकल सुख सदनोपरिग्रहवेनिसुतिप्पुदु हरिकथामृतवु,
गोपति जगन्नाथ विठल समीपदलि नेलेसिद्दु,
भक्तरनापवर्गर माडुवनु महदुःखभयदिंद ॥ ३१ ॥

॥ इति श्री बिंबापरोक्ष संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री गुणतारतम्य संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

श्रीधरादुर्गामनॊरम, वॆधमुख सुमनसगण समाराधित पदांभॊज,
जगदंतर्बहिर्व्याप्त,
गॊधर फणिप वरातपत्र, निषॆध शॆष, विचित्रकर्म,
सुबॊध सुखमयगात्र परमपवित्र सुचरित्र ॥ १ ॥

नित्य निर्मल निगमवॆद्यॊत्पत्ति स्थितिलय दूरवर्जित,
स्तुत्य पूज्य प्रसिद्ध मुक्तामुक्त गणसॆव्य,
सत्यकाम शरण्य शाश्वत, भृत्यवत्सल भय निवारण,
अत्यधिक संप्रियतम जगन्नाथ मां पाहि ॥ २ ॥

परम पुरुषन रूप गुणव अनुसरिसि कांबळु प्रवहदंददि,
निरुपमळु निर्दुष्टसुखसंपूर्णळॆनिसुवळु,
हरिगे धामत्रयळॆनिसि, आभरण वसनायुधगळागिद्दु,
अरिगळनु संहरिसुवळु अक्षरळॆनिसिकॊंडु ॥ ३ ॥

ईतगिंतानंतगुणदलि श्रीतरुणि ता कडिमॆयॆनिपळु,
नित्य मुक्तळु निर्विकारळु त्रिगुणवर्जितळु,
धौतपाप विरिंचि पवनर मातॆयॆनिप महालकुमि,
विख्यातळागिहळॆल्ल कालदि श्रुति पुराणदॊळु ॥ ४ ॥

कमलसंभव पवनरीर्वरु समरु–समवर्तिगळु,
रुद्राद्यमरगण सॆवितरु अपरब्रह्मनामकरु,
यमळरिगॆ महलक्ष्मि तानुत्तमळु कॊटि सजाति गुणदिंद,
अमित सुविजात्यधमरॆनिपरु ब्रह्मवायुगळु ॥ ५ ॥

पतिगळिंद सरस्वती भारतिगळधमरु नूरुगुणपरिमित विजात्यवररु,
बलज्ञानादिगुणदिंद अतिशयरु वाग्देवि श्रीभारतिगे,
पदप्रयुक्त विधिमारुतरवोल्चिंतिपुदु–
सद्भक्तियलि कोविदरु ॥ ६ ॥

खगप फणिपति मृडरु सम, वाणिगे शत गुणावररु मूवरु,
मिगिलेनिसुवनु शेष पददिंदलि त्रियंबकगे,
नगधरन षण्महिषियरु पन्नग विभूषणगैदु,
मेनकि मगळु वारुणि सौपरणिगळिगधिकवेरडु गुण ॥ ७ ॥

गरुडशेष महेषरिगे सौपरणि वारुणि पार्वति मूररु दशाधम,
वारुणिगे कडिमेनिसुवळु गौरी,
हरन मडदिगे हत्तु गुणदलि सुरप कामरु कडिमे,
इंद्रगे कोरतेयेनिसुव मन्मथनु पददिंदलावाग ॥ ८ ॥

ईरयिदु गुण कडिमे आहंकारिक प्राणनु मनोज नगारिगळिगे,
अनिरुद्ध रति मनु दक्ष गुरु शचियु आरु जन सम–
प्राणनिंदलि हौरगेनिपरु हत्तु गुणदलि,
मारजाद्यरिगैदुगुणदिंदधम प्रवहाख्य ॥ ९ ॥

गुणद्वयदिं कडिमे प्रवहगे इन शशांक यम स्वयंभुव मनु मडदि शतरूप नाल्वरु,
पाद पादार्ध वनधि नीच,
पादार्ध नारद,
मुनिगे भृग्वग्नि प्रसूतिगळेनिसुवरु पादार्ध गुणदिंदधमरहुदेंदु ॥ १० ॥

हुतवहगे द्विगुणाधमरु विधि सुत मरीच्यादिगळु,
वैवस्वतनु विश्वामित्ररिगे किंचिद्गुणाधमनु,
व्रतिवर जगन्मित्रवर निरऋति प्रावहिताररिगे–
किंचितु गुणाधम धनपविष्वक्सेनरेनिसुवरु ॥ ११ ॥

धनप विष्वक्सेन गौरीतनयरिगे उक्तेतररु समरेनिसुवरु–
एंभत्तयिदु जन शेषशतरेंदु,
दिनपरारु, ऐळधिक नाल्वत्तनिलरु, ऐळ्वसु,
रुद्ररीरैदु, अनितु विश्वेदेव, ऋभु अश्विनी पितृ धरणी ॥ १२ ॥

इवरिगिंतलि कोरतेयेनिपरु च्यवन सनकादिगळु पावक–
कवि उचित्थ्य जयंत कश्यप मनुगळेकदश–
धृव नहुष शशिबिंदु हैहय दौष्यंति "विरोचनन निज कुवर"–
बलि मोदलाद सप्तेंद्ररु ककुत्स्थगय ॥ १३ ॥

पृथु भरत मांधात प्रियव्रत मरुत प्रह्लाद सुपरीक्षित–
हरिश्चंद्रांबरीषोत्तानपाद मुख–
"शतसुपुण्यश्लोकरु गदाभृतगधिष्ठानरु"–
सुप्रियव्रतगे द्विगुणाधमरु कर्मजरेंदु करेसुवरु ॥ १४ ॥

नळिनि संज्ञा रोहिणी श्यामल विराट् पर्जन्यरधमरु, ।
"यलरु मित्रन मडदि" द्विगुणाधमळु बांबोळगे,
जलमय बुधाधमनु द्विगुणदि, केळगेनिसुवळुषा,
शनैश्चर इळिगे ईरु गुणाधमरुषादेविद्यसियिंदा ॥ १५ ॥

एरडु गुण कर्माधिपति पुष्कर कडिमे, आजानु दिविजरु चिरपितृगळिंदुत्तमरु–
किंकररु पुष्करगे,
सुरपनालय गायकोत्तम एरडयिदु गुणदिंदधम,
तुंबुरगे सम नूरुकोटिऋषिगळु नूरुजनरुळिदु ॥ १६ ॥

अवरवर पत्नियरु अप्सर युवतियरु सम,
उत्तमरनुळिदवररेनिपरु मनुजगंधर्वरु द्विषड्गुणदि,
कुवलयाधिपरीरु, अयिदु गुण अवनिप स्त्रीयरु,
दशोत्तर नवति गुणदिंदधमरेनिपरु मानुषोत्तमरु ॥ १७ ॥

सत्वसत्वरु सत्वराजस सत्वतामस मूवरु–
रजस्सत्वाधिकारिगळु भगवद्भक्तरेनिसुवरु,
नित्यबद्धरु रजोरजरु–उत्पत्ति भूस्वर्गदोळु,
नरकदि पृथ्वियोळु संचरिसुतिप्परु रजस्तामसरु ॥ १८ ॥

तमस्सात्विकरेनिसिकोंबरु अमितनाख्यातासुररगण,
तमोराजसरेनिसिकोंबरु दैत्यसमुदाय,
तमसुतामस कलिपुरंध्रियु,
अमित दुर्गुणपूर्ण सर्वाधमरोळधमाधम दुरात्मनु कलियेनिसिकोंब ॥ १९ ॥

इवन पोलुव पापिजीवरु भुवन मूवरोळिल्ल नोडलु,
नवविधद्वेषगळिगाकारनेनिसि कोळुतिप्प,
बवरदोळु बंगारदोळु "नट युवति" द्यूतापेय मृषदोळु कविसि मोहदि–
केडिसुवनु येंदरिदु त्यजिसुवदु ॥ २० ॥

त्रिविध जीवप्रततिगळ सग्गवोळेयाण्मालयनु निर्मिसि,
युवतियर वडगूडि क्रीडिसुवनु कृपासांद्र,
दिविजदानव तारतम्यद विवर तिळिव महात्मरिगे,
बान्नविरसख ता नोलिदु उद्धरिसुवनु दयदिंद ॥ २१ ॥

देव दैत्यर तारतम्यवु पावमानि मतानुगरिगिदु केवलावश्यकवु–
तिळिवुदु सर्वकालदलि,
दावशिखि पापाटविगे, नव नावेयेनिपुदु भवसमुद्रके,
पावटिगे वैकुंठ लोककिदेंदु करेसुवदु ॥ २२ ॥

तारतम्यज्ञान मुक्ति द्वारवेनिपुदु,
भक्त जनरिगे तोरि पेळि सुखाब्धियोळु लोल्याडुवुदु बुधरु,
क्रूरमानवरिगिदु कर्ण कठोरवेनिपुदु,
नित्यदलि अधिकारिगळिगिदनरुपुवुदु दुस्तर्किगळ बिट्टु ॥ २३ ॥

हरिसिरि विरिंचीर भारति गरुड फणिपति षण्महिषियरु–
गिरिज नाकेश स्मर प्राणानिरुद्ध शचीदेवि गुरु रतीमनु दक्ष–
प्रवहा मरुत मानवि यमशशिदिवाकर–
वरुण नारद सुरास्य प्रसूति भृगु मुनिप ॥ २४ ॥

व्रततिजासन पुत्ररेनिसुव व्रतिवर मरीचात्रि–
वैवस्वतनु तारामित्र निरऋति प्रवह मारुतन सति–
धनेशाश्विनिगळिर्गण पतियु विष्वक्सेन शेषनु शतरु–
मनुगळुचिथ्यचावन मुनिगळिगे नमिपे ॥ २५ ॥

शतसुपुण्य श्लोकरेनिसुव क्षितिपरिगे नमिसुवेनु,
भागीरथि विराट्पर्जन्य रोहिणि श्यामला संज्ञा–
"हुतवहन महिळा" बुधोषाक्षिति शनैश्चर–
पुष्कररिगानतिसि बिन्नयिसुवेनु भक्ति ज्ञान कोडलेंदु ॥ २६ ॥

नूरधिकवागिप्प मत्थदिनारु साविर नंदगोप कुमारनर्धांगियु–
अरगस्त्यादी मुनीश्वररु–
"ऊर्वशी मोदलाद अप्सर नारियरु" "शत तुंबुररु"
कंसारि गुणगळ कीर्तनेय माडिसलि एन्निंद ॥ २७ ॥

पावनरु शुचि शुद्धनामक देवतेगळु–आजान चिरपितृ–
देवनरगंधर्वरु–अवनिप०मानुषोत्तमरु–
ई वसुमतियोळुळ्ळ वैष्णवरावळियोळिहनेंदु,
नित्यदि सेविपुदु संतोषदिं सर्वप्रकारदलि ॥ २८ ॥

मानुषोत्तमरन विडिदु चतुराननांत शतोत्तमत्व–
क्रमेण चिंतिप भक्तरिगे चतुरविध पुरुषार्थ–
श्रीनिधि जगन्नाथ विठल ताने वोलिदीवनु–
निरंतर सानुरागदि पठिसुवुदु संतरिद मरेयदले ॥ २९ ॥

॥ इति श्री गुणतारतम्य संधि संपूर्णं ॥

॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री आरोहण तारतम्य संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

भक्तरेनिसुव दिव्यपुरुषर उक्ति लालिसि पेळ्द–
मुक्तामुक्त जीवर तामतम्यव मुनिप शांडिल्य ॥

स्थावरर नोडल्के तृणक्रिमि जीवरुत्तम,
क्रिमिगळिंदलि आविगोगज व्याघ्रगळिंद शूद्रादि मूवरुत्तम,
कर्मिकर भूदेवरुत्तम, कर्मि नोडलु कोविदोत्तम,
कविगळिंदलि क्षितिपरुत्तमरु ॥ १ ॥

धरणिपर नोडल्के नर गंधर्वरुत्तम,
देव गंधर्वर गुणोत्तमरु, इवरिगिंत शतोनशतकोटि परम ऋषिगळु,
अप्सर स्त्रीयरु समानरु,
इवरिगिंतलि चिर पितृगळुत्तमरु, चिरनामक पितृगळिंद– ॥ २ ॥

एरदयिदु एंभत्तु ऋषि तुंबरशतोर्वर्शि अप्सर स्त्रीयरु–
शताजानजरु उत्तम चिरपितृगळिंद,
वररु ऊर्वशिगिंत वैश्वानरन सुतरीरेंटु साविर,
हरदियरोळुत्तम कशेर्येप्पत्तु नाल्कुजन ॥ ३ ॥

सरियेनिपरु व्रजौकस स्त्रीयरु, सुरास्यात्मजरिगिं पुष्करनु,
कर्मप पुष्करनिगे शनैश्चरुत्तमनु,
तरणिजनिगुत्तमळुष, अश्विनि सुररसिगुत्तम जलप बुध,
शरधिजात्मजगुत्तम स्वहदेवियेनिसुवळु ॥ ४ ॥

अनळभार्यळिगिंतनाख्यातनिमिषोत्तमरु,
इवरिगिंतलि घनप पर्जन्यानिरुद्धन स्त्री उषादेवि–
द्युनदि संज्ञा शामला रोहिणिगळार्वरु समान,
अनाख्यातनिमिषोत्तमरु, इवरिगिंतलि नूरु कर्मजरु ॥ ५ ॥

पृथु नहुष शशिबिंदु प्रियव्रत परीक्षित नृपरु
भागीरथिय नोडल्कधिक, बल्यादिंद्र सप्तकरु,
पितृगळेळु, एंटधिक अप्सर सतियरु, ईरैदोंदु मनुगळु,
दितिजगुरु चावन उचित्थ्यरु कर्मजरु समरु ॥ ६ ॥

धनप विष्वक्सेन गणपाश्विनिगळेंभत्तैदु शेषरिगेणेयेनिसुवरु,
मित्र तारा निरऋति प्रावहि गुणगळिंद–
ऐदधिक येंभत्तेनिप शेषरिगुत्तमरु,
सन्मुनि मरीचि पुलस्त्य पुलहाऋतु वसिष्ठमुख– ॥ ७ ॥

अत्रि अंगिरेळु ब्रह्मन पुत्ररिवरिगे समरु–
विश्वामित्र वैवस्वतनु ईशावेश बलदिंद,
मित्रगिंतुत्तमरु स्वाहा भर्तृ भृगुवु प्रसूति,
विश्वामित्र मोदलादवरिगिंतलि मूवरुत्तमरु ॥ ८ ॥

नारदोत्तमनु अग्निगिंतलि, वारिनिधि पादोत्तमनु,
यम तारकेश दिवाकररु शतरूपरुत्तमरु,
वारिजाप्तनिगिंत प्रवहा मारुतोत्तम,
प्रवहगिंतलि मारपुत्रनिरुद्ध गुरु मनु दक्ष शचि रतियु ॥ ९ ॥

आरु जनरुगळिंदलाहंकारिक प्राणोत्तम,
अखिळ शरीरमानि प्राणगिंतलि काम इंद्ररिगे,
गौरि वारुणि खगप राणिगे, शौरि महिषियरोळगे–
जांबवती रमायुतळाद कारण अधिकळेनिसुवळु ॥ १० ॥

हर फणिप विहगेंद्र मूवरु हरि मडदियरिगुत्तम,
सौपरणिपतिगुत्तमरु भारति वाणि ईर्वरिगे,
मरुत ब्रह्मरु उत्तमरु, इंदिरेयु परमोत्तमळु,
लक्ष्मिगे सरियेनिसुववरिल्लवेंदिगु देशकालदोळु ॥ ११ ॥

श्रीमुकुंदन महिळे लकुमि महामहिमेगेनेंबे,
ब्रह्मेशामरेंद्रर सृष्टि स्थिति लयगैसि अवरवर–
धामगळ कल्पिसि कोडुवळजरामरणळागिद्दु,
सर्व स्वामि मम गुरुवेंदुपासने माळ्पळच्युतन ॥ १२ ॥

ईसु महिमेगळुळ्ळ लक्ष्मि, परेशननंतानंत गुणदोळु–
लेशलेशके सरियेनिसळावाव कालदलि,
देशकालातीत लक्ष्मिगे केशवन वक्षस्थळवे अवकाशवायितु,
इवन महिमेगे व्याप्तिगेणेयुंटे ॥ १३ ॥

ओंदु रूपदोळु, ओंदवयवदोळु, ओंदु रोमदोळु,
ओंदु देशदि पोंदिकोंडिहरु अजभवादि समस्त जीवगण,
सिंधु सप्तद्वीप मेरु सुमंदराद्यादिगळु–
ब्रह्म पुरंदरादि समस्त लोक परालयगळेल्ल ॥ १४ ॥

अर्व देवोत्तमनु, सर्वग, सर्व गुणसंपूर्ण, सर्वद,
सर्व तंत्रस्वतंत्र, सर्वाधार सर्वात्म,
सर्वतोमुख, सर्वनामक, सर्वजन संपूज्य, शाश्वत,
सर्वकामद, सर्वसाक्षिग, सर्वजित्सर्व ॥ १५ ॥

तारतम्यारोहणव बरेदारु पठिसुवरवर,
लक्ष्मी नारसिंह समस्त देवगणांतरात्मकनु–
पूरयिसुव मनोरथंगळ, कारुणिक कैवल्यदायक,
दूरगैप समस्त दुरितव वीतशोक सुख ॥ १६ ॥

प्रणत कामदनंघ्रि संदरुशनदपेक्षेय उळ्ळवगे,
निच्चणिके येनिपुदु जडमोदलु ब्रह्मांड तरतमवु,
मनवचनदिं स्मरिसुवर भववनधिशोषिसि पोगुवुदु,
कारणवेनिसुवुदु ज्ञान भक्ति विरक्ति संपदके ॥ १७ ॥

अनळनोळु होमिसुव हरिचंदनवे मोदलाददर सुवासनेयु–
प्रत्प्रत्येक तोर्पुदु एल्ल कालदलि,
दनुज मानव दिविजरवरवरनुचितोचितकर्म–
वृजिनार्दननु व्यक्तिय माळ्प त्रिगुणातीत विख्यात ॥ १८ ॥

भक्तवत्सल भाग्य पुरुष विविक्त विश्वाधार सर्वोदृक्त,
दृष्टा दृष्ट दुर्गम दुर्विभाव्य स्वहि,
शक्त शाश्वित सकल वेदैकोक्त, मानद मान्य माधव,
सूक्त सूक्ष्म स्थूल श्री जगन्नाथ विठलनु ॥ १९ ॥

॥ इति श्री आरोहण तारतम्य संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री कर्मविमोचन संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

मूल नारायणनु मायालोलनंतवतारनामक,
व्याळरूप जयारमणनावॆशनेनिसुवनु,
लीलेगैवानंत चॆतन जालदोळु प्रद्युम्न,
ब्रह्मांडालयद वोळहोरगे नेलेसिह शांति अनिरुद्ध ॥ १ ॥

ऎदु कारणरूप इप्पत्तैदु कार्यगळेनिसुववु,
आरैदु रूपदि रमिसुतिप्पनु ई चराचरदि,
भॆद वर्जित मूर्जगज्जन्मादिकारण, मुक्ति दायक,
स्वॊदरदोळिट्टेल्लरनु संतैप सर्वज्ञ ॥ २ ॥

कार्यकारण कर्तृगळोळु स्वभार्यरिंदोडगूडि कपिलाचार्य-
क्रीडिसुतिप्प तन्नोळु ताने स्वॆच्छेयलि,
प्रॆर्यनल्ले रमाब्ज भवरार्य रक्षिसि शिक्षिसुवनु,
स्ववीर्यदिंदलि दिविज दानव ततिय दिनदिनदि ॥ ३ ॥

ई समस्त जगत्तिनोळगाकाशदोळिरुतिप्प,
व्याप्तावॆश अवतारांतरात्मकनागि परमात्म,
नाशरहित जगत्तिनोळगवकाशदनु तानागि-
यॊगीशाशयस्थित तन्नोळेल्लरनिट्टु सलहुवनु ॥ ४ ॥

दारुपाषाणगत पावक बॆरे बॆरिप्पंते,
कारण कार्यगळ वोळगिद्दु कारणकार्य नेंदेनिसि,
तॊरिकोळ्ळदे एल्लरोळु व्यापार माडुव,
यॊग्यतेगळनुसार फलगळुणिसि संतैसुव कृपासांद्र ॥ ५ ॥

ऊर्मिगळ वॊलिप्प कर्म विकर्म जन्य फलाफलंगळ,
निर्मलात्मनु माडि माडिसि उंडुणिसुतिप्प,
निर्मम निरामय निराश्रय धर्मवितु धर्मात्म धर्मग,
दुर्मती जनरोल्लनप्रतिमल्ल श्रीनल्ल ॥ ६ ॥

जलद वडबानळगळंबुधि जलवनुंबुवुवु,
अब्द मळेगरे दिळिगे शांतियनीवुदु–अनलनु ताने भुंजिपुदु,
तिळिवुदीपरियल्लि लक्ष्मीनिलय गुणकृत कर्मज–
फलाफलगळुंडुणिसुवनु सर्वग सर्व जीवरिगे ॥ ७ ॥

पुस्तकगळवलोकिसुत मंत्रस्तुतिगळनलॆनु,
रवियुदयस्तमय परियंत जपगळ माडि फलवॆनु,
हृस्थ परमात्मने समस्तावस्थेगळोळिद्देल्लरोळगे–
निरस्त कामनु माडि माडिपनेंदु तिळियदव ॥ ८ ॥

मद्यभांडव दॆवनदियोळगद्दि तोळेयलु नित्यदलि परिशुद्धवाहुदे एंदिगादरु?
हरि पदाब्जगळ बुद्धिपूर्वक भजिसदवगे–
विरुद्धवेनिसुववेल्ल कर्म समृद्धिगळु,
दुःखवने कोडुतिहवधम जीवरिगे ॥ ९ ॥

भक्तिपूर्वकवागि मुक्तामुक्त नीयामकन,
सर्वोद्रिक्त महिमेगळनवरत कोंडाडु मरेयदले,
सक्तनागदे लोकवार्ते प्रसक्तिगळनीडाडि,
श्रुति स्मृत्युक्त कर्मव माडुतिरु हरियाज्ञेयेंदरिदु ॥ १० ॥

लोपवादरु सरिये कर्मज पापपुण्यगळेरडु निन्ननु लॆपिसवु–
निष्कामकनु नीनागि माडुतिरे,
सौपरणि वरवहन निन्न महापराधगळेणिसदले–
स्वर्गापवर्गव कोट्ट सलहुव सतत सुखसांद्र ॥ ११ ॥

स्वरत सुखमय सुलभ विश्वंभर विशोक सुरासुरार्चित चरणयुग,
चार्वांग शार्ङ्ग शरण्य जितमन्यु–
परम सुंदरतर परात्पर, शरणजन सुरधेनु, शाश्वत करुणि,
कंजदळाक्ष कायेने कंगोळिप शीघ्र ॥ १२ ॥

निर्ममनु नीनागि कर्म विकर्मगळनु निरंतरदि–
सुधर्मनामकगर्पिसुत निष्कलुष नीनागु,
भर्मगर्भन जनक दयदलि दुर्मतिगळनु कोडदे,
तन्नयहर्म्यदोळगिट्टेल्ल कालदि काव कृपेयिंद ॥ १३ ॥

कल्प कल्पदि शरणजन वरकल्प वृक्षनु,
तन्न निजसंकल्पदनुसारदलि कोडुतिप्पनु फलाफलव,
अल्प सुखदापेक्षेयिंदहितल्पनाराधिसदिरेंदिगु,
शिल्पगन कैसिक्क शिलेयंददलि संतैप ॥ १४ ॥

देश भेदाकाशदंददि वासुदेवनु सर्वभूत निवासियेनिसि,
चराचरात्मकनेंदु करेसुवनु,
द्वेष स्नेहोदासीनगळिल्लीशरीरगळोळगे,
अवरोपासनगळंददलि फलवीवनु परब्रह्म ॥ १५ ॥

संचितागामिगळ कर्म विरिंचि जनकन भजिसे केडुववु,
मिंचिनंददि पोळेव पुरुषोत्तम हृदयंबरदि,
वंचिसुव जनरोल्ल, श्रीवत्सांचित सुसद्वक्ष,
ता निष्किंचन प्रिय सुरमुनिगेय शुभकाय ॥ १६ ॥

कालद्रव्य सुकर्म शुद्धिय पेळुवरु अल्परिगे,
अवु निर्मूल गैसुववल्ल पापगळेल्ल कालदलि,
तैलधारीयंतवन पदऔलयिसि तुतिसदले नित्यदि,
बालिशरु कर्मगळे तारकवेंदु पेळुवरु ॥ १७ ॥

कमल संभव शर्व शक्राद्यमररेल्लरु इवन दुरतिक्रम महिमेगळ–
मनवचनदिं प्रांतगाणदले श्रमितरागि–
पदाब्जकल्पद्रुमद नेळलाश्रयिसि–
लक्ष्मीरमण संतैसेंदु प्रार्थिपरति भकुतियिंद ॥ १८ ॥

वारिचरवेनिसुववु दर्दुर, तारकगळेंदरिदु भेकवनेरि–
जलधिय दाटुवेनु येंबुवन तेरदंते,
तारतम्य ज्ञान शून्यरु सूरिगम्यन तिळियलरियदे,
सौर शैवमतानुगर अनुसरिसि केडुतिहरु ॥ १९ ॥

क्षोणिपति सुतनेनिसि कैदुग्गाणिगोड्डुव तेरदि,
सुमनस धेनु मनेयोळगिरलु गोमय बयसुवंददलि,
वेणुगान प्रियन अहिक सुखानुभव बेडदले,
लक्ष्मी प्राणनाथन पाद भकुतिय बेडु कोंडाडु ॥ २० ॥

क्षुधेयगोसुग पोगि कानन बदरि फलगळपेक्षेयिंदलि–
पोदेयोळगे सिग बिद्दु बाय्देरदवन तेरदंते,
विधिपितन पूजिसदे निन्नय उदरगोसुग–
साधुलिंगप्रदरुशकराराधिसुत बळलदिरु भवदोळगे ॥ २१ ॥

ज्ञान ज्ञेय ज्ञातृवेंबभिधानदिं–
बुद्ध्यादिगळधिष्ठानदलि नेलेसिद्दु करेसुत तत्तदाह्वयदि,
भानुमंडलग प्रदर्शक तानेनिसि वशनागुवनु,
शुक शौनकादि मुनींद्र हृदयाकाशगतचंद्र ॥ २२ ॥

उदयव्यापिसि दर्श पौर्णिम अधिकयामवु श्रवण अभिजितु सदनवैदिरे–
माळ्प तेरदंददलि हरिसेवे,
विधिनिषेधगळेनु नोडदे विधिसुतिरु नित्यदलि,
तन्नय सदनदोळगिंबिट्टु सलहुव भक्तवत्सलनु ॥ २३ ॥

नंदिवाहनरात्रि साधने बंद द्वादशि, पैतृक संधिसिह समयदलि,
श्रवणव त्यजिसुवंते सदा,
निंद्यरिंदलि बंद द्रव्यव कंदेरदु नॊडदले,
श्रीमदनंद तीर्थांतर्गतन सर्वत्र भजिसुतिरु ॥ २४ ॥

श्रीमनॊरम मॆरु त्रिककुद्धाम सत्कल्याणगुण निस्सीम-
पावननाम दिविजॊद्धाम रघुराम,
प्रॆमपूर्वक नित्य तन्न महा महिमेगळ तुतिसुवरिगे,
सुधामगोलिदंददलि अखिळार्थगळ कोडुतिप्प ॥ २५ ॥

तंदे ताय्गळ कुरुहनरियद कंद,
दॆशांतरदोळगे तन्नंददलियिप्पवर जननी जनकरनु कंडु,
हिंदे येन्ननु पडेदवरु ईयंददलि यिप्परलनानवरेंदु काणुवेनेनुत-
हुडुकुव तेरदि कॊविदरु ॥ २६ ॥

श्रुतिपुराण समूहदोळु, भारत प्रतिप्रति पदगळोळु,
निर्जितन गुणरूपगळ पुडुकुत परमहरुषदलि,
मतिमतरु प्रतिदिवस सारस्वत समुद्रदि-
शफरियेंददि सतत संचरिसुवरु काणुव लवलविकेयिंद ॥ २७ ॥

मत्स्यकॆतन जनक, हरि श्रीवत्सलांछन, निजशरण जन वत्सल,
वरारॊह वैकुंठालय निवासि,
चित्सुखप्रद सलहेनलु गॊवत्सध्वनिगोदगुव तेरदि,
परमॊत्सहदि बंदोदगुवनु निर्मत्सरर बळिगे ॥ २८ ॥

सूरिगळिगे समीपग, दुराचारिगळिगेंदेंदु दूराद्दूरतर-
दुर्लभनेनिसुवनु दैत्यसंततिगे,
सारि सारिगे नेनेववर संसार वेंब महॊरगके सर्वारियेनिसि,
सदा सुसौख्यवनीव शरणरिगे ॥ २९ ॥

चक्र शंख गदाब्जधर, दुरतिक्रम, दुरावास,
विधि शिव शक्र सूर्याद्यमर पूज्यपदाब्ज, निर्लज्ज,
शुक्रशिष्यर अश्वमेधाप्रक्रियव केडिस्यब्जजांडवतिक्रमिसि-
जाह्नवियपडेद त्रिविक्रमाह्वयनु ॥ ३० ॥

शक्तरेनिसुवरिल्ल हरिव्यतिरिक्त सुरगणदोळगे,
सर्वोद्रिक्तनेनिसुव सर्वरिंदलि सर्वकालदलि,
भक्ति पूर्वकवागि अन्य प्रसक्तिगळ नीडाडि परमासक्तनागिरु,
हरिकथामृत पान विषयदलि ॥ ३१ ॥

प्रणतकामद भक्त चिंतामणि, मणिमयाभरण भूषित,
गुणि गुणत्रय दूरवर्जित, गहन सन्महिम,
एणिस भक्तर दोषगळ, कुंभिणिजेयाण्म, शरण्य,
रामार्पणवेनलु कैकोंड शबरिय फलव परमात्म ॥ ३२ ॥

बल्लेनेंबुवरिल्लवीतन, ओल्लेनेंबुवरिल्ल,
लोकदोळिल्लदिह स्थळविल्लवै, अज्ञात जनरिल्ल,
बेल्लदच्चिन बोंबेयेंददि एल्लरोळगिरुतिप्प,
श्रीभूनल्ल, इवगेणेयिल्ल, अप्रतिमल्ल, जगकेल्ल ॥ ३३ ॥

शब्दगोचर शार्वरीकर अब्दवाहननुज,
यदुवंशाब्धि चंद्रम, निरुपम-सुनिस्सीम-समितसम,
लब्धनागुव तन्नवगे प्रारब्धकर्मगळुणिसि तीव्रदि,
क्षुब्धपावकनंते बिडदिप्पनु दयासांद्र ॥ ३४ ॥

श्रीविरिंचाद्यमर वंदित ई वसुंधरेयोळगे,
देवकि देवि जठरदोळवतरिसिदनु अजनु नररंते,
रेवतीरमणानुजनु स्वपदावलंबिगळनु सलहि-
दैत्यावळिय संहरिसिद जगन्नाथ विठलनु ॥ ३५ ॥

॥ इति श्री कर्मविमोचन संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री भक्तापराधसहिष्णु संधि ॥

॥ श्री सकलदुरित निवारण संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवॆ,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

श्रीलकुमिवल्लभगॆ सम करुणाळुगळ नाकाणॆनॆल्लि,
कुचॆलनवलिगॆ मॆच्चि कोट्टनु सकल संपदव,
कॆळिदाक्षण वस्त्रगळ पांचालिगित्तनु,
दैत्यनुदरव सीळि संतैसिदनु प्रह्लादन कृपासांद्र ॥ १ ॥

दॆवशर्माह्वय कुटुंबकॆ जीवनॊपायवनु काणदॆ,
दॆवदॆवशरण्य रक्षिसु रक्षिसॆनॆ कॆलि,
ता वॊलिदु पालिसिद सौख्य कृपावलॊकनदिंद,
ईतन सॆविसदॆ सौख्यगळ बयसुवरल्प मानवरु ॥ २ ॥

श्रीनिवासन पॊल्व करुणिगळीनळिनजांडदॊळु काणॆ,
प्रवीणरादवररसि नॊळ्पुदु श्रुतिपुराणदॊळु,
द्रॊण भीष्म कृपादिगळु कुरुसॆनॆयॊळगिरॆ,
अवरवगुणगळॆनु नॊडदॆ पालिसिद परमात्म परगतिय ॥ ३ ॥

चंड विक्रम चक्र शंखव तॊंडमान नृपालगित्तनु,
भांडकारक भीमन मृदाभरणगळिगॊलिद,
मंडॆवडदाकाशरायन हॆंडतिय नुडिकॆलि मगळिगॆ गंडनॆनिसिद,
गहन महिम गदाब्जधरपाणि ॥ ४ ॥

गौतमन निजपत्नियनु पुरुहूतनैदिरॆ काय्द,
वृत्रन घातिसिद पापवनु नाल्कु विभाग माडिदनु,
शातकुंभात्मक किरीटव कैतवदि कद्दॊय्द–
इंद्राराति बागिल काय्द भक्तत्वॆन स्वीकरिसि ॥ ५ ॥

नार नंदव्रजद स्त्रीयर जारकर्मके ओलिद,
अज सुकुमारनेनिसिद नंदगोपगे नळिनभव जनक,
वैरवर्जित दैत्यरन संहार माडिद,
विपगमन पेगलेरिदनु गोपालकर वृंदावनदोळंदु ॥ ६ ॥

श्रीकरार्चित पादपल्लव गोकुलद गोल्लतियरोलिसिद,
पाकशासन पूज्य गो गोवत्सगळ काय्दु,
नीकरिसि कुरुपतिय भोजन स्वीकरिसिदनु विदुरनौतन,
बाकुलिकनंददलि तोरिद भक्त वत्सलनु ॥ ७ ॥

पुत्रनेनिसिद गोपिदेविगे, भर्तृवेनिसिद वृजदनारिय रुत्रलालिसि,
पर्वतव नेगदिह कृपासांद्र,
शत्रु तापन यज्ञ पुरुषन पुत्रियर तंदाळ्द,
त्रिजगद्धात्र मंगळगात्र परम पवित्र सुरमित्र ॥ ८ ॥

रुपनामविहीन गर्गारोपित सुनामदलि करेसिद,
व्यापक परिच्छिन्न रुपदि तोर्द लोगरिगे,
द्वापरांत्यदि दैत्यरनु संतापगोळिसुवेनेंदु-
श्वेतद्वीप मंदिरनवतरिसि सलहिदनु तन्नवर ॥ ९ ॥

श्रीविरिंचाद्यमरनुत नानावतारव माडि सलहिद-
देवतेगळनु ऋषिगळनु क्षितिपरनु,
मानवर सेवगळ कैकोंडु फलगळ नीव,
नित्यानंदमय सुग्रीव धृव मोदलाद भक्तरिगित्त पुरुषार्थ ॥ १० ॥

दुष्टदानवहरण सर्वोत्कृष्ट सद्गुण भरित,
भक्ताभीष्टदायक भयविनाशन विगत भयशोक,
नष्टतुष्टिगळिल्ल सृष्ट्याद्यष्टकर्तनिगाव कालदि,
हृष्टनागुव स्मरणे मात्रदि हृद्गुहनिवासि ॥ ११ ॥

हिंदे प्रळयोदकदि तावरे कंद नंजिसि काय्द,
तलेयलि बांदोरेय पोत्तवगोलिदु परियंक पदवित्त,
वंदिसिद वृंदारकर सद्वृंदकुणिसिद सुधेय,
करुणासिंधु कमलाकांत बहु निश्चिंत जयवंत ॥ १२ ॥

सत्यसंकल्पानुसार प्रवर्तिसुव प्रभु,
तनगे ताने भृत्यनेनिसुव भोक्तृ भोग्य पदार्थदोळगिद्दु,
तत्तदाह्वयनागि तर्पक तृप्ति बडिसुव तत्वपतिगळ,
मत्तरादसुरर्गे असमीचीन फलवीव ॥ १३ ॥

बिट्टिगळ नेवदिंदडागलि, पोट्टेगोसुगवादडागलि,
केट्टरोग प्रयुक्त वागलि अणकदिंदोम्मे–
निट्टुसिरिनिं बाय्देरदु हरि विठला सलहेंदेनलु,
कैगोट्टु काव कृपाळु संतत तन्न भकुतरनु ॥ १४ ॥

ई वसुंधरेयोळगे श्रीभू देवियरसन सुगुण कर्मगळु,
आव बगेयिंदादडागलि कीर्तिसिद नरर काव,
कमलदळायताक्ष कृपाव लोकनदिंद–
कपि सुग्रीवगोलिदंददलि वोलिदभिलाषे पूरैप ॥ १५ ॥

चेतनंतर्यामि लक्ष्मीनाथ कर्मगळनुसरिसि–
जनितोथ विष्णोयेंब श्रुति प्रतिपाद्य–
येम्मोडने जातनागुव जन्मरहिताकूतिनंदन,
भक्तरिंदाहूतनागि मनोरथव बेडिसिकोळदे ईव ॥ १६ ॥

नृषतुयेनिसुव मनुजरोळु, सुरऋषभ इंद्रियगळोळु,
तत्तद्विषयगळ भुंजिसुव होताह्वयनु तानागि,
मृषरहित वेददोळु, ऋतसतु पेसरिनिंदलि करेसुव–
जगत्प्रसवित निरंतरदि संतैसुवनु भकुतरनु ॥ १७ ॥

अब्जभवपित जलधराद्रियोळब्ज गोजाद्रिजनेनिसि,
जलदुब्बळी पीयूषदावरे श्रीशशांकदोळु,
कब्बुकदळि लतातृणद्रुम हेब्बुगेय माडुतिह गोजनु,
इब्बगे प्रतीक मणिमृग सृजिप अद्रिजनु ॥ १८ ॥

श्रुतिविनुत सर्वत्रदलि भारति रमणनोळगिद्दु–
ता शुचिषतुयेनिसि जडचेतनरन पवित्र माडुतिह,
अतुळ महिमानंत रूपाच्युतनेनिसि चिद्देहदोळु–
प्राकृत पुरुषनंददलि नाना चेष्टेगळ माळ्प ॥ १९ ॥

अतिथियेनिसुव अन्नमय भारति रमणनोळु,
प्राणमय प्राकृत विषय चिंतनेय माडिसुवनु,
मनोमयनु यतन, विज्ञानमय बरलद जतन माडिसि,
आत्मजाया सुतर संगदि सुखवनीवानंदमयनेनिसि ॥ २० ॥

इनितु रूपात्मनिगे दोशगळेनितु बप्पवु पेळिरै–
ब्राह्मण कुलोत्तमरादवरु निष्कपट बुद्धियलि,
गुणनियामक तत्तदाह्वयनेनिसि कार्यव माळ्पदेवन नेनेद मात्रदि,
दोषराशिगळेल्ल केडुतिहवु ॥ २१ ॥

कुस्थनेनिसुव भूमियोळु, आशस्थनेनिसुव दिग्वलयदोळु,
खस्थनेनिपाकाशदोळु, ओब्बोब्बरोळगिद्दु व्यस्तनेनिसुव,
सर्वरोळगे समस्तनेनिसुव, बळियलिद्दु उपस्थनेनिप,
विशोधन विशुद्धात्म लोकदोळु ॥ २२ ॥

ज्ञानदनु येंदेनिप शास्त्रदि, मानदनु येंदेनिप वसनदि,
दानशील सुबुद्धियोळगे अवदान्यनेनिसुवनु,
वैनतेयवरूथ तत्तत्स्थानदलि तत्तत्स्वभावगळानुसार–
चरित्रे माडुत नित्यनेलेसिप्प ॥ २३ ॥

ग्रामपनोळग्रणियेनिसुवनु, ग्रामिणीयेनिसुवनु जनरोळु,
ग्रामुपग्रामगळोळगे श्रीमान्यनेनिसुतिप्प,
श्रीमनोरम ताने योगक्षेमनामकनागि सलहुव,
ई महिमे मिक्काद देवरिगुंटे लोकदोळु ॥ २४ ॥

विजयसारथियेंदु गरुडध्वजन मूर्तिय-
भक्तिपूर्वक भजिसुतिप्प महात्मरिगे सर्वत्रदलि वोलिदु-
विजयदनु तानागि सलहुव, भुजगभूषण पूज्य चरणांबुज,
विभूतिद, भुवनमोहनरूप निर्लेप ॥ २५ ॥

अनभिमत कर्मप्रवहदोळगनिमिषादि समस्त चेतनगणविहुदु-
तत्फलगळुण्णदे सृष्टिसिद मुन्न,
वनितेयिंदोडगूडि करुणावनधि निर्मिसे,
तम्म तम्मय अनुचितोचित कर्म फलगळ उणुत चरिसुवरु ॥ २६ ॥

झल्लडिय नेळलंते तोर्पुदु एल्ल कालदि भवद सौख्यवु,
एल्लि पोक्करु बिडदु बेंबत्तिहुदु जीवरिगे,
ओल्लेनेंदरे बिडदु, हरि निर्माल्य नैवेद्यवनु भुंजिसि,
बल्लवर कूडाडु भवदुःखगळ नीडाडु ॥ २७ ॥

कुट्टि, कोयिददनट्टु, इट्टु, अदसुट्टु, कोट्टद मुट्टलु,
अघ हिट्टिट्टु माळ्पदु विठलुंडुच्छिष्ट,
सज्जनर बिट्टु तन्नय होट्टेगोसुग थट्टनुणुतिह केट्ट मनुजर कट्टि,
वैदेमपट्टणदोळोत्तट्टलिडुतिहनु ॥ २८ ॥

जागुमाडदे भोगदासेय नीगि, परमनुरागदिंदलि भोगिशयनन-
आगरद हेब्बागिललि निंदु कूगुतलि शिरबागि-
करुणासागरने भवरोग भैषज कैगोडेंदेने,
बेगनोदगुव भागवतररस ॥ २९ ॥

ऎनु करुणवॊ तन्नवरलि दयानिधिगे,
सद्भक्तजनरति हीन कर्मव माडिदरु सरि स्वीकरिसि पॊरेव,
प्राणहिंस लुब्दकगे सुज्ञान भक्तिगळित्तु दशरथसूनु,
वाल्मीकि ऋषिय माडिद परम करुणाळु ॥ ३० ॥

मूढमानव एल्लकालदि बॆडिकॊंबिनितेंदु दैन्यदि,
बॆडदंददि माडु पुरुषार्थगळ स्वप्नदलि,
नीडुवरे निन्नमलगुण कॊंडाडि हिग्गुव भागवतरॊडनाडिसॆन्ननु,
जन्मजन्मगळल्लि दयदिंद ॥ ३१ ॥

चतुरविध पुरुषार्थरूपनु चतुर मूर्त्यात्मक निरलु,
मत्तितर पुरुषार्थगळ बयसुवरॆनु बल्लवरु,
मति विहीनरु अल्प सुख शाश्वतवेंदरिदनुदिनदि,
गणपतियॆ मॊदलादन्य दॆवतेगळने भजिसुवरु ॥ ३२ ॥

ओम्मिगादरु जीवरॊळु वैषम्य द्वेषासूयविल्ल,
सुधर्मनामक संतयिसुवनु सर्वरनु नित्य,
ब्रह्म कल्पांतदलि वॆदागम्य श्री जगन्नाथ विठल-
सुम्मनीवनु त्रिविधरिगे अवरवर निजगतिय ॥ ३३ ॥

॥ इति श्री भक्तापराधसहिष्णु संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री बृहत्तारतम्य संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

हरि सिरि विरंचीर मुख निर्जरर आवेशावतारगळ–
स्मरिसु गुणगळ सर्वकालदि भक्तिपूर्वकदि ॥

मीन कूर्म क्रोड नरहरि माणवक भृगुराम दशरथ सूनु–
यादव बुद्ध कल्की कपिल वैकुंठ–
श्रीनिवास व्यास ऋषभ हयानना नारायणी हंसानिरुद्ध–
त्रिविक्रमः श्रीधर हृषीकेश ॥ १ ॥

हरियु नारायणनु कृष्णा सुरकुलांतक, सूर्य समप्रभ,
करेसुवनु निर्दुष्ट सुख परिपूर्ण तानेंदु,
सरुव देवोत्तमनु सर्वग परम पुरुष पुरातन,
जरामरण वर्जित वासुदेवाद्यमित रूपात्म ॥ २ ॥

ई नळिन भव जननि लक्ष्मी,
ज़ान बल भक्त्यादि गुण संपूर्णळेनिपळु सर्वकालदि हरिकृपाबलदि,
हीनळेनिपळनंतगुणदि पुराण पुरुषगे,
प्रकृतिगिन्नु समानरेनिसुवरिल्ल मुक्तामुक्त सुररोळगे ॥ ३ ॥

गुणगळत्रयमानि श्रीकुंभिणि महा दुर्गांभ्रणी–
रुग्मिणियु सत्या शांति कृति जय माय महलकुमि–
जनकजाकमलालया दक्षिणेसुपद्मात्रिलोकेश्वरि,
अणु महत्तिनोळिद्दु उपमारहितळेनिसुवळु ॥ ४ ॥

घोटकास्यन मडदिगिंतलि हाटकोदर पवनरीर्वरु–
कोटि गुणदिंदधमरेनिपरु आवकालदलि,
खेटपति शेषामरेंद्रर पाटिमाडदे,
श्रीशन कृपा नोटदिंदलि सर्वरोळु व्यापार माडुवरु ॥ ५ ॥

पुरुष ब्रह्म विरिंचि, माहान्मरुत मुख्य प्राण–
धृति स्मृति गुरुवर महाध्यात बल विज्ञात विख्यात–
गरळभुग्भवरोग भेषज स्वरवरण वेदस्थ जीवेश्वर–
विभीषण विश्वचेष्टक वीतभय भीम ॥ ६ ॥

अनिलस्थिति वैराग्यनिधि रोचन विमुक्तिगनंद दशमति–
अनिमिषेशानिद्र शुचि सत्वात्मक शरीर,
अणुमहद्रूपात्मकामृत हनुमदाद्यवतार–
पद्मासन पदवि संप्राप्त परिसर आखणाश्मसम ॥ ७ ॥

मातरिश्व ब्रह्मरु जगन्मातेगधमाधीनरेनिपरु,
श्रीतरुणिवल्लभनु ईर्वरोळाव कालदलि–
नीत भक्ति ज्ञान बलरूपातिशयदिंदिह्रु,
चेतनाचेतनगळोळु व्याप्तरेनिपरु तत्तदाह्वयदि ॥ ८ ॥

सरस्वती वेदात्मिका भुजि नरहरी गुरुभक्ति ब्राह्मी–
परमसुख बल पूर्णे श्रद्धा प्रीति गायत्री,
गरुड शेषर जननि श्रीसंकरुषणन जय तनुजे,
वाणी करण नियामके चतुर्दश भुवन सन्मान्ये ॥ ९ ॥

काळि काशिजे विप्रजे पांचालि शिवकन्येंद्र सेना– ।
कालमानी चंद्र द्युसभानाम भारतिगे,
घाळि ब्रह्मर युवतियरु ऐळेळु ऐवत्तोंदु गुणदिं कीळरेनिपरु,
तम्म पतिगळिंदलावाग ॥ १० ॥

हरि समीरावेश नर, संकरुषणावेशयुत लक्ष्मण,
परम पुरुषन शुक्ल केशावेश बलराम,
हर सदाशिव–तप–अहंकृतु–मरुतयुक्त शुक–ऊर्ध्व–अपटु–
तत्पुरुष–जैगीषौर्व–द्रौणी–व्याध–दूर्वास ॥ ११ ॥

गरुडशेष शशांकदळ शेखररु तम्मोळु समरु,
भारति सरसिजासन पत्निगधमरु नूरु गुणदिंद,
हरि मडदि जांबवतियोळु श्रीतरुणियावेश विहुदेंदिगु,
कोरतेयेनिपरु गरुडशेषरिगैवरैदुगुण ॥ १२ ॥

नीलभद्रा मित्रविंदा मेलेनिप काळिंदि लक्षण–
बालेयरिगिंदधम वारुणि सौपरणि गिरिजा,
श्रीलकुमियुत रेवती श्रीमूलरूपदि पेयळेनिपळु,
शैलजाद्यरु दशगुणाधम तम्म पतिगळिगे ॥ १३ ॥

नरहरीरावेश संयुत नर पुरंदर गाधि–
कुश मंदरद्युम्न विकुक्षि वाली इंद्रनवतार,
भरत ब्रह्माविष्ट सांब सुदरुशन प्रद्युम्न
सनकाद्यरोळगिप्प सनत्कुमारनु षण्मुखनु काम ॥ १४ ॥

ईरयिदु गुण कडिमे पार्वति वारुणीयरिगिंद्र काम,
शरीरमानि प्राण दश गुण अवर शक्रनिगे,
मारजारति दक्ष गुरु वृत्रारिजाया शचि स्वयंभुवरारु जन सम,
प्राणगवररु हत्तु गुणदिंद ॥ १५ ॥

कामपुत्रनिरुद्ध सीतारामनानुज शत्रुहन,
बलरामनानुज पौत्रननिरुद्धनोळगनिरुद्ध,
काम भार्यारुग्मवति सन्नाम लक्षणळेनिसुवळु,
पौलोमि चित्रांगदेयु तारा एरडु पेसरुगळु ॥ १६ ॥

तारनामक त्रैतेयोळु सीतारमणनाराधिसिदनु,
समीरयुक्तोद्धवनु कृष्णगे प्रीय नेनिसिदनु,
वारिजासन युक्त द्रोणनु,
मूरु इळेयोळु बृहस्पतिगवतारवेंबरु महा भारततात्पर्यदोळगे ॥ १७ ॥

मनु मुखाद्यरिगिंत प्रवहा गुणदि पंचक नीचनेनिसुव,
इन शशांकरु धर्ममानवि एरडु गुणदिंद कनियरेनिपरु प्रवहगिंतलि,
दिनप शशि यमधर्म रूपगळु,
अनुदिनदि चिंतिपुदु संतरु सर्व कालदलि ॥ १८ ॥

मरुतनावेशयुत धर्मज करडि विदुरनु सत्यजितु–
ईरेरडु धर्मन रूप,
ब्रह्माविष्ट सुग्रीव–हरिय रूपाविष्ट कर्णनु–तरणिगेरडवतार,
चंद्रम सुरपनावेशयुतनंगदनेनिसिकोळुतिप्प ॥ १९ ॥

तरणिगिंतलि पाद पादरे वरुण नीचनु–
महभिषकु दर्दुर सुशोषणनु शंतनू नाल्वरु वरुण रूप,
सुरमुनी नारदनु किंचित्कोरते वरुणगे,
अग्नि भृगु अजगोरळ पत्नि प्रसूति मूवरु नारदनिगधम ॥ २० ॥

नील दृष्टद्युम्न लव ईलेलिहानन रूपगळु,
भृगु कालिलोद्ददरिंद हरिय व्याधनेनिसिदनु,
ऐळु ऋषिगळिगुत्तमरु मुनि मौळि नारदगधम मूवरु,
घाळियुत प्रह्लाद बाह्लिकरायनेनिसिदनु ॥ २१ ॥

जनप कर्मजरोळगे नारद मुनि अनुग्रह बलदि–
प्रह्लादनल भृगु दाक्षायणियरिगे समनेनिसिकोंब,
मनुविवस्वान् गाधिजोर्वरु अनळगिंतलि किंचिताधम–
एणेयेनिसुवरु सप्तऋषिगळिगेल्ल कालदलि ॥ २२ ॥

कमल संभव भवरेनिप संयमि मरीची अत्रि अंगिरसुमति–
पुलहाकृतु वसिष्ठ पुलस्त्यमुनि स्वाहा रमणगधमरु,
मित्रनामक द्युमणि राहुयुक्त भीष्मक यमळरूपनु–
तारनामकनेनिसि त्रैतेयोळु ॥ २३ ॥

निरऋतिगेरडवतार दुर्मुख हरयुत घटोत्कचनु,
प्रावहि गुरुमडदि तारासमरु पर्जन्यगुत्तमरु,
करिगोरळ संयुक्त भगदत्तरसु–कत्थन धनपरूपगळेरडु,
विघ्नप चारुदेष्णनु, अश्विनिगळु सम ॥ २४ ॥

द्रोण धृव दोषार्क अग्नि प्राणद्युविभावसुगळेंटु,
कृशानु श्रेष्ठ द्युनाम वसु भीष्मार्य ब्रह्मयुत,
द्रोणनामक नंदगोप, प्रधान अग्नियनुळिदु ऐळु समानरेनिपरु–
तम्मोळगे ज्ञानादिगुणदिंद ॥ २५ ॥

भीमरैवत ओज जैकपदामहन् बहु रूपकनु–
भव वाम उग्र वृषाकपी अहिर्बुध्नियेनिसुतिह–
ई महात्मर मध्यदल्लि उमामनोहर उत्तमनु,
दश नामकरु समरेनिसिकोंबरु तम्मोळेंदेंदु ॥ २६ ॥

भूर्यजैकप पदाह्व अहिर्बुध्नीरयिदु रुद्रगण संयुत,
भूरिश्रवनेंदेनिप शल विरुपाक्ष नामकनु,
सूरि कृप विष्कंभ, सहदेवा रणाग्रणि,
सोमदत्तनु ता रचिसिद द्विरूप धरेयोळु पत्रतापकनु ॥ २७ ॥

देव शक्रोरुक्रमनु मित्रावरुण पर्जन्य भग
पूषा विवस्वान् सवितृधाता आर्यम त्वष्टृ–
देवकी सुतनल्लि सवितृ विभावसूसुत भानुयेनिसुव,
ज्यावनपयुत वीरसेननु त्वष्टृनामकनु ॥ २८ ॥

एरडधिक दश सूर्यरोळु मूरेरडु जनरुत्तम,
विवस्वान् वरुण शक्र उरुक्रमनु पर्जन्य मित्राख्य,
मरुतनावेशयुत पांडूवर परावहनेंदेनिप,
केसरि मृगप संपाति श्वेतत्रयरु मरुदंश ॥ २९ ॥

प्रतिभवातनु चेकितनु, विपृथुवेनिसुवनु सौम्य मारुत,
वितत सर्वोत्तुंग गजनामकरु प्राणांश,
द्वितिय पान गवाक्ष, गवय तृतिय व्यान,
उदान वृषपर्व, अतुळ शर्वत्रात गंध सुमादनरुसमान ॥ ३० ॥

ऐवरोळगी कुंति भोजनु आविनामक,
नाग कृकलनु देवदत्त धनंजयरु अवतार वर्जितरु,
आवहोद्वह विवह संवह प्रावहीपति मरुत प्रवहनिगावकालकु–
किंचितधमरु मरुद्गणरेल्ल ॥ ३१ ॥

प्राण पान व्यानो दान समानरैवरनुळिदु मरुतरु ऊनरेनिपरु,
हत्तु विश्वेदेवरिवरिंद,
सूनुगळु येनिसुवरु ऐवरमानिनी द्रौपतिगे,
केलवरु क्षोणियोळु कैकेयरेनिपरु एल्ल कालदलि ॥ ३२ ॥

प्रतिविंद्य श्रुतसोम श्रुत कीरुति शतानिक श्रुत कर्म,
द्रौपति कुवररिवरोळगे अभिताम्र प्रमुख चित्र–
रथनु गोप किशोर बलरेंबतुलरैगंधर्वरिंदलि युतरु,
धर्म वृकोदरादिजरेंदु करेसुवरु ॥ ३३ ॥

विविद मैंदरु नकुल सहदेव विभु त्रिशिखाश्विनिगळिवरोळु–
दिविपनावेशविहुदेंदिगु,
द्यावा पृथ्वि ऋभु पवनसुत विष्वक्सेननु उमाकुवर विघ्नप धनप–
मोदलादवरु मित्रगे किंचिताधमरेनिसिकोळुतिहरु ॥ ३४ ॥

पावकाग्नि कुमारनेनिसुव चावन उचिथ्यमुनि,
चाक्षुष रैवत स्वावरोचिषोत्तम ब्रह्म रुद्रेंद्र–
देव धर्मनु दक्ष नामक सावरणि शशिबिंदु पृथु–
प्रीयव्रतनु मांधात गयनु ककुस्थ दौष्यंति ॥ ३५ ॥

भरत ऋषभज हरिणिज द्विज भरत मोदलादखिळरायरोळिरुतिहुदु–
श्रीविष्णु प्राणावेश प्रतिदिनदि,
वरदिवस्पति शंभुरद्भुत करेसुवनु बलि विधृत धृत–
शुचि नेरेखलूकृतधाम मोदलादष्टगंधर्व ॥ ३६ ॥

अरसुगळु कर्मजरु वैश्वानरगधम शतगुणदि,
विघ्नेश्वरगे किंचिद्गुण कडिमे बलि मुख्य पावकरु,
शरभ पर्जन्याख्यमेघप, तरणि भार्या संज्ञे,
शार्वरिकरन पत्नी रोहिणी, शामला, देवकियु ॥ ३७ ॥

अरसियेनिपळु धर्मराजगे, वरुण भार्योषादिषट्करु–
कोरते येनिपरु पावकाद्यरिगेरडु गुणदिंद,
एरडु मूर्जनरिंदधम स्वह करेसुवळु,
उषादेवि वैश्वानरन मडदिगे दशगुणावरळश्विनी भार्या ॥ ३८ ॥

सुदरुशन शक्रादि सुरयुत बुधनु तानभिमन्युवेनिसुव,
बुधनिगिंताश्विनी भार्य शल्यमागधर उदरज,
उषादेविगिंतलि अधमनेनिप शनैश्चरनु,
शनिगधम पुष्कर कर्मपनु येनिसुवनु बुधरिंद ॥ ३९ ॥

उद्वहा मरुतान्वित विराध द्वितिय संजयनु तुंबुर,
विद्वदुत्तम जन्मेजय त्वष्टृयुत चित्ररथ,
सद्विनुत दमघोषक कबंधद्वयरु गंधर्वदनु,
मनुपद्मसंभवयुताक्रूर किशोरनेनिसुवनु ॥ ४० ॥

वायुयुत धृतराष्ट्र दिविजर गायकनु धृतराष्ट्र,
नक्रनु राय द्रुपदनु वह विशिष्टा हूहु गंधर्व,
नायक विराड्विवह हाहाज्ञेय,
विद्याधरने अजगर ता येनिसुवनु, उग्रसेनने उग्रसेनाख्य ॥४१ ॥

बिसज संभव युक्त विश्वावसु युधामन्यु,
उत्त मौजस बिसज मित्रार्यमयुत परावसुयेनिसुतिप्प,
असम मित्रान्वितनु सत्यजितु वसुधियोळु चित्रसेन,
अमृतांधसरु गायकरेंदु करेसुवराव कालदलि ॥ ४२ ॥

उळिद गंधर्वरुगळेल्लरु बलि मोदलु गोपालरेनिपरु,
इळेयोळगे सैरेंधि पिंगळे अप्सर स्त्रीयळु,
तिलोत्तमेयु पूर्वदलि नकुलन ललने पार्वति येनिसुवळु,
गोकुलद गोपियरेल्ल शबरी मुख्य अप्सररु ॥ ४३ ॥

कृष्णवर्त्मन सुतरोळगे–शत द्व्येष्ट साविर स्त्रीयरल्लि–
प्रविष्टळागि रमांब तत्तन्नाम रूपदलि कृष्णमहिषियरोळगे इप्पळु,
त्वष्टृ पुत्रि कशेरु इवरोळु श्रेष्ठळेनिपळु,
उळिद ऋषिगण गोपिका समरु ॥ ४४ ॥

सूनुगळु येनिसुवरु देव कृशानुविगे ऋथु सिंधु शुचि पवमान कौशिकरैदु,
तुंबुरु ऊर्वशीशतरु,
मेनकी ऋषि रायरुगळाजानु सुररिगे समरेनिपरु,
सुराणकरनाख्यात दिविजर जनकरेनिसुवरु ॥ ४५ ॥

पावकरिगिंतधमरेनिसुव देव कुलजानाख्य सुरगण कोविदरु,
नाना सुविद्यदि सोत्तमर नित्य सेविपरु सद्भक्ति पूर्वक,
स्वावररिगुपदेशिसुवरु,
निरावलंबन विमल गुणगळ प्रति दिवसदल्लि ॥ ४६ ॥

सुररोळगे वर्णाश्रमगळेंबेरडु धर्मगळिल्ल–
तम्मोळु निरुपमरु येंदेनिसिकोंबरु तारतम्यदलि,
गुरु सुशिष्यत्ववी ऋषिगळोळगिरुतिहुदु,
आजान सुररिगे चिर पितृ शताधमरेनिसुवरु ऐळु जनरुळिदु ॥ ४७ ॥

चिर पितृगळिंदधम गंधर्वरुगळेनिपरु,
दॆवनामक कोरतेयेनिसुव, चक्रवर्तिगळिंद गंधर्व,
नररोळुत्तमरेनिसुवरु, हन्नेरडु एंभत्तेंटु गुणदलि हिरियरेनिपरु,
क्रमदि दॆवावॆश बलदिंद ॥ ४८ ॥

दॆवतेगळिं प्रॆष्यरेनिपरु दॆव गंधर्वरुगळु,
इवरिंदाव कालकु शिक्षितरु नरनाम गंधर्व,
कॆवलति सद्भक्ति पूर्वक यावदिंद्रियगळ नियामक–
श्रीवरने एंदरिदु भजिपरु मानुषॊत्तमरु ॥ ४९ ॥

बादरायण भागवत मोदलाद शास्त्रगळल्लि–
बहु विध द्वादश दश सुपंचविंशति शत सहस्रयुत भॆदगळ पॊळिदनु,
सॊत्तम आदितॆयावॆश बलदि, विरॊध चिंतिसबारदु,
इदु साधुजन सम्मतवु ॥ ५० ॥

इवरु मुक्तियॊग्यरेंबरु, श्रवण मननादिगळ परमॊत्सवदि माडुत–
कॆळिनलियुत धर्मकामार्थ त्रिविध फलवापॆक्षिसदे,
श्री पवनमुख दॆवांतरात्मक प्रवर तम–
शिष्टेष्टदायकनेंदु स्मरिसुवरु ॥ ५१ ॥

नित्यसंसारिगळु गुण दॊषात्मकरु,
ब्रह्मादि जीवर भृत्यरेंबरु राजनॊपादियलि हरियेंब,
कृत्तिवासनु ब्रह्म श्रीविष्णुत्रयरु सम,
दुःख सुख उत्पत्ति मृति भव पॊळुवरु अवतारगळिगे सदा ॥ ५२ ॥

तारतम्यज्ञानविल्लदे सूरिगळ निंदिसुत-
नित्यदि तॊरुतिप्परु सुजनरॊपादियलि नररॊळगे,
क्रूर कर्मासक्तरागि शरीर पॊषणेगॊसुगदि संचार माळ्परु-
अन्यदॆवते नीचरालयदि ॥ ५३ ॥

दशप्रमति मताब्धियॊळु सुमनसरेनिप रत्नगळनवलॊकिसि तेगेदु-
प्राकृत सुभाषा तंतुगळ रचिसि-
असुपति श्रीरमणनिगे समर्पिसिदे,
सज्जनरिदनु संतॊषिसलि, दॊषगळेणिसदले कारुण्यदलि नित्य ॥ ५४ ॥

निरुपमनु श्रीविष्णु लक्ष्मी सरसिजॊद्भव वायु वाणी-
गरुड षण्महिषियरु पार्वति शक्र स्मर प्राण-
गुरु बृहस्पति प्रवह सूर्यनु वरुण नारद वह्नि-
सप्तांगिररु मित्र गणॆश पृथु गंगा स्वाहा बुधनु ॥ ५५ ॥

तरणि तनय शनैश्चरनु पुष्करनजानज चिरपितरु-
गंधर्वरीर्वरु दॆव मानुष चक्रवर्तिगळु-
नररॊळुत्तम मध्यमाधम करेसुवरु मध्यॊत्तमरु-
ईरॆडु जन कैवल्य मार्गस्थरिगे आनमिपे ॥ ५६ ॥

सार भक्ति ज्ञानदिं बृहत्तारतम्यवनरितु पठिसुव सूरिगळिगे,
अनुदिनदि पुरुषार्थगळ पूरैसि-
कारुणिक मरुतांतरात्मक मारमण जगन्नाथ विठल-
तॊरिकॊंबनु हृत्कमलदॊळु यॊग्यतेयनरितु ॥ ५७ ॥

॥ इति श्री बृहत्तारतम्य संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री कल्पसाधन संधि ॥
॥ श्री अपरोक्ष तारतम्य संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

ऐकविंशति मत प्रवर्तक काकु माय्गळ कुहक युक्ति निराकरिसि–
सर्वोत्तमनु हरियेंदु स्थापिसिद–
श्रीकळत्रन सदन, द्विजप पिनाकिसन्नुत महिम,
परम कृपाकटाक्षदि नोडु मध्वाचार्य गुरुवर्य ॥ १ ॥

वेध मोदलागिप्पमल मोक्षाधिकारिगळाद जीवर,
साधनगळपरोक्ष नंतर लिंग भंगवनु,
साधुगळु चित्तयिपदेन्नपराधगळ नोडदले,
चक्र गदाधरनु पेळिसिद तेरदंददलि पेळुवेनु ॥ २ ॥

तृणकृमि द्विज पशु नरोत्तम जनप नरगंधर्वगणरु,
इवरेनिपरंशविहीन कर्म सुयोगिगळु येंदु,
तनुप्रतीकदि बिंबन उपासनव गैयुत,
इंद्रियज कर्मा नवरत हरिगर्पिसुत निर्ममरु येनिसुवरु ॥ ३ ॥

ऐळु विध जीव गण बहळ, सुराळि संख्या नेमवुळ्ळदु,
ताळि नरदेहवनु ब्राह्मणर कुलदोळुद्भविसि–
स्थूलकर्मव तोरेदु गुरुगळु पेळिदर्थव तिळिदु,
तत्तत्काल धर्म समर्पिसुववरु कर्मयोगिगळु ॥ ४ ॥

हीन कर्मगळिंद बहुविध योनियलि संचरिसि–
प्रांतके मानुषत्ववनैदि सर्वोत्तमनु हरियेंब–
ज्ञान भक्तिगळिंद वेदोक्तानुसार सहस्र जन्म–
अन्यून कर्मव माडि हरिगर्पिसिद नंतरदि ॥ ५ ॥

हत्तु जन्मगळल्लि हरि सर्वोत्तमनु, सुरासुर गणार्चित,
चित्रकर्म, विशोकनंतानंत रूपात्म,
सत्यसत्संकल्प, जगदुत्पत्ति स्थितिलयकारण,
जरा मृत्युवर्जितनेंदुपासने गैद तरुवाय ॥ ६ ॥

मूरु जन्मगळल्लि देहागार पशुधन पत्नि मित्र कुमार–
माता पितृगळल्लिह स्नेहगिंतधिक मारमणनलि बिडदे माडुव सूरिगळु,
ई उक्त जन्मव मीरि,
परमात्मन स्वदेहदि नोडि सुखिसुवरु ॥ ७ ॥

देवगायकजान चिरपितृ देवरेल्लरु ज्ञानयोगिगळु,
आव कालकु पुष्कर शनैश्चर उषा स्वाहादेवि बुध सनकादिगळु–
मेघावळि पर्जन्यसांशरु,
ई उभयगणदोळगिवरु विज्ञान योगिगळु ॥ ८ ॥

भरतखंडदि नूरु जन्मव धरिसि निष्कामक सुकर्माचरिसिदानंतरदि–
दश सहस्र जन्मदलि उरुतर ज्ञानवनु,
मूरैदेरडु दश देहदलि भक्तिय–
निरवधिकनलि माडि कांबरु बिंबरूपवनु ॥ ९ ॥

साधनात्पूर्वदलि इवरिगनादिकालपरोक्षविल्ल,
निषेध कर्मगळिल्ल, नरकप्राप्ति मोदलिल्ल,
वेद शास्त्रगळल्लि इप्प विरोध वाक्यव परिहरिसि,
मधुसूदनने सर्वोत्तमोत्तमनेंदु तुतिसुवरु ॥ १० ॥

सत्यलोकाधिपनविडिदु शतस्थ देवगणांत एल्लरु–
भक्तियोगिगळेंदु करेसुवराव कालदलि,
भक्तियोग्यर मध्यदलि सद्भक्ति विज्ञानादि गुणदिंद–
उत्तमोत्तम ब्रह्म वायू वाणि वाग्देवि ॥ ११ ॥

ऋजुगणके भक्त्यादिगुण साहजवेनिसुववु, क्रमदि वृद्धि,
अब्जज पदवि पर्यंत बिंबोपासनवु अधिक,
वृजिन वर्जित एल्लरोळु त्रिगुणज विकारगळिल्लवेंदिगु,
द्विज फणिप मृड शक्र मोदलादवरोळिरुतिहवु ॥ १२ ॥

साधनात्पूर्वदलि ई ऋज्वादि तात्विकरेनिप सुरगण,
अनादि सामान्यापरोक्षिगळेंदु करेसुवरु,
साधनोत्तर स्वस्वबिंब उपाधिरहितादित्यनंददि–
सादरदि नोडुवरु अधिकारानुसारदलि ॥ १३ ॥

छिन्न भक्तरु एनिसुतिहरु सुपर्ण शेषाद्यमररेल्ल,
अच्छिन्न भक्तरु नाल्वरेनिपरु भारती प्राण सोन्नोडल वाग्देवियरु,
पणेगण्ण मोदलादवरोळगे–
तत्तन्नियामकरागि व्यापारवनु माडुवरु ॥ १४ ॥

हीनसत्कर्मगळेरडु पवमानदेवनु माळ्पनु,
इदकनुमानविल्लेंदेनुत दृढ भक्तियलि भजिपर्गे–
प्राणपति संप्रीतनागि कुयोनिगळ कोड,
एल्ल कर्मगळाने माडुवेनेंब मनुजर नरककैदिसुव ॥ १५ ॥

देवऋषि पितृ नृप नररेनिसुव ऐवरोळु नेलेसिद्दु,
अवर स्वभाव कर्मव माडि माडिप ओंदु रूपदलि,
भावि ब्रह्मनु कूर्म रूपदि–
ई विरिंचांडवनु बेन्निलि ता वहिसि लोकगळ पोरेवनु द्वितिय रूपदलि ॥ १६ ॥

गुप्तनागिद्दनिल देव द्विसप्तलोकद जीवरोळगे,
त्रिसप्तसाविरदारु नूरु श्वास जपगळनु,
सुप्ति स्वप्नदि जाग्रतिगळलि आप्तनंददि माडि माडिसि,
क्लुप्त भोगगळीव प्रांतके तृतीय रूपदलि ॥ १७ ॥

शुद्ध सत्वात्मक शरीरदोळिद्द कालकु लिंगदेहवु बद्धवागदु,
दग्ध पटदोपादि इरुतिहुदु,
सिद्ध साधन सर्वरोळगनवद्य नेनिसुव,
गरुड शेष कपर्दि मोदलादमररेल्लरु दासरेनिसुवरु ॥ १८ ॥

गणदोळगे तानिद्दु ऋजुवेंदेनिसिकोंबनु,
कल्पशत साधनव गैदानंतरदि ता कल्कियेनिसुवनु,
द्विनवशीतिय प्रांतभागदि अनिल हनुमद्भीमरूपदि-
दनुजरेल्लर सदेदु मध्वाचार्यरेनिसिदनु ॥ १९ ॥

विश्वव्यापक हरिगे ता सादृश्य रूपव धरिसि,
ब्रह्म सरस्वती भारतिगळिंदोडगूडि पवमान,
शाश्वत सुभक्तियलि सुज्ञान स्वरूपन रूप गुणगळ,
अनश्वरवु एंदेनुत पोगळुव श्रुतिगळोळगिद्दु ॥ २० ॥

खेट कुक्कुट जलटवेंब त्रिकोटि रूपव धरिसि,
सतत निशाटरनु संहरिसि सलहुव सर्व सज्जनर,
कैटभारिय पुरद प्रथम कवाटवेनिसुव,
गरुड शेष ललाटलोचन मुख्य सुररिगे आवकालदलि ॥ २१ ॥

ई ऋजुगळोळगोब्ब साधन नूरु कल्पदि माडि करेसुव,
चारुतर मंगळ सुनामदि कल्प कल्पदलि,
सूरिगळु संस्तुतिसि वंदिसे घोरदुरितगळळिदु पोपुवु,
मारमण संप्रीतनागुव सर्व कालदलि ॥ २२ ॥

पाहि कल्कि-सुतेज-दासने, पाहि धर्म-अधर्म खंडने,
पाहि वर्चस्वी-खषण, नमो साधु-महीपतिये,
पाहि सद्धर्मज्ञ-धर्मज, पाहि संपूर्ण-शुचि-वैकृत,
पाहि अंजन-सर्षपने-खर्पटः-श्रद्धाह्व ॥ २३ ॥

पाहि संध्यात–विज्ञानने, पाहि मह विज्ञान–कीर्तन,
पाहि संकीर्णाख्य–कत्थन–महाबुद्धि–जया,
पाहि माहत्तर–सुवीर्यने, पाहि मां मेधावि, जय अजय,
पाहि मां रंतिम्न–मनु, मां पाहि मां पाहि ॥ २४ ॥

पाहि मोद–प्रमोद–संतस, पाहि आनंद–संतुष्टने,
पाहि मां चार्व अंग–चारु सुबाहु–चारु पद,
पाहि पाहि सुलोचनने, मां पाहि सारस्वत–सुवीरने,
पाहि प्राज्ञ–कपि– अलंपट, पाहि सर्वज्ञ ॥ २५ ॥

पाहि मां सर्वजिन्–मित्रने, पाहि पाप विनाशकने,
मां पाहि धर्मविनेत–शारद ओज–सुतपस्वी,
पाहि मां तेजस्वि, नमो मां पाहि दान–सुशील,
नमो मां पाहि यज्ञ–सुकर्त–यज्वी–याग वर्तकने ॥ २६ ॥

पाहि प्राण–त्राण–अमऋषि, पाहि मां उपदेष्ट–तारक,
पाहि काल–क्रीडन–सुकर्ता–सुकालज्ञ,
पाहि काल सुसूचकने, मां पाहि कलि संहर्त–कलि,
मां पाहि कालि–शामरेत–सदारत–सुबलने ॥ २७ ॥

पाहि पाहि सहो–सदाकपि, पाहि गम्य–ज्ञान–दशकुल ।
पाहि मां श्रोतव्य नमो, संकीर्तितव्य नमो,
पाहि मां मंतव्य–कव्यने, पाहि द्रष्टव्यने–सरव्यने,
पाहि गंतव्य, नमो ऋव्यने, पाहि स्मर्तव्य ॥ २८ ॥

पाहि सेव्य–सुभव्य नमो, मां पाहि स्वर्गव्य, नमो भाव्यने,
पाहि मां ज्ञातव्य नमो, वक्तव्य–गव्य नमो,
पाहि मां लातव्य–वायुवे, पाहि ब्रह्म ब्राह्मण प्रिय,
पाहि पाहि सरस्वती–पते जगद्–गुरुवर्य ॥ २९ ॥

वामन पुराणदलि पेळिद ई महात्मर परम मंगळ नामगळ,
संप्रीति पूर्वक नित्य स्मरिसुववरा–
श्रीमनोरम अवरु बेडिद कामितार्थगळित्तु,
तन्न त्रिधामदोळगनुदिनदलिट्टानंद बडिसुवनु ॥ ३० ॥

ई समीरगे नूरु जन्म महा सुख प्रारब्ध भोग,
प्रयासविल्लदे ऐदिदनु लोकाधिपत्यवनु,
भूसुरन ओप्पिडि अवलिगे विशेष सौख्यवनित्तदातन दासवर्यनु,
लोकपतियेनिसुवदु अच्चरवे ॥ ३१ ॥

द्विशत कल्पगळल्लि बिडदी पेसरिनिंदलि करेसिदनु,
तन्नोशग अमररोळिद्दु माडुवनवर साधनव,
असदुपासने गैव कल्याद्यसुर परसंहरिसि,
ता पोंबसिर पद वैदिदनु गुरु पवमान सतियोडने ॥ ३२ ॥

अनिमिषर नामदलि करेसुव अनिलदेवनु–
ओंदु कल्पके वनज संभवनेनिसि एंभत्तेळुवरे वरुष,
गुणत्रय वर्जितन मंगळ गुणक्रिय सुरूपंगळुपासनवु–
अव्यक्त्यादि पृथ्व्यंतरदि इरुतिहुदु ॥ ३३ ॥

महित ऋजुगणकोंदे परमोत्सह विवर्जितवेंब दोषवु विहितवे सरि,
इदनु पेळिदरे मुक्त ब्रह्मरिगे बहुदुसाम्यवु,
ज़ान भकुतियु द्रुहिण पद परियंत वृद्धियु,
बहिरुपासने उंटनंतर बिंबदर्शनवु ॥ ३४ ॥

ज़ानरहित भयत्व पेळव पुराण दैत्यर मोहकवु,
चतुराननगे कोडुवदे मोहा अज़ान भयशोक,
भानुमंडल चलिसिदंददि काणुवुदु दृग्दोषदिंदलि,
श्रीनिवासन प्रीतिगोसुग तोर्दनल्लदले ॥ ३५ ॥

कमलसंभव सर्वरोळगुत्तमनेनिसुवनु एल्ल कालदि-
विमलभक्ति ज्ञान वैराग्यादि गुणदिंद,।
समभ्यधिक विवर्जितन गुण, रमेय मुखदिंदरितु नित्यदि,
द्युमणि कोटिगळंते कांबनु बिंबरूपवनु ॥ ३६ ॥

ज्ञान भक्त्याद्यखिळ गुण चतुराननोळगिप्पंते-
मुख्य प्राणनलि चिंतिपुदु यत्किंचित्कोरतेयागि,
न्यून ऋजुगण जीवरल्लि क्रमेण वृध्दि ज्ञानभक्ति,
समान भारति वाणिगळलि पद प्रयुक्तधिक ॥ ३७ ॥

सौरि सूर्यन तेरदि ब्रह्म समीर गायत्री गिरिगळोळु-
तोरुवुदु अस्पष्टरूपदि मुक्ति परियंत,
वारिजासन वायु वाणी भारतिगळिगे महा प्रळयदि-
बारदज्ञानादि दोषवु हरिकृपाबलदि ॥ ३८ ॥

नूरु वरुषानंतरदलि सरोरुहासन तन्न कल्पदलारु मुक्तिय नैदुवरो,
अवरवर करेदोय्दु शौरि पुरुदोळगिप्प नदियलि-
कारुणिक सुस्नान निजपरिवार सहितदि माडि,
हरि उदर प्रवेशिसुव ॥ ३९ ॥

वासुदेवन उदरदलि प्रवेषगैदानंतरदि-
निर्दोष मुक्तरु उदरदिं पोरमट्ट हरुषदलि,
मेशनिंदाज्ञव पडेदनंतासन सीतद्वीप मोक्षदि-
वासवागि विमुक्त दुःखरु संचरिसुतिहरु ॥ ४० ॥

सत्व सत्व महासुसूक्ष्मु, सत्व सत्वात्मक कळेवर,
सत्य लोकाधिपनेनिपगत्यल्प वेरडुगुण,
मुक्त भोग्यविदल्ल, अजांडोत्पत्ति कारणवल्ल,
हरिप्रीत्यर्थवागी जगद व्यापारगळ माडुवनु ॥ ४१ ॥

पादन्यून शताब्द परियंतोदि उग्रतपाह्वयदि-
लवणोदधियोळगे कल्पदश तपविद्दनंतरदि-
साधिसिद महदेव पदव, आरैदुनव कल्पावसानके-
ऐदुवनु शेषन पदव पार्वतिसहितनागि ॥ ४२ ॥

इंद्रमनु दशकल्पगळलि सुनंदनामदि श्रवणगैदु,
मुकुंदनपरोक्षार्थ नाल्कु सुकल्प तपविद्दु,
नोंदु पोगेयोळु कोटि वरुष, पुरंदरनु अदनुंडनंतर,
पोंदिदनु निजलोक सुरपति कामनिदरंते ॥ ४३ ॥

करेसुवरु पूर्वदलि चंद्रार्करु, अति शांत सुरूप नामदि,
एरडेरडु मनुकल्प श्रवणगैदु,
मनुकल्प वर तपोबलदिंद, अर्वाक् शिरगळागीरैदु साविर वरुष,
दुःखव नीगि कांबरु बिंबरूपवनु ॥ ४४ ॥

साधनगळपरोक्षनंतर ऐदुवरु मोक्षवनु-
शिव शक्रादि दिविजरु उत्क्रमदिं कल्प संख्येयलि,
ऐदलेगे ऐवत्तु, उपेंद्र सहोदरनिगिप्पत्तु, द्विनव त्वगाधिपति प्राणनिगे,
गुरु मनुगळिगे षोडशवु ॥ ४५ ॥

प्रवह मरुतगे हन्नेरडु, सैंधव दिवाकर धर्मरिगे दश,
नव सुकल्पवु मित्ररिगे, शेषशत जनरिगेंटु,
कवि सनक सुसनंदन सनत्कुवर मुनिगळिगेळु,
वरुणन युवति पर्जन्यादि पुष्करगारु कल्पदलि ॥ ४६ ॥

ऐदु कर्मज सुररिगे, आजानादिगळिगेरडेरडु कल्प,
अर्धाधिकत्रय गोपिकास्त्रीयरिगे, पितृत्रयवु,
ई दिवौकस मनुजगायकरैदुवरु एरडु-ओंदु कल्प,
नराधिपरिगरे कल्पदोळगपरोक्षविरुतिहुदु ॥ ४७ ॥

दीपगळनुसरिसि दीप्तियु व्यापिसि महातिमिर कळेदु–
परोपकारव माळ्प तेरदंददलि,
परमात्म आ पयोजासननोळगिद्दु स्वरूप शक्तिय व्यक्तिगैसुत,
ता पोळेवनवरंते चेष्टेय माडि माडिसुव ॥ ४८ ॥

स्वोदरस्थित प्राण रुद्रेंद्रादि सुररिगे देहगळ कोट्टु,
आदरदि अवरवर सेवेय कोंबननवरत,
मोद बोध दयाब्धि तन्नवराधिरोगव कळेदु,
महदपराधगळ नोडदले सलहुव सतत स्मरिसुवर ॥ ४९ ॥

प्रति प्रती कल्पदलि सृष्टि स्थिति लयव माडुतले मोदिप,
चतुर मुख पवमानरन्नव माडि भुंजिसुव,
घृतवे मृत्युंजयनेनिप, देवतेगळेल्लुपसेचनरु,
श्रीपतिगे मूर्जगवेल्ल ओदनतिथियेनिसिकोंब ॥ ५० ॥

गर्भिनिस्त्री उंड भोजन गर्भगत शिशु उंब तेरदलि,
निर्भयनु तानुंडुणिसुवनु सर्व जीवरिगे,
निर्बलति परमाणु जीवगे अब्बुवदे स्थूलान्न भोजन,
अर्भकरु पेळुवरु कोविदरिदनोडंबडरु ॥ ५१ ॥

अपचयगळिल्ल उंडुदुदरिंद उपचयगळिल्ल,
अमरगणदोळगुपमरेनिसुवरिल्ल जन्मादिगळु मोदलिल्ल,
अपरिमित सन्महिम भक्तर अपुनरावर्तरनु माडुव,
कृपणवत्सल स्वपद सौख्यवनित्तु शरणरिगे ॥ ५२ ॥

बित्ति बीजवु भूमियोळु नीरेत्ति बेळसिद बेळसु प्रांतके कित्ति मेलुवंददलि,
लक्ष्मीरमण लोकगळ मत्ते जीवर कर्म–
कालोत्पत्ति स्थितिलय माडुतलि,
समवर्तियेनिसुव खेद मोदगळिल्ल अनवरत ॥ ५३ ॥

श्वसन रुद्रेंद्र प्रमुख सुमनसरोळिद्दरु क्षुत्पिपासगळु-
ओशदोळिप्पवु सकल भोगके साधनगळागि,
असुर प्रेत विशाचिगळ भाधिसुतलिप्पवु दिनदिनदि,
मानिसरोळगे मृग पक्षि जीवरोळिद्दु पोगुववु ॥ ५४ ॥

वासुदेवगे स्वप्न सुप्ति पिपास क्षुद्भय शोक मोहायास-
अपस्मृति मात्सर्य मद पुण्य पापादि दोष वर्जितनेंदु,
ब्रह्म सदाशिवादि समस्त दिविजरु,
उपासनेय गैदेल्ल कालदि मुक्तरागिहरु ॥ ५५ ॥

परम सूक्ष क्षणवु, ऐदु त्रुटि, करेसुवदु ऐवत्तु त्रुटि लव,
एरडु लववु निमिष, निमिषगळु एंटु मात्र,
युग गुरु, दश प्राणरु, पळ हन्नेरडु बाणवु,
घटिक त्रिंशति इरळु-हगलु, अरवत्तु घटिकगळु अहोरात्रिगळु ॥ ५६ ॥

ई दिवा-रात्रिगळु एरडु हदिनैदु पक्षगळु,
एरडु मासगळु आदपवु, मास द्वयवे ऋतु, ऋतु त्रयगळु अयन,
ऐदुवदु अयन द्वयाब्द, कृतादि युगगळु,
देव मानदि द्वादश सहस्र वरुषगळु अदनु पेळुवेनु ॥ ५७ ॥

चतुर साविरद एंटु नूरिवु कृत युगके,
सहस्र सले षट् शतवु त्रेतगे, द्वापरके द्वि सहस्र नानूरु,
दिति-ज-पति कलि युगके साविर शत द्वयगळु कूडि-
ई देवतेगळिगे हन्नेरडु साविर विहवु वरुषगळु ॥ ५८ ॥

प्रथम युगकेळधिक अरे विंशति सुलक्षाष्टोत्तर-
सुविंशति सहस्र मनुष्य मानाब्दगळु,
षण्णवति मित सहस्रद लक्ष द्वादश द्वितिय,
तृतियके एंटु लक्षद चतुरषष्ठि सहस्र, कलिगिदरर्ध चिंतिपुदु ॥ ५९ ॥

मूरधिक नाल्वत्तु लक्षदआरु मूरेरडधिक साविर ईरेरडु युगवरुष–
संख्ये गैयलेनितिहुदो,
सूरि पेच्चिसे साविरदनानूरु मूवत्तेरडु कॊटि,
सरॊरुहासनगिदु दिवसवेंबरु विपश्चितरु ॥ ६० ॥

शतधृतिगे ई दिवसगळु त्रिंशतियु मास, द्वादशाब्दवु,
शतवेरडरॊळु सर्व जीवॊत्पत्ति स्थितिलयवु,
श्रुति स्मृतिगळु पॊळुतिहव अच्युतगे निमिषविदेंदु,
सुख शाश्वतगे पासटियेंबुवरे ब्रह्मादि दिविजरनु ॥ ६१ ॥

आदि मध्यांतगळु इल्लद माधवगिदुपचारवेंदु ऋगादि वॊद पुराणगळु–
पॊळुववु नित्यदलि,
मॊदमयन अनुग्रहव संपादिसि रमा ब्रह्म रुद्रेंद्रादिगळु,
तम्म तम्म पदवियनैदि सुखिसुवरु ॥ ६२ ॥

ई कथामृत पानसुख सुविवॊकिगळिगल्लदले,
वैषिक व्याकुल कुचित्तरिगे दोरेवुदे आवकालदलि,
लॊकवार्तेय बिट्टु इदनवलॊकिसुत मॊदिपरिगोलिदु,
कृपाकर जगन्नाथ विठल पोरेवननुदिनदि ॥ ६३ ॥

॥ इति श्री कल्पसाधन संधि संपूर्णं ॥
॥ इति श्री अपरॊक्ष तारतम्य संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री क्रीडाविलास संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवॆ,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

श्रीनिवासन चरितॆगळ परमानुरागदि बॆसॆगॊळलु-
मुनिशौनकाद्यरिगरुपिदनु सूतार्य दयदिंद ॥

पचन भक्षण गमन भॊजन वचन मैथुन शयन वीक्षण-
अचलनाचलन प्रयत्नदि साध्यवॆ जनकॆ?
शुचिसदन दयदिंद जीवर निचयदॊळु तानिंतु माडुव,
उचितानुचित कर्मगळनॆंदरिदु कॊंडाडु ॥ १ ॥

विष्टरश्रव दॆहदॊळगॆ प्रविष्टनागि निरंतरदि-
बहुचॆष्टॆगळ मडुतिरॆ कंडु सजीवियॆनुतिहरु,
हृष्टरागुवरवन नॊडि कनिष्ठरॆल्लरु सॆवॆ माळ्परु,
बिट्टक्षणदलि कुणपसमवॆंदरिदुनुपॆक्षिपरु ॥ २ ॥

क्रीडॆगॊसुग अवरवर गतिनीडलॊसुग दॆहगळ कॊट्टाडुवनु स्वॆच्छॆयलि-
ब्रह्मॆशाद्यरॊळु पॊक्कु,
माडुवनु व्यापार बहु विध मूढ दैत्यरॊळिद्दु प्रतिदिन,
कॆडु लाभगळिल्लविदरिंदाव कालदलि ॥ ३ ॥

अक्षरॆढ्यनु ब्रह्मवायुत्र्यक्षसुरप सुरासुररॊळु,
अध्यक्षनागिद्दॆल्लरॊळु व्यापार माडुतिह,
अक्षयनु सत्यात्मक परापॆक्षॆयिल्लदॆ सर्वरॊळगॆ-
विलक्षणनु तानागि लॊकव रक्षिसुतलिप्प ॥ ४ ॥

श्री सरस्वति भारती गिरिजा शची रति रोहिणी–
संज्ञा शत सुरूपाद्यखिळ स्त्रीयरोळु स्त्रीरूप,
वासवागिद्देल्लरिगे विश्वास तन्नलि कोडुव,
अवरभिलाषेगळ पूरैसुतिप्पनु योग्यतेगळरितु ॥ ५ ॥

कोलु कुदुरेय माडि आडुव बालकर तेरदंते–
लक्ष्मीलोल स्वातंत्रिय गुणव ब्रह्माद्यरोळगिट्ट लीलेगैवनु,
तन्नवरिगनुकूलनागिद्देल्ल कालदि–
खुल्लरिगे प्रतिकूलनागिह प्रकटनागदले ॥ ६ ॥

सौपरणि वरवहन नाना रूपनामदि करेसुतवर–
समीपदल्लिद्दखिळ व्यापारगळ माडुवनु,
पाप पुण्यगळेरडु अवर स्वरूपगळनुसरिसि उणिप,
परोपकारि परेश पूर्णानंद ज्ञानघन ॥ ७ ॥

अहर निद्रा मैथुनगळहरहर बयसि बळलुव,
लक्ष्मी महितन महामहिमेगळ नेंतरिव नित्यदलि?
अहिक सौख्यव मरेदु मनदलि ग्रहिसि शास्त्रार्थगळ–
परमोत्सहदि कोंडाडुतले मैमरेदवरिगल्लदले ॥ ८ ॥

बंध मोक्ष प्रदन ज्ञानवु मंदमतिगळिगेंतु दोरेवुदु,
बिंदुमात्र सुखानुभव पर्वतके सम दुःख वेंदु तिळियदे,
अन्य दैवगळिंद सुखवापेक्षिसुवरु,
मुकुंदनाराधनेय बिट्टवगुंटे मुक्ति सुख ॥ ९ ॥

राज तन्नामात्य करुणदि नैज जनरिगे कोट्ट–
कार्य नियोजिसुत मानापमानव माळ्प तेरदंते,
श्रीजनार्दन सर्वरोळगपराजितनु तानागि,
सर्व प्रयोजनव माडिसुत माडुव फलके गुरिमाडि ॥ १० ॥

वासुदेव स्वतंत्रव सरोजासनाद्यमरा सुररिगीयलोसुग,
अर्धव तेगददरोळर्धव चतुर्भाग गैसि,
वंदनु शतविध, द्विपंचाशताब्ज जगे,
अष्ट चत्वारिंशदनिलनिगित्त, वाणी भारतीगर्ध ॥ ११ ॥

द्वितियपादव तेगेदु कोंडदशत विभागव माडि–
ता विंशति उमेशनोळिट्ट इंद्रनोळैदधिक हत्तु, रतिपनोळगिनितिट्ट,
अखिळ देवतेगळोळगीरैदु,
जीव प्रततियोळु दश, ऐदधिक नाल्वत्तु दैत्यरोळु ॥ १२ ॥

कारुणिक स्वातंत्रियत्वव मूरुविध गैसि,
एरडु तन्नोळु–नारिगोंदनु कोट्ट, स्वातंत्रियव सर्वरिगे,
धारुणिप तन्ननुगरिगे व्यापार कोट्ट,
गुणागुणगळ विचार माडुव तेरदि त्रिगुण व्यक्तियने माळ्प ॥ १३ ॥

पुण्य कर्मके सहयवागुव धन्यरिगे कल्यादि दैत्यर पुण्य फलगळनीव,
दिविजर पापकर्मफल अन्यकर्मव माळ्परिगे–
अनुगुण्यजनरिगे कोडुव,
बहु कारुण्य सागरनी तेरदि भक्तरनु संतैप ॥ १४ ॥

निरुपमगे सरियुंटु येंदुच्चरिसुवव,
तद्भक्तरोळु मत्सरिसुवव, गुणगुणिगळिगे भेदगळ पेळुवव,
दर सुदरशन ऊर्ध्व पुंड्रव धरिसुवरोळु द्वेषिसुव,
हरि चरितेगळ केळदले लोगर वार्ते केळुवव ॥ १५ ॥

ऐवमादी द्वेषवुळ्ळ कुजीवरेल्लरु दैत्यरेंबरु,
कोविदर विज्ञान कर्मव नोडि निंदिपरु,
देव देवन बिट्टु यावज्जीव परियंतरदि–
तुच्छर सेवेयिंदुपजीविसुवरज्ञानकोळगागि ॥ १६ ॥

काम–लोभ–क्रोध–मद–हिंस–आमय–अनृत–कपट–
त्रिधामनवतारगळ भेद–अपूर्णसुखबद्ध–
आमिषनिवेदित अभोज्यदि तामसान्नवनुंब तामस,
श्रीमदांधर संगदिंदलि तमवे वर्धिपुदु ॥ १७ ॥

ज्ञान भक्ति विरक्ति विनय पुराण श्रवण शास्त्र चिंतन–
दान शम दम यज्ञ सत्याहिंस भूतदय–
ध्यान भगवन्नाम कीर्तन मौन जप तप व्रत–
सुतीर्थ स्नान मंत्र स्तोत्र वंदन सज्जनर गुणवु ॥ १८ ॥

लेष स्वातंत्रिय गुणवनु प्रवेशगैसिद कारणदि,
गुण दोषगळु तोरुववु सत्वासत्व जीवरोळु,
श्वास भोजन पान शयन विलास मैथुन गमन हरुष क्लेष–
स्वप्न सुषुप्ति जाग्रतियहवु चेतनके ॥ १९ ॥

अर्ध तन्नोळगिरिसि उळिदोंदर्धव विभागगैसि–
वृजिनार्दननु पूर्वदलि स्वातंत्रियव कोट्टंते,
स्वर्धुनीपित कोडुववर सुख वृद्धिगोसुग,
ब्रह्म वायु कपर्दि मोदलादवरोळिद्दवरयोग्यतेयनरितु ॥ २० ॥

हलधरानुज माळ्प कृत्यव तिळियदे,
आहंकारदिंदेन्नुळिदु विधिनिषेद पात्ररु इल्ल वेंबुवगे–
फलगळ द्वय कोडुव, दैत्यर कलुष कर्मव बिट्टु पुण्यव सेळेदु–
तन्नोळगिट्टु क्रमदिं कोडुव भक्तरिगे ॥ २१ ॥

तोयजाप्तन किरण वृक्षच्छाय व्यक्तिसुवंते,
कमलदळायताक्षनु सर्वरोळु व्यापिसिद कारणदि,
हेय सद्गुण कर्म तोर्पवु न्यायकोविदरिगे,
निरंतर श्रीयरस सर्वोत्तमोत्तमनेंदु पेळुवरु ॥ २२ ॥

मूल कारण प्रकृतियेनिप महालकुमि,
एल्लरोळगिद्दु सुलीलेगैवुत पुण्य पापगळर्पिसलु पतिगे,
पालगडलोळु बिद्द जल कीलालवेनिपुदे,
जीवकृत कर्माळि तद्वतु शुभवुयेनिपवु एल्ल कालदलि ॥ २३ ॥

ज्ञान सुख बल पूर्ण विष्णुविगेनु माळ्पवु त्रिगुणकार्य,
कृशानुविन कृमिकविदु भक्षिपदुंटे लोकदोळु,
ई नळिनजांडवनु ब्रह्मेशान मुख्य सुरासुरर-
कालानळनवोल्नुंगुवगी पापगळ भयवे ॥ २४ ॥

मोदशिर दक्षिण सुपक्ष, प्रमोद उत्तर पक्षवेंदु,
ऋगादि श्रुतिगळु पेळुववु आनंदमय हरिगे,
मोदवैषिक सुख विशिष्ट प्रमोद पारत्रिक सुखप्रदनाद कारणदिंद,
मोद प्रमोदनेनिसिदनु ॥ २५ ॥

एंदिगादरू वृष्टियिंद वसुंधरेयोळगिप्पखिळ जलदिं-
सिंधु वृद्धियनैदुवदे बारदिरे बरिदहुदे,
कुंदु कोरतेगळिल्लदिह स्वानंद संपूर्ण स्वभावगे-
बंदु माडुवदेनु कर्माकर्म जन्यफल ॥ २६ ॥

देहवृक्षदोळेरडु पक्षिगळिहवेंदिगु बिडदे परमस्नेहदिंदलि-
कर्मज फलगळुंब जीवखग,
श्रीहरियु ता सारभोक्तनु, द्रोहिसुव कल्यादि दैत्य समूहकीव-
विशिष्ट पापव लेशवेल्लरिगे ॥ २७ ॥

द्युमणि किरणव कंड मात्रदि तिमिरवोडुव तेरदि,
लक्ष्मीरमण नोडिद मात्रदिंदघनाशवैदुवदु,
कमलसंभव मुख्य एल्ला सुमनसरोळिह पापराशिय-
अमर मुखनंददलि भस्मव माळ्प हरितानु ॥ २८ ॥

चतुर शतभागदि दशांशदोळितर जीवरिगीव,
लॆशव दितिज दॆवक्कळिगे कॊडुव विशिष्ट दुःख सुख,
मतिविहीन प्राणिगळिगाहुतिय सुख मृति दुःखवर-
यॊग्यतेयनरितु पिपील मशकादिगळिगीव हरि ॥ २९ ॥

नित्य निरयांधाख्य कूपदि भृत्यरिंदॊडगूदि,
पुनरावृत्ति वर्जित लॊकवैदुव कलियु द्वेषदलि,
सत्यलॊकाधिप चतुर्मुख तत्वदॆवक्कळ सहित,
निज मुक्तियैदुव हरि पदाब्जव भजिसि भकुतियलि ॥ ३० ॥

विधिनिषॆधगळॆरडु मरेयदे मधुविरॊधिय पादकर्पिसु,
अदिति मक्कळिगीव पुण्यव पाप दैत्यरिगे,
सुदरुशनधरगीयदिरे बंदॊदगि ओय्वरु पुण्य दैत्यरु,
अधिपरिल्लद वृक्षगळ फलदंते नित्यदलि ॥ ३१ ॥

तिलज कश्मल त्यजिसि दीपवु तिळिय तैलवग्रहिसि-
मंदिरदॊळगे व्यापिसियिप्प कत्तले भंगिसुव तेरदि,
कलि मॊदलुगॊंडखिळ दानव कुलजरनुदिन माळ्प पुण्यज फलव,
ब्रह्माद्यरिगे कॊट्टल्लल्ले रमिसुवनु ॥ ३२ ॥

इद्दलेयु नित्यदलि मॆध्यामॆध्य वस्तुगळुंडु,
लॊकदि शुद्ध सुचियॆंदेनिसिकॊंबनु वॆदस्मृतिगळॊळु,
बुद्धि पूर्वकवागि विबुधरु श्रद्धेयिंदर्पिसिद कर्म,
निषिद्धवादरु सरिये कैकॊंडुद्धरिसुतिप्प ॥ ३३ ॥

ओडेयरिद्द वनस्थफलगळ बडिदु तिंबुवरुंटे?
कंडरे हॊडेदु बिसटुवरॆंब भयदिं नॊडलंजुवरु,
बिडदे माडुव कर्मगळ मने मडदि मक्कळु बंधुगळु,
कारॊडलन आळगळु यॆंदमात्रदलॊडुववु दुरित ॥ ३४ ॥

ज्ञान कर्मेंद्रियगळिंदेनेनु माडुव कर्मगळ,
लक्ष्मी निवासनिगर्पिसुतलिरु काल कालदलि,
प्राणपति कैकोंडु नाना योनि यैदिसनु,
ओम्मेकोडदिरे दानवरु शळेदोय्वरेल्ला पुण्यराशिगळ ॥ ३५ ॥

श्रुति स्मृत्यर्थव तिळिदहंमति विशिष्टनु कर्म माडलु,
प्रतिग्रहिसनु पापगळनु कोडुतिप्प नित्य हरि,
चतुर दश भुवनाधिपति कृत कृत कृतज्ञ नियामकनु येने,
मति भ्रंश प्रमाद संकट दोषववगिल्ल ॥ ३६ ॥

वारिजासन मुख्यराज्ञाधारकरु,
सर्व स्वतंत्र रमारमणनेंदरिदु–
इष्टानिष्ट कर्मफल सार भोक्तनिगर्पिसलु स्वीकार माडुव,
पाप फलव कुबेरनामक दैत्यरिगे कोट्टवर नोयिसुव ॥ ३७ ॥

क्रूरदैत्यरोळिद्दु ताने प्रेरिसुव कारणदि हरिगे कुबेरनेंबरु,
एल्लरोळु निर्गतरतिगे निरति,
सूरिगम्यगे सूर्यनेंबरु,
दूरशोकगे शुक्ल लिंग शरीरयिल्लद कारणदि अकायनेनिसुवनु ॥ ३८ ॥

पोळलोशवल्लद महा पापाळिगळनु–
ओंदे क्षणदि निर्मूलगैसलु बेकु एंबुवगोंदे हरिनाम–
नालिगेयोळुळ्ळवगे परम कृपाळु कृष्णनु कैविडिदु–
तन्नालयदोळिट्टनुदिनदि आनंद बडिसुवनु ॥ ३९ ॥

रोगि औषध पथ्यदिंद निरोगियेनिसुव तेरदि,
श्रीमद्भागवत सुश्रवणगैदु भवाख्य रोगवनु नीगि,
शब्दाद्यखिळ विषय नियोगिसु,
दशेंद्रिय अनिलनोळु श्रीगुरु जगन्नाथ विठल प्रीतनागुवनु ॥ ४० ॥

॥ श्री क्रीडाविलास संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री अवरोहण तारतम्य संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

श्रीरमण निजभक्तरेनिसुव वारिजासन मुख्य निर्जर-
तारतम्यव पेळ्वे संक्षेपदलि गुरुबलदि ॥

केशवगे नारायणिगे कमलासन समीररिगे वाणिगे-
वीश फणिप महेशरिगे षण्महिषियर पदके-
शेष रुद्रर पत्नियरिगे सुवासव प्रद्युम्नरिगे,
संतोषदलि वंदिसुवे भक्तिज्ञान कोडलेंदु ॥ १ ॥

प्राणदेवगे नमिपे, कामन सूनु मनुगुरु दक्ष-
शचि रति मानिनियरिगे, प्रवहदेवगे, सूर्यसोम यम मानविगे,
वरुणनिगे वीणापाणि नारदमुनिगे नपिसुवे,
ज्ञान भक्ति विरक्ति मार्गव तिळिसलेनगेंदु ॥ २ ॥

अनळ भृगु दाक्षायणियरिगे कनक गर्भज सप्त ऋषिगळिगेणेयेनिप-
वैवस्वतमनु गाधि संभवगे-
दनुज निरऋति तार प्रावहि वनज मित्रगेश्विनी-
गणपा धनप विष्वक्सेनरिगे वंदिसुवेननवरत ॥ ३ ॥

उक्त देवर्कळनुळिदु एंभत्तयिदु जनरुगळु, मनुगळु,
चिथ्य चावन यमळरिगे कर्मजरेनिसुतिप्प कार्तवीर्यार्जुन-
प्रमुख शतस्थरिगे, पर्जन्य गंगादित्य-
यम सोमानिरुद्धर पत्नियर पदके ॥ ४ ॥

हुतवहनर्धांगिनिगे, चंद्रम सुत बुधगे, नामात्मिकॊषासतिगे,
छायात्मज शनैश्चरगानमिपे सतत,
प्रति दिवसदलि बिडदे जीव प्रतति माडुव–
कर्मगळिगधिपतियेनिप पुष्करन पादांबुजगळिगे नमिपे ॥ ५ ॥

आ नमिपे आजानजरिगे सुकृशानु सुतरिगे, गॊव्रजदॊळिह मानिनियरिगे–
चिरपितरु शतनून शतकॊटि मौनिजनरिगे,
दॆव मानव गान प्रौढरिगे, अवनिपरिगे,
रमानिवासन दासवर्गके नमिपेननवरत ॥ ६ ॥

अनुक्रमणिक तारतम्यव अनुदिनदि सद्भक्तिपूर्वक नेनेवरिगे–
धर्मार्थ कामादिगळु फलिसुववु,
वनज संभव मुख्यरवयवरेनिसुव जगन्नाथ विठलन,
विनयदिंदलि नमिसि कॊंडाडुतिरु मरेयदले ॥ ७ ॥

॥ इति श्री अवरॊहण तारतम्य संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री अनुक्रमणिका तारतम्य संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

मनुज उत्तमविडिदु संकरुषणन परियंतरदि पॆळिद-
अनुक्रमणिकॆय पद्यवनु कॆळुवुदु सज्जनरु ॥

श्रीमदाचार्यर मतानुगधीमतांवररंघ्रि कमलके,
सॊम पानार्हरिगे तात्विक दॆवता गणके,
हैमवति षण्महिषियर पद, व्यॊमकॆशगे,
वाणि वायू तामरसभव लक्ष्मिनारायणरिगानमिपे ॥ १ ॥

श्रीमतांवर श्रीपतॆ सत्कामितप्रद सौम्य त्रिककुद्धाम,
त्रिचतुः पाद पावन चरित चार्वांग,
गॊमतिप्रिय गौण गुरुतम, सामगायनलॊल, सर्व स्वामि,
मम कुलदैव संतैसुवदु सज्जनर ॥ २ ॥

राम राक्षस कुलभयंकर, साम जॆंद्रप्रिय,
मनॊ वाचामगॊचर, चित्सुखप्रद, चारुतर स्वरत,
भूम भू स्वर्गाप वर्गद कामधॆनु सुकल्पतरु चिंतामणि यॆंदेनिप-
निज भक्तरिगे सर्वत्र ॥ ३ ॥

स्वर्ण वर्ण स्वतंत्र, सर्वग, कर्णहीनसुशय्य, शाश्वत,
वर्ण चतुराश्रमविवर्जित, चारुतर स्वरत,
अर्ण संप्रतिपाद्य, वायु सुपर्ण वरवहन प्रतिम,
वटपर्ण शयनाश्रय (श्चर्य) तम, सच्चरित गुणभरित ॥ ४ ॥

अगणित सुगुणधाम, निश्चल, स्वगत भॆद विशून्य, शाश्वत,
जगद जीवात्यंत भिन्नापन्न परिपाल,
त्रिगुण वर्जित, त्रिभुवनॆश्वर, हगळिरुळु स्मरिसुतलिहर बिट्टगल-
श्रीजगन्नाथ विठल विश्व व्यापकनु ॥ ५ ॥

॥ इति श्री अनुक्रमणिका तारतम्य संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री विघ्नेश्वर स्तोत्र संधि ॥
## ॥ श्री गणपति स्तोत्र संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

श्रीशनंघ्रि सरोज भृंग, महेश संभव,
मन्मनदोळु प्रकाशिसनुदिन प्रार्थिसुवे प्रेमातिशयदिंद,
नी सलहु सज्जनर, वेदव्यास करुणापात्र,
महदाकाशपति करुणाळु कैपिडिदेम्मनुद्धरिसु ॥ १ ॥

ऐकदंत, इभेंद्रमुख, चामीकर कृत भूशणांग,
कृपाकटाक्षदि नोडु विज्ञापिसुवे इनितेंदु,
नोकनीयन तुतिसुतिप्प विवेकिगळ सहवास सुखगळ–
नी करुणिसुवुदेमगे संतत परम करुणाळु ॥ २ ॥

विघ्नराजने दुर्विषयदोळु मग्नवागिह मनव–
महदोषघ्ननंघ्रि सरोज युगळदि भक्ति पूर्वकदि लग्निवागलि नित्य,
नरक भयाग्निगळिगानंजे–गुरुवर–
भग्नगैसेन्नवगुणगळन्नु प्रति दिवसदल्लि ॥ ३ ॥

धनप विष्वक्सेन वैद्याश्विनिगळिगे सरियेनिप षण्मुखननुज,
शेष शतस्थ देवोत्तम, वियद्गंगाविनुत,
विश्वो पासकने, सन्मनदि विज्ञापिसुवे,
लक्ष्मीवनितेयरसन भक्ति ज्ञान कोट्ट सलहुवदु ॥ ४ ॥

चारुदेष्णाह्वयनेनिसि अवतार माडिदे रुग्मिणीयलि,
गौरि अरसन वरदि उद्धटराद राक्षसर–
शौरि आज्ञदि संहरिसि भूभार विळुहिद करुणि,
त्वत्पादार विंदके नमिपे करुणिपुदेमगे सन्मतिय ॥ ५ ॥

शूर्प कर्णद्वय, विजित कंदर्प शर, उदितार्क सन्निभ,
सर्पवर कटिसूत्र, वैकृत गात्र, सुचरित्र,
स्वर्पितांकुशररदन कर, खळदर्प भंजन, कर्म साक्षिग,
तर्पकनु नीनागि तृप्तिय बडिसु सज्जनर ॥ ६ ॥

खॆश, परम सुभक्ति पूर्वक व्यासकृत ग्रंथगळनरितु–
प्रयासविल्लदे बरॆदु विस्तरिसिदियो लॊकदोळु,
पाश पाणिये प्रार्थिसुवे, उपदॆशिसेनगदरर्थगळ,
करुणा समुद्र कृपाकटाक्षदि नॊडि प्रतिदिनदि ॥ ७ ॥

श्रीशन अति निर्मल सुनाभीदॆशवस्थित,
रक्त श्रीगंधासुशॊभितगात्र लॊक पवित्र सुरस्तॊत्र,
मूषकसुवरवहन्, प्राणावॆशयुत प्रख्यात प्रभु,
पूरैसु भक्तरु बॆडिदिष्टार्थगळ प्रतिदिनदि ॥ ८ ॥

शंकरात्मज, दैत्यरिगति भयंकर गतिगळीय लॊसुग–
संकट चतुर्थिगनॆनिसि अहितार्थगळ कोट्ट मंकुगळ मॊहिसुवे,
चक्रदरांकितन दिनदिनदि त्वत्पद पंकजंगळिगे–
एरगि बिन्नैसुवेनु पालिपुदु ॥ ९ ॥

सिद्ध विद्याधरगण समाराध्य, चरण सरॊज, सर्वसु सिद्धि दायक,
शीघ्रदिं पालिपुदु बिन्नैपे,
बुद्धि विद्या ज्ञान बल परिशुद्ध भक्ति विरक्ति–
निरुतनवद्यन स्मृति लीलेगळ सुस्तवन वदनदलि ॥ १० ॥

रक्तवासद्वय विभूषण, उक्ति लालिसु परम भगवद्भक्तवर,
भव्यात्म भागवतादि शास्त्रदलि सक्तवागलि मनवु,
विषय विरक्ति पालिसु विद्वदाद्य,
विमुक्तनेंदेनिसेन्न भव भय दिंदलनुदिनदि ॥ ११ ॥

शुक्र शिष्यर संहरिपुदके शक्र निन्ननु पूजिसिदनु,
उरुक्रम श्रीरामचंद्रनु सेतुमुखदल्लि,
चक्रवर्तिप धर्मराजनु चक्र पाणिय नुडिगे भजिसिद,
वक्रतुंडने निन्नोळेंतुदो ईशनुग्रहवु ॥ १२ ॥

कौरवेंद्रनु निन्न भजिसद कारणदि-
निजकुल सहित संहारवैदिद गुरु वृकोदरन गदेयिंद,
तारकांतकननुज एन्न शरीरदोळु नी निंतु-
धर्म प्रेरकनु नीनागि संतैसेन्न करुणदलि ॥ १३ ॥

ऐकविंशति मोदकप्रिय मूकरनु वाग्मिगळ माळ्पे,
कृपाकरेश, कृतज्ञ, कामद कायो कैपिडिदु,
लेखकाग्रणि मन्मनद दुर्व्याकुलव परिहरिसु दयदि,
पिनाकि भार्यातनुज मृद्भव प्रार्थिसुवेनीगा ॥ १४ ॥

नित्य मंगळ चरित, जगदुत्पत्ति स्थिति लय नियमन-
ज्ञानत्रयप्रद बंधमोचक सुमनसासुरर चित्त वृत्तिगळंते नडेव-
प्रमत्तनल्ल, सुहृज्जनाप्तन नित्यदलि-
नेनेनेनेदु सुखिसुव भाग्यकरुणिपुदु ॥ १५ ॥

पंचभेद ज्ञानवरुपु, विरिंचि जनकन तोरु मनदलि,
वांछितप्रद ओलुमेयिंदलि दासनेंदरिदु,
पंचवक्त्रन तनय भवदोळु वंचिसदे संतैसु,
विषयदि संचरिसदंददलि माडु मनादि करणगळ ॥ १६ ॥

ऐनु बेडुवदिल्ल निन्न, कुयोनिगळु बरलंजे,
लक्ष्मी प्राणपति तत्वेशरिंदोडगूडि गुणकार्य ताने माडुवनेंब-
ई सुज्ञानवे करुणिपुदेमगे,
महानुभाव मुहुर्मुहुः प्रार्थिसुवे इनितेंदु ॥ १७ ॥

नमो नमो गुरुवर्य विबुधोत्तम, विवर्जित निद्र,
कल्पद्रुमनेनिप भजकरिगे, बहुगुणभरित शुभ चरित,
उमेय नंदन, परिहरिसहंममते बुद्ध्यादिंद्रियगळाक्रमिसि दणिसुतलिहवु-
भवदोळगाव कालदलि ॥ १८ ॥

जयजयतु विघ्नेश तापत्रय विनाशन, विश्वमंगळ,
जयजयतु विद्यप्रदायक, वीतभयशोक,
जयजयतु चार्वंग, करुणानयनदिंदलि नोडि,
जन्मामय मृतिगळनु परिहरिसु भक्तरिगे भवदोळगे ॥ १९ ॥

कडु करुणि नीनेंदरिदु हेरोडल नमिसुवेनु निन्नडिगे,
बेंबिडदे पालिसु परम करुणासिंधु एंदेंदू,
नडु नडुवे बरुतिप्प विघ्नव तडेदु,
भगवन्नाम कीर्तन नुडिदु नुडिसेन्निंद प्रतिदिवसदलि मरेयदले ॥ २० ॥

ऐकविंशति पदगळेनिसुव कोकनद नवमालिकेय,
मैनाकि तनयांतर्गत श्रीप्राणपतियेनिप-
श्रीकर जगन्नाथ विठल स्वीकरिसि,
स्वर्गापवर्गदि ता कोडलि सौख्यगळ भक्तरिगाव कालदलि ॥ २१ ॥

॥ इति श्री विघ्नेश्वर स्तोत्र संधि संपूर्णं ॥
॥ इति श्री गणपति स्तोत्र संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री अणुतारतम्य संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

विष्णुसर्वोत्तमनु, प्रकृति कनिष्ठळेनिपळनंत गुण,
परमेष्ठि पवनरु कडिमे, वाणी भारतिगळधम,
विष्णु वहन फणींद्र मृडरिगे कृष्ण महिषियरधमरु,
इवरोळु श्रेष्ठळेनिपळु जांबवति आवेशबलदिंद ॥ १ ॥

प्लवग पन्नगपाहि भूषण युवतियरु सम तम्मोळगे–
जांबवतिगिंदलि कडिमे इवरु, इंद्रकामरिगे अवर प्राणनु,
कडिमे कामन कुवर शचिरति दक्ष गुरुमनु,
प्रवह मारुत कोरतेयेनिसुव आरु जनरिंद ॥ २ ॥

यमदिवाकर चंद्र मानवि समरु कोणपप्रवहगधमरु,
द्युमणिगिंदलि वरुण नीचनु, नाददाधमनु,
सुमनसास्य प्रसूति भृगुमुनि समरु नारदगधमरु,
अत्रि प्रमुख विश्वामित्र वैवस्वतरनळगधम ॥ ३ ॥

मित्र तारा निरऋति प्रवहा पत्नि प्रावहि समरु–
विश्वामित्रगिंदलि कोरते,
विष्वक्सेन गणनाथ वित्तपति अश्विनिगळधमरु,
मित्रमोदलादवरिगिंदलि बित्तरिपेनु शतस्थ मनुजर व्यूह नामगळ ॥ ४ ॥

मरुतरोंभत्तधिक नाल्वत्तु–एरडु अश्विनि–विश्वेदेवरु एरडयिदु–
हन्नोंदु रुद्ररु–द्वादशादित्य–
गुरु–पितृत्रय–अष्ट वसुगळु–भरत–भारति–पृथ्वि–ऋभुवु,
एंदरिवुदिवरनु सोमरस पानार्हरहुदेंदु ॥ ५ ॥

ई दिवौकसरोळगे उक्तरु ऐदधिकदश,
उळिद एंभत्तैदु शेषरिगेणेयेनिसुवरु धनप विघ्नेशा,
साधु वैवस्वत स्वयंभुव श्रीद तापसरुळिदु,
मनु ऐकादशरु विघ्नेशगिंतलि कोरतेयेनिसुवरु ॥ ६ ॥

चवननंदन कवि–बृहस्पति अवरज उचिथ्यमुनि–
पावक–धृव–नहुष–शशिबिंदु–प्रियव्रतनु–प्रह्लाद–
कुवलयपरुक्तेतरिंदलि अवर रोहिणि–शामला–जाह्नवि–
विराट्पर्जन्य–संज्ञादेवियरु अधम ॥ ७ ॥

द्युनदिगिंतलि नीचरेनिपरु अनभिमानि दिवौकसरु,
केचन मुनिगळिगे कडिमे, स्वाहादेविगधम बुध,
एनिसुवळुषादेवि नीचळु, शनि कडिमे,
कर्माधिपति सद्विनुत पुष्कर नीचनेनिसुव सूर्यनंदनगे ॥ ८ ॥

कोरतेयेनिपरशीति ऋषि पुष्करगे,
ऊर्वशि मुख्य शत अप्सररु तुंबुर मुखरु आजानजरेनिसुतिहरु,
करेसुवुदु अनळगण नाल्वत्तरे चतुर्दशद्व्येष्ट साविर,
हरि मडदियरु समरेनिसुवरु पिंते पेळ्वरिगे ॥ ९ ॥

तदवररनाख्यात अप्सर सुदतियरु कृष्णांग संगिगळु,
अदर तरुवायदलि चिरपितरुगळु,
इवरिंद त्रिदश गंधर्वगण, इवरिंदधम नर गंधर्वरु,
इवरिंदुदधि मेलेखिळपतिगळधमरु नूरु गुणदिंद ॥ १० ॥

पृथ्विपतिगळिगिंद शत मनुजोत्तमरु कडिमेनिपरु,
इवरिंदुत्तरोत्तर नूरु गुणदिंदधिकरादवर–
नित्यदलि चिंतिसुत नमिसुत भृत्यनानहुदेंब–
भक्तर चित्तदलि नेलेगोंडु करुणिपरखिळ सौख्यगळ ॥ ११ ॥

द्रुमलता तृण गुल्म जीवरु क्रमदि नीचरु,
इवरिगिंताधमरेनिसुवरु नित्यबद्धरिगिंतलज्ञानि,
तमसिग्योग्यर भृत्यरधमरु, अमरुषाद्यभिमानि दैत्यरु,
नमुचि मोदलादवरिगिंतलि विप्रचित नीच ॥ १२ ॥

अलकुमियु ता नीचळेनिपळु, कलि परम नीचतम,
अवनिंदुळिद पापिगळिल्ल नोडलु ई जगत्रयदि,
मल विसर्जन कालदलि–कत्तलेयोळगे–
कल्मष कुमार्ग स्थलगळलि चिंतनेय माळ्पुदु बल्लवरु नित्य ॥ १३ ॥

सत्वजीवर मानि ब्रह्मनु, नित्य बद्धरोळगे पुरंजन,
दैत्य समुदायाधिपति कलियेनिप,
पवमान नित्यदलि अवरोळगे कर्म प्रवर्तकनु तानागि,
श्रीपुरुषोत्तमन संप्रीतिगोसुग माडि माडिसुव ॥ १४ ॥

प्राणदेवनु त्रिविधरोळगे प्रवीण तानेंदेनिसि,
अधिकारानुसारदि कर्मगळ ता माडि माडिसुव,
ज्ञान भक्ति सुरर्गे, मिश्र ज्ञान मध्यम जीवरिगे,
अज्ञान मोह द्वेषगळ दैत्यरिगे कोडुतिप्प ॥ १५ ॥

देव दैत्यर तारतम्यव ई विधदि तिळिदेल्लरोळु,
लक्ष्मीवरनु सर्वोत्तमनु एंदरिदु नित्यदलि सेविसुव–
भक्तरिगोलिदु सुखवीव सर्वत्रदलि सुखमय,
श्रीविरिंचाद्यमरवंदित जगन्नाथ विठलनु ॥ १६ ॥

॥ इति श्री अणुतारतम्य संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

## ॥ श्री दैत्यतारतम्य संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

श्रीश मुक्तामुक्त सुरवर वासुदेवगे भक्तियलि–
कमलासननु पेळिदनु दैत्यस्वभावगुणगळनु ॥

एनगे निन्नलि भक्ति ज्ञानगळेनितिहवो प्राणनलि तिळियदे,
हनुमदाद्यवतारगळ भेदगळ पेळुवव दनुज,
घोरांधंतमसिग्योग्यनु नसंशय,
निन्न बैवर कोनेय नालिगे पिडिदु छेदिपेनेंदनब्ज भव ॥ १ ॥

ज्ञान बल सुख पूर्ण व्याप्तगे हीन गुणनेंबुवनु,
ईश्वर तानेयेंबुव, सच्चिदानंदात्मगुत्पत्ति,
श्रीनितंबिनिगे–ईशगे वियोगानु चिंतने,
छेद भेद विहीन देहगे शस्त्रगळ भय पेळुवव दैत्य ॥ २ ॥

लेश भय शोकादि शून्यगे क्लेशगळु पेळुवव,
राम व्यास रूपंगळिगे ऋषि विप्रत्व पेळुवव,
दाशरथि कृष्णादि रूपके केशखंडने पेळ्व,
मक्कळिगोसुव शिवार्चनेय माडिदनेंबुवव दैत्य ॥ ३ ॥

पाप परिहारार्थ राम उमापतिय निर्मिसिद,
भगवद्रूपरूपके भेद चिंतने माळ्प मानवनु,
आपगळु सत्तीर्थ गुरु माता पितर प्रभु प्रतिम भूत दयापररु,
कंडवरे देवरु एंबुवने दैत्य ॥ ४ ॥

सुंदर स्वयंव्यक्तवु चिदानंद रूपगळेंबुवनु,
नररिंद निर्मित ईश्वरगे अभिनमिसुतिह नरनु,
कंदुगोरळ दिवाकरनु हरियोंदे,
सूर्य सुरोत्तम जगद्वंद्यनेंबुव, विष्णु दूषणे माडिदव दैत्य ॥ ५ ॥

नेमदिंदस्वत्थ तुलसी सोमधरनलि विमल शालिग्रामगळनिट्टु,
अभिनमिप नर मुक्तियोग्य सदा,
भूमियोळु धर्मार्थ मुक्ति सुकामपेक्षेगळिंद-
शालिग्रामगळ व्यतिरिक्त वंदिसे दुःखवैदुवनु ॥ ६ ॥

वितत महिमन बिट्टु सुररिगे पृथकु वंदने माळ्प मानव-
दितिजनो सरि हरियु ता संस्थित नेनिसनल्लि,
चतुर मुख मोदलादखिळ देवतेगळोळगिहनेंदु-
लक्ष्मीपतिगे वंदिसे ओंदरक्षण बिट्टगलनवर ॥ ७ ॥

शैव शूद्र करार्चित महादेव वायु हरि प्रतिमे,
वृंदावनदि मासद्वयदोळिह तुलसि, अप्रसव गो,
विवाह वर्जिताश्वत्था विटपिगळ-
भक्ति पूर्वकसेविसुव नर नित्य शाश्वत दुःखवैदुवनु ॥ ८ ॥

कमल संभव मुख्य मनुजोत्तमर पर्यंतरदि मुक्तरु,
सम शतायुष्यळ्ळवनु कलि ब्रह्मनोपादि,
क्रमदि नीचरु दैत्यरु नराधमर विडिदु,
कुलक्ष्मि कलि अनुपमरेनिसुवरु असुररोळु द्वेषादि गुणदिंद ॥ ९ ॥

वनज संभवनब्द शत ओब्बने महाकलिशब्द वाच्यनु,
दिन दिनगळलि बीळ्वरंधंतमदि कलिमार्ग,
दनुजरेल्लर प्रतीक्षिसुत ब्रह्मन शताब्दांतदलि,
लिंगवु अनिलन गदा प्रहारदिंदलि भंगवैदुवदु ॥ १० ॥

मारुतन गदेयिंद लिंग शरीर पोदानंतर तमोद्वारवैदि–
स्वरूप दुःखगळनुभविसुतिहरु,
वैर हरिभक्तरलि हरियलि तारतम्यदलिरुतिहुदु संसारदल्लि,
तमस्सिनलि अत्यधिक कलियल्लि ॥ ११ ॥

ज़ानवेंबुदे मिथ्य, असमीचीन दुःख तरंगवे–
समीचीन बुद्धि निरंतरदि कलिगिहुदु,
दैत्यरोळु हीनळेनिपळु शतगुणदि, कलिमानिनिगे शत विप्रचित्तिगे,
ऊन शतगुण कालनेमिये कंसनेनिसिदनु ॥ १२ ॥

कालनेमिगे पंचगुणदिंकीळु मधुकैटभरु,
जन्मव ताळि इळेयोळु हंसडिभिकाह्वयदि करेसिदरु,
ऐळ नामक विप्रचित्त सम आळुयेनिप,
हिरण्यकश्यपु शूल पाणी भक्त नरकगे शतगुणाधमनु ॥ १३ ॥

गुणगळत्रय नीचरेनिसुव कनककसिपुगे हाटकांबकगे,
एणेयेनिप मणिमंतगिंतलि किंचित्–ऊन बक,
दनुजवर तारकनु विंशति गुणदि नीचनु,
लोक कंटकनेनिप शंबर तारकासुरगधम षड्गुणदि ॥ १४ ॥

सरियेनिसुवरु साल्वनिगे संकरनिगे, अधमनु शतगुणदि शंबरगे,
षड्गुण नीचनेनिप हिडिंबका–बाण–
असुरनु द्वापर कीचकनु नाल्वरु समरु,
द्वापरने शकुनी करेसिदनु कौरवगे सहोदरमावनहुदेंदु ॥ १५ ॥

नमुचि इल्वर पाकनामक समरु, बाणाद्यरिगे दशगुण नमुचि नीचनु,
नूरुगुणदिं अधम वातापि,
कुमतिधेनुक नूरुगुणदिंदमररिपु वातापिगधमनु,
वमनधेनुकगिंदलर्ध गुणाधमनु केशि ॥ १६ ॥

मत्ते केशिनामक तृणावर्त सम, लवणासुरनु ओंभत्तु निच,
अरिष्ट नामक पंचगुणदिंद,
दैत्यसत्तम हंस डिभिक प्रमत्त–वेननु पौंड्रकनु,
वंभत्तु गुणदिंदधम मूवरु लवणनामकगे ॥ १७ ॥

ईशनेनानेंब खळ दुश्यासना वृषसेन–
दैत्याग्रेसर जरासंध सम पापिगळोळत्यधिक,
कंस कूप विकर्ण सरि रुग्मीशताधम,
रुग्मिगिंत महासुरनु शतधन्वि किर्मीररु शताधमरु ॥ १८ ॥

मदिरपानी दैत्य गणदोळगधमरेनिपरु कालिकेयरु,
अधिकरिगे समरहरु देवावेशबलदिंद,
वदन पाणी पाद श्रोत्रिय गुद उपस्थ घ्राण त्वञ्चनके अधिपदैत्यरु–
नीचरेनिपरु कालिकेयरिगे ॥ १९ ॥

ज्ञान कर्मेंद्रियगळिगे अभिमानि कल्याद्यखिळ दैत्यरु–
हीनकर्मव माडि माडिसुतिहरु सर्वरोळु,
वाणि भारति कमलभव पवमानरु इवरच्छिन्न भक्तरु,
प्राण असुरावेशरहितरु आखनाश्मसम ॥ २० ॥

हुतवहाक्षाद्यमररेल्लरु युतरु कल्यावेश,
विधि मारुति सरस्वति भारतियवतारदोळगिल्ल,
कृतपुटांजलियिंद तन्नय पितन सम्मुखदल्लि निंदु–
आनतिसि बिन्नैसिदनु यन्नोळु कृपेय माडेंदु ॥ २१ ॥

द्वेषिदैत्यर तारतम्यवु दूषणेयु भूषणगळु एन्नदे–
दोषवेंबुव द्वेषिनिश्चय,
इवर नोडल्के क्लेशगळनैदुवनु बहुविध, संशयवु पडसल्ल,
वेदव्यास गरुड पुराणदल्लि पेळिदनु ऋषिगळिगे ॥ २२ ॥

जालिनेग्गिलु क्षुद्र शिले बरिगाल पुरुषन बाधिपवु,
चम्मोळिगेय मेट्टिदवगुंटे कंटकगळ भय,
चॆळु सर्पव कोंद वार्तॆय कॆलि मॊदिपरिगिल्लवघ,
यमनाळुगळ भयविल्ल दैत्यर निंदिसुव नरगे ॥ २३ ॥

पुण्यकर्मव पुष्करादि हिरण्य गर्भांतर्गत-
ब्रह्मण्य दॆवनिगर्पिसुतलिरु,
पाप कर्मगळ जन्य दु:खव कलिमुखाद्यरिगुण्णलीवनु,
सकललॊक शरण्य शाश्वत मिश्र जनरिगे मिश्रफलवीव ॥ २४ ॥

त्रिविध गुणगळ मानि श्रीभार्गविरमण,
गुणगुणिगळोळगवरवर यॊग्यते कर्मगळननुसरिसि कर्मफल-
स्ववशरादमरासुरर गणकवधियिल्लदे कॊडुव,
दॆव प्रवरवर जगन्नाथ विठल विश्वव्यापकनु ॥ २५ ॥

॥ इति श्री दैत्यतारतम्य संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री नैवेद्यप्रकरण संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पेळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥

लेक्किसदे लकुमियनु बोम्मन पोक्कळिंदलि पडेद,
पोस पोंबक्किदेरनु पडेदवयवगळिंद दिविजरना,
मक्कळंददि पोरेव सर्वद रक्कसांतक,
रणदोळगे निर्दुःख सुखमय काय्द पार्थन सूतनेंदेनिसि ॥ १ ॥

दोषगंधविदूर, नाना वेषधारि, विचित्र कर्म, मनीषि,
मायारमण, मध्वांतः करणरूढ,
शेषशायि, शरण्य, कौस्तुभ भूषण सुकंधर,
सदा संतोष बल सौंदर्यसारन महिमेगेनेंबे ॥ २ ॥

साशनानशने अभी येंबी श्रुति प्रतिपाद्यनेनिसुव-
केशवन रूपद्वयव चिद्देहदोळहोरगे- ॥
बेसरदे सद्भक्तियिंद उपासनेय गैयुतलि बुधरु,
हुताशनन योलिप्पनेंदनवरत तुतिसुवरु ॥ ३ ॥

सकल सद्गुण पूर्ण, जन्माद्यखिळ दोषविदूर,
प्रकटाप्रकट, सद्व्यापारि, गत संसारि कंसारि,
नकुल नानारूप नीयामक नियम्य निरामय,
रविप्रकर सन्निभ, प्रभु सदा मां पाहि परमात्म ॥ ४ ॥

चेतना चेतन जगत्तिनोळातननु तानागि लक्ष्मीनाथ-
सर्वरोळिप्प तत्तद्रूपगळ धरिसि,
जातिकारन तेरदि येल्लर मातिनोळगिद्दु,
अखिळ कर्मव ता तिळिसिकोळ्ळदले माडिसि नोडि नगुतिप्प ॥ ५ ॥

वीतभय, विज्ञान दायक, भूत भव्य भवत्प्रभु,
खळाराति, खगवर वहन, कमलाकांत निश्चिंत,
मातरिश्वप्रिय, पुरातन, पूतना प्राणापहारि,
विधातृजनक, विपश्चित जनप्रिय, कविगॆया ॥ ६ ॥

दुष्टजन संहारि, सर्वोत्कृष्ट महिम, समीरनुत,
सकलॆष्टदायक, स्वरत, सुखमय, मम कुलस्वामि,
हृष्ट पुष्ट कनिष्ठ, सृष्ट्याद्यष्ट कर्त,
करींद्र वरद, यथॆष्टतनु, उन्नत सुकर्मा, नमिपे ननवरत ॥ ७ ॥

पाकशासन पूज्यचरण, पिनाकि सन्नुत महिम,
सीता शॊकनाशन, सुलभ, सुमुख, सुवर्णवर्ण सुखि,
माकळत्र, मनीषि, मधुरिपु, ऎकमॆवाद्वितिय रूप,
प्रतीक, दॆव गणांतरात्मक, पालिसुवुदॆम्म ॥ ८ ॥

अप्रमॆयानंत रूप, सदा प्रसन्न मुखाब्ज,
मुक्ति सुख प्रदायक, सुमनसाराधित पदांभॊज,
स्वप्रकाश, स्वतंत्र, सर्वग, क्षिप्र फलदायक, क्षितीश,
यदुप्रवीर, वितर्क्य, विश्वसु तैजस प्राज्ञ ॥ ९ ॥

गाळि नडॆवंददलि नीलघनाळि वर्तिसुवंते,
ब्रह्म त्रिशूलधर शक्रार्क मॊदलादखिळ दॆवगण,
कालकर्म गुणाभिमानि महालकुमि अनुसरिसि नडॆवरु,
मूलकारण मुक्तिदायकनु श्रीहरि यॆनिसिकॊंब ॥ १० ॥

मॊड कैबीसणिकॆयिंदलि ऒडिसुवॆनॆंबन प्रयत्नवु कूडुवदे कल्पांतकादरु,
लकुमिवल्लभनु जॊडु कर्मव जीवरॊळु,
ता माडि माडिसि फलगळुणिसुव,
प्रौढरादवरिवन भजिसि भवाब्धि दाटुवरु ॥ ११ ॥

क्लॆश मॊहाज्ञान दॊष विनाशक,
विरिंचांडदोळगाकाशदॊपादियलि तुंबिह येल्ल कालदलि,
घासिगोळिसदे तन्नवर अनायास संरक्षिसुव,
महकरुणासमुद्र, प्रसन्न वदनांभॊज, सुरराज वैराज ॥ १२ ॥

कन्नडिय कैविडिदु नॊळ्पन कण्णुगळु कंडल्लिगेरगदे-
तन्न प्रतिबिंबवने कांबुव दर्पणव बिट्ट,
धन्यरिळेयोळगेल्ल कडेयलि निन्न रूपव नॊडि सुखिसुत सन्नुतिसुत,
आनंद वारिधियोळगे मुळुगिहरु ॥ १३ ॥

अन्नमानि शशांकनोळु कारुण्यसागर कॆशवनु,
परमान्नदोळु भारतियु नारायणनु,
भक्ष्यदोळु सोन्नगदिरनु माधवनु,
श्रुति सन्नुत श्रीलक्ष्मि घृतदोळु मान्य गॊविंदाभिधनु इरुतिप्पयेंदेंदु ॥ १४ ॥

क्षीरमानि सरस्वती जगत्सार विष्णुव चिंतिसुवुदु,
सरॊरुहासन मंडिगेयोळिरुतिप्प मधुवैरि,
मारुतनु नवनीतदोळु संप्रॆरक त्रिविक्रमनु,
दधियोळु वारिनिधि चंद्रमरोळगे इरुतिप्प वामननु ॥ १५ ॥

गरुडसूपके मानि श्री श्रीधरन मूरुति,
पत्रशाखके वरनेनिप मित्राख्य सूर्यनु हृशीकपन मूर्ति,
उरगराजनु फलसुशाखके वरनेनिसुवनु-
पद्मनाभन स्मरिसि भुंजिसुतिहरु बल्लवरेल्ल कालदलि ॥ १६ ॥

गौरि सर्वाम्लस्थळेनिपळु शौरि दामॊदरन तिळिवुदु,
गौरिप अनाम्लस्थ संकरुषणन चिंतिपुदु,
सार शर्कर गुडदोळगे वृत्रारि इरुतिह-
वासुदॆवन सूरिगळु धॆनिपरु परमादरदि सर्वत्र ॥ १७ ॥

स्मरिसु वाचस्पतिय सूपस्करदोळगे प्रद्युम्ननिप्पनु,
निरयपति यमधर्म कटुद्रव्यदोळगनिरुद्ध,
सरषप श्री रामठ ऐळदि स्मरण श्रीपुरुषोत्तमन–
कर्पूरदि चिंतिसि पूजिसुतलिरु परम भकुतियलि ॥ १८ ॥

नालिगिंदलि स्वीकरिप रसपालु मोदलाददरोळगे–
घृत तैल पक्व पदार्थदोळगिह चंद्रनंदनन–
पालिसुवधोक्षजन चिंतिसु,
स्थूल कूष्मांड तिल माषज ई ललित भक्ष्यदोळु दक्षनु लक्ष्मीनरसिंह ॥ १९ ॥

मनवु माष सुभक्ष्यदोळु चिंतनेय माडच्युतन,
निरऋति मनेयेनिप लवणदोळु मरेयदे श्रीजनार्दनन,
नेनेवुतिरु फलरसगळोळु प्राणन उपेंद्रन,
वीळ्यदेलेयोळु द्युनदि हरिरूपवने कोंडाडुतले सुखिसुतिरु ॥ २० ॥

वेद विनुतगे बुधनु सुस्वादोदकाधिपनेनिसिकोंबनु–
श्रीद कृष्णन तिळिदु पूजिसुतिरु निरंतरदि,
साधुकर्मव पुष्करनु सुनिवेदित पदार्थगळ शुद्धिय गैदगोसुग–
हंसनामकगर्पिसुतलिप्प ॥ २१ ॥

रति सकल सुस्वादुरसगळ पतियेनिसुवळु अल्लि विश्वनु,
हुतवहन चूलिगळोळगे भार्गवन चिंतिपुदु,
क्षितिज गोमयज आदियोळु संस्थित वसंतन ऋषभ देवन–
तुतिसुतिरु संतत सद्भक्तिपूर्वकदि ॥ २२ ॥

पाककर्तृगळोळु चतुर्दश लोकमाते महालकुमि–
गत शोक विश्वंभरन चिंतिपुदेल्ल कालदलि,
चौक शुद्ध सुमंडलदि भूसूकराह्वय,
उपरि चैलप ऐकदंत सनत्कुमारन ध्यानिपुदु बुधरु ॥ २३ ॥

श्रीनिवासन भोग्यवस्तुव काणगोडदंददलि–
विष्वक्सेन परिखारूप नागिहनल्लि पुरुषाख्य,
ताने पूजक पूज्यनेनिसि निजानुगर संतैप,
गुरुपवमानवंदित सर्वकालगळल्लि सर्वत्र ॥ २४ ॥

नूतन समीचीन सुरसोपेत हृद्य पदार्थदोळु,
विधिमाते तत्तद्रसगळोळु रसरूप तानागि,
प्रीति बडिसुत नित्यदि जगन्नाथ विठलन कूडि,
ता निर्भीतळागिहळेंदरिदु नी भजिसि सुखिसुतिरु ॥ २५ ॥

॥ श्री नैवेद्यप्रकरण संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री कक्षातारतम्य संधि ॥

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु पॆळुवे,
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

श्रीरमण सर्वेश सर्वग सारभोक्त स्वतंत्र-
दोष विदूर, ज्ञानानंद बल ऐश्वर्य सुखपूर्ण-
मूरु गुणवर्जित, सगुण साकार,
विश्वस्थिति लयोदयकारण कृपासांद्र नरहरे सलहो सज्जनर ॥ १ ॥

नित्यमुक्तळे निर्विकारळे नित्यसुख संपूर्णे,
नित्यानित्य जगदाधारे मुक्ता मुक्त गणविनुते,
चित्तयिसु बिन्नपव, श्रीपुरुषोत्तमन वक्षोनिवासिनि,
भृत्यवर्गव काये त्रिजगन्माते विख्याते ॥ २ ॥

रोमकूपगळल्लि पृथ्पृथक् आ महा पुरुषन स्वमूर्ति-
तामरसजांडगळ तद्गत विश्वरूपगळ-
श्रीमहिळे रूपगळ गुणगळ सीमेगाणदे योचिसुत,
मम स्वामि महिमेयदंतोयेंदडिगडिगे बेरगादे ॥ ३ ॥

ओंदजांडदोळोंदु रूपदोळोंदवयवदोळोंदु नखदोळगे-
ओंदु गुणगळ पारुगाणदे कृत पुटांजलियिं-
मंद जासन पुळक पुळकानंद बाष्प तोदलु नुडिगळिंद,
इंदिरा वल्लभन महिमे गभीरतेरवेंद ॥ ४ ॥

ऎनु धन्यरो ब्रह्म गुरुपवमानरायरु,
ई परियलि रमानिवासन विमल लावण्यातिशयगळनु-
सानुरागदि नोडि सुखिप महानुभावर भाग्यवेंतो,
भवानिधवनिगसाध्यवेनिसलु नरर पाडेनु ॥ ५ ॥

आपितामह नूरुकल्प रमापतिय गुण जपिसि ओलिसि–
महा पराक्रम हनुम भीमानंदमुनियेनिसि,
आ परब्रह्मन सुनाभीकूपसंभवनामदलि मेरेव,
आ पयोजासन समीररिगभिनमिपे सतत ॥ ६ ॥

वासुदेवन मूर्ति हृदयाकाशमंडल मध्यदलि,
तारेशनंददि काणुतति संतोषदलि तुतिप–
आ सरस्वति भारतियरिगे ना सतत वंदिसुवे परमोल्लासदलि,
सुज्ञान भकुतिय सलिसलेमगेंदु ॥ ७ ॥

जगदुदरन सुरोत्तमन निजपेगळोळांतु कराब्जदोळु पदयुगधरिसि,
नख पंक्तियोळु रमणीय तरवाद नगधरन प्रतिबिंब काणुत–
मिगे हरुषदिं पोगळिहिग्गुव,
खगकुलाधिप कोडलि मंगळ सर्व सुजनरिगे ॥ ८ ॥

योगिगळ हृदयके निलुक निगमागमैक विनुतन परमनुरागदलि–
द्विसहस्र जिह्वेगळिंद वर्णिसुव,
भूगगन पाताळ व्याप्तन, योगनिद्रास्पदनेनिप,
गुरु नागराजन पदके नमिसुवे मनदोळनवरत ॥ ९ ॥

दक्षयज्ञ विभंजनने विरुपाक्ष, वैराग्याधिपति,
संरक्षिसेम्मनु सर्वकालदि सन्मुदवनित्तु,
यक्षपति सख, यजपरिगे सुरवृक्ष, वृकदनुजारि,
लोकाध्यक्ष, शुक–दूर्वास–जैगीषव्य संतैसु ॥ १० ॥

नंदिवाहन नळिनिधर, मौळेंदु शेखर, शिव, त्रियंबक,
अंधकासुर मथन, गज शार्दूल चर्मधर,
मंदजासन तनय, त्रिजगद्वंद्य, शुद्धस्पटिक सन्निभ,
वंदिसुवे ननवरत करुणिसि कायो महदेव ॥ ११ ॥

हत्तु कल्पदि लवण जलधियोळुत्तम श्लोकन वोलिसि कृतकृत्यनागि,
जगत्पतिय नॆमदि कुशास्त्रगळ बित्तरिसि मॊहिसि दुरात्मर–
नित्यनिरय निवासरॆनिसिद,
कृत्तिवासने नमिपे पालिसो पार्वतीरमण ॥ १२ ॥

फणि फणांचित मकुटरंजित, क्वणित डमरु त्रिशूल,
शिखि दिनमणि निशाकर नॆत्र, परम पवित्र सुचरित्र,
प्रणतकामद प्रमथ, सुरमुनिगणसुपूजित चरणयुग,
रावणमदविभंजन शॆष पदार्हनहुदॆंदु ॥ १३ ॥

कंबुपाणिय परम प्रॆम नितंबिनियरॆंदॆनिप,
लक्षणे जांबवति काळिंदि नीला भद्र सखविंदारॆंब–
षण्महिषियर दिव्य पदांबुजगळिगे नमिपे,
मम हृदयांबरदि नेलेसलि बिडदे तम्मरसनोडगूडि ॥ १४ ॥

आ परंतपनोलुमेयिंद सदापरॊक्षिगळॆनिसि,
भगवद्रूपगुणगळ महिमे स्वपतिगळाननदि तिळिव,
सौपरणि वारुणि नगात्मजरापनितु बण्णिसुवे,
एन्न महापराधगळेणिसदीयलि परम मंगळव ॥ १५ ॥

त्रि दिवतरु–मणि–धॆनुगळिगास्पदनॆनिप,
त्रिदशालयाब्धिगे बदरनंददलोप्पुतिप्प उपॆंद्र चंद्रमन,
मृदु मधुर सुस्तवनदिंदलि मधु समय पिकनंते पाडुव,
मुदिर वाहननंघ्रि युग्मंगळिगे नमिसुवेनु ॥ १६ ॥

कृतिरमण प्रद्युम्नदॆवनतुळ बल लावण्य गुण–
संतत उपासन कॆतुमालाखंडदोळु रचिप–
रतिमनॊहरनंघ्रि कमलके नतिसुवेनु भकुतियलि,
मम दुर्मतिकेळेदु सन्मतियनीयलि निरुत एमगोलिदु ॥ १७ ॥

चारुतर नवविध भकुति गंभीर वाराशियोळु,
परमोदार महिमन हृदय फणिपति पीठदलि भजिप–
भूरिकर्माकरनेनिसुव शरीरमानि प्राणपति पदवारिरुहकानमिपे,
मद्गुरुराय नहुदेंदु ॥ १८ ॥

वितत महिमन, विश्वतोमुखन, अतुळ भुजबल–
कल्प तरुवाश्रितरेनिसि, सकलेष्ट पडेदनुदिनदि मोदिसुव,
रति–स्वयंभुव–दक्ष–वाचस्पति–बिडौजन मडदि शचि–
मन्मथ कुमारनिरुद्धरेमगीयलि सुमंगळव ॥ १९ ॥

भववनधि नवपोत, पुण्य श्रवण कीर्तन पादवनरुह–
भवननाविकनागि भकुतर तारिसुव बिडदे,
प्रवहमारुत देव, परमोत्सव विशेष निरंतर,
महाप्रवहदंददि कोडलि भगवद्भक्त संततिगे ॥ २० ॥

जनरनुद्धरिसुवेनेनुत निजजनकननुमतदलि,
स्वयंभुव मनुविनिंदलि पडेदे सुकुमारकर नोलुमेयलि,
जननि शतरूपानितंबिनि, मनवचन कायदलि तिळिदनुदिनदि नमिसुवे,
कोडु एमगे सन्मंगळव नोलिदु ॥ २१ ॥

नरन नारायणन हरि कृष्णर पडेदे पुरुषार्थ तेरदलि,
तरणि शशि शतरूपरिगे समनेनिसि– पापिगळ निरयदोळु नेलेगोळिसि,
सज्जन नेरवियनु पालिसुव औदुंबर,
सलहु सलहेम्म बिडदले परम करुणदलि ॥ २२ ॥

मधु विरोधि मनोज, क्षीरोदधि मथन समयदलुदिसि,
नेरेकुधरजावल्लभन मस्तक मंदिरदि मेरेव विधु,
तवांघ्रि सरोज युगळके मधुपनंददलेरगलु, एन्मनद अधिप,
वंदिपेनु अनुदिन अंतस्ताप परिहरिसु ॥ २३ ॥

श्रीवनरुहांबकन नॆत्रगळॆ मनॆयॆनिसि,
सज्जनरिगॆ करावलंबन वीव तॆरदि मयूख विस्तरिप–
आ विवस्वान्नॆनिसिकॊंब विभावसु, अहर्निशिगळलि कॊडली,
वसुंधरॆयॊळु विपश्चितरॊडनॆ सुज्ञान ॥ २४ ॥

लॊकमातॆय पडॆदु नी जगदॆकपात्रनिगित्त कारण,
श्रीकुमारि समॆत नॆलसिद निन्न मंदिरदि,
आ कमलभव मुखरु बिडदॆ पराकॆनुत निंदिहरॊ,
गुण रत्नाकरनॆ बण्णिसलळवॆ कॊडु एमगॆ सन्मनव ॥ २५ ॥

पणॆयॊळॊप्पुव तिलक, तुलसी मणिगणान्वित कंठ,
करदलि क्वणित वीणा, सुस्वरदि बहुताळगतिगळलि–
प्रणव प्रतिपाद्यन गुणंगळ कुणिदु पाडुत–
परम सुख संदणियॊळाडुव, दॆवऋषि नारदरिगभिनमिपॆ ॥ २६ ॥

आ सरस्वति तीरदलि बिन्नैसला मुनिगळ नुडिगॆ,
जडजासन महॆशाच्युतर लॊकंगळिगॆ पॊगि,
ता सकल गुणगळ विचारिसि कॆशवनॆ परदैववॆंदुपदॆशिसिद भृगुमुनिप,
कॊडलॆमगखिळ पुरुषार्थ ॥ २७ ॥

बिसरुहांबकनाज्ञॆयलि सुमनस मुखनु तानॆनिसि,
नाना रसगळुळ्ळ हरिस्सुगळनवरवरिगॊय्दीव,
वसुकुलाधिप यज्ञ पुरुषन, असम बल रूपंगळिगॆ वंदिसुवॆ,
ज्ञान यशस्सु विद्यसुबुद्धिकॊडलॆमगॆ ॥ २८ ॥

तातनप्पणॆयिंद नी प्रख्यातियुळ्ळरवत्तु मक्कळ–
प्रीतियिंदलि पडॆदवरवरिगित्तु मन्निसिदॆ,
वीति हॊत्रन समळॆनिसुव प्रसूति जननि,
त्वदंघ्रि कमलकॆ ना तुतिसि तलॆबागुवॆम्म कुटुंब सलहुवदु ॥ २९ ॥

शतधृतिय सुतरीर्वरुळिद अप्रतिम सुतपोनिधिगळ-
पराजितन सुसमाधियोळिरिसि मूर्लोकदोळु मेरेव,
व्रतिवर मरीचि-अत्रि-पुलहा-ऋतु-वसिष्ठ-पुलस्त्य-
वैवस्वतनु-विश्वामित्र-अंगिरर अंघ्रिगेरगुवेनु ॥ ३० ॥

द्वादशादित्यरोळु मोदलिगनाद मित्र, प्रवह मानिनियाद प्रावहि,
निरऋति, निर्जर गुरुमहिळे तारा,
ई दिवौकसरनुदिनाधिव्याधि उपटळवळिदु,
विबुधरिगादरदि कोडलखिळ मंगळवाव कालदलि ॥ ३१ ॥

माननिधिगळेनिसुव विष्वक्सेन-धनप-गजाननरिगे-
समानरेंभत्तैदु शेष शतस्थ देवगणके-
आनमिसुवेनु बिडदे, मिथ्याज्ञानकळेदु सुबुद्धिनित्तु,
सदानुरागदलेम्म परिपालिसलि येंदेनुत ॥ ३२ ॥

भूतमरुत नवांतरभिमानी, तपस्वि मरीचि मुनि,
पुरुहूतनंदन, पादमानि जयंतरेमगोलिदु,
कातरव पुट्टिसदे विषयदि वीतभयन पदाब्जदलि विपरीतबुद्धियनीयदे-
सदा पालिसलि येम्म ॥ ३३ ॥

ओदिसुव गुरुगळनु जरिदु सहोदुगरिगुपदेशिसिद,
महदादिकारण सर्वगुण संपूर्ण हरियेंदु वादिसुव,
तत्पतिय तोरेंदादनुज बेसगोळलु,
स्तंभदि श्रीदनाक्षण तोरिसिद प्रह्लाद सलहेम्म ॥ ३४ ॥

बलिमोदलु सप्तेंद्ररिवरिगे कलित कर्मज दिविजरेंबरु,
उळिद ऐकादश मनुगळु उचित्थ्य चवन मुख,
कुल ऋषिगळेंभत्तु, हैहय, इळिय कंपनगैद पृथु,
मंगळ परिक्षित-नहुष-नाभि-ययाति-शशिबिंदु ॥ ३५ ॥

शतक संकेतुळ्ळ प्रियव्रत भरत मांधात पुण्याश्रितरु,
जयविजयादिगळु गंधर्वरेंटु जन,
हुतवहज पावक, सनातन, पितृगळेळ्ळवरु, चित्रगुप्तरु,
प्रतिदिनदि पालिसलि तम्मवनेंदु एमगोलिदु ॥ ३६ ॥

वासवालय शिल्प, विमल जलाशयगळोळु रमिप ऊर्वशि,
भेशरविगळ रिपुगळेनिसुव राहुकेतुगळु,
श्रीश पदपंथान धूमार्चीर दिविजरु,
कर्मजरिगे सदा समान दिवौकसरु कोडलेमगे मंगळव ॥ ३७ ॥

द्युनदि–श्यामल–संज्ञ–रोहिणि–घनप पर्जन्य–
अनिरुद्धन वनिते ब्रह्मांडाभिमानि विराट देवियर नेनेवेनु,
आ नलविंदे देवानन महिळे स्वाहाख्यरु,
आलोचने कोडलि निर्विघ्नदिं भगवद्गुणंगळलि ॥ ३८ ॥

विधिपितन पादांबुजगळिगे मधुपनंते विराजिप,
अमल उदकगळिगे सदाभिमानियु येंदेनिसिकोंब बुधगे ना वंदिसुवे सम्मोददि,
निरंतरवोलिदु एमगभ्युदय पालिसलेंदु,
परमोत्सवदोळनुदिनदि ॥ ३९ ॥

श्रीविरंचाद्यर मनके निलुकाव कालके–
जननरहितन ता वोलिसि मगनेंदु मुद्दिसि लीलेगळ नोळ्प–
देवकिगे वंदिपे, यशोदा देविगानमिसुवेनु,
परम कृपावलोकनदिंद सलहुवदेम्म संततिय ॥ ४० ॥

पामररन पवित्रगैसुव–
श्रीमुकुंदन विमल मंगळ नामगळिगभिमानियाद उषाख्यदेवियरु–
भूमियोळगुळ्ळखिळ सज्जनर आमयादिगळळिदु सलहलि,
आ मरुत्वान् मनेय वैद्यर रमणि प्रतिदिनदि ॥ ४१ ॥

पुरुटलोचन निन्न कद्दोयिदिरलु प्रार्थिसे,
दॆवतेगळुत्तरव लालिसि तंद वराहरूप तानागि,
धरणि जननि, निन्न पादक्केरगि बिन्नैसुवेनु,
पादस्परुश मोदलादखिळ दोषगळेणिसदिरु येंदु ॥ ४२ ॥

वनधि वसने, वराद्रि निचय, स्तन विराजिते,
चेतना चेतन विधारके, गंधरस रूपादि गुणवपुषे,
मुनिकुलोत्तम कश्यपन निजतनुजे, निनगानमिपे,
एन्नवगुणगळेणिसदे पालिपुदु परमात्मनर्धांगि ॥ ४३ ॥

हरिगुरुगळर्चिसद पापात्मरन शिक्षिसलोसुग-
शनैश्चरनेनिसि दुष्फलगळीवे निरंतरदि बिडदे,
तरणिनंदन, निन्न पादांबुरुहगळिगानमिपे,
बहु दुस्तर भवार्णदि मग्ननादेन्नुद्धरिस बेकु ॥ ४४ ॥

निरतिशय सुज्ञान पूर्वक विरचिसुव निष्कामकर्मगळरितु,
तत्तत्कालदलि तज्जन्य फलरसव हरिय नेमदलुणिसि,
बहु जीवरिगे कर्मपनेनिप गुरु पुष्करनु,
सत्क्रियंगळलि निर्विघ्नतेय कोडलि ॥ ४५ ॥

श्रीनिवासन परम कारुण्यानिवासस्थानरेनिप,
कृशानुजरु साहस्र षोडश शतरु, श्रीकृष्ण मानिनियरेप्पत्तु,
यक्षरु दानवरु मूवत्तु,
चारण अजानजामररु, अप्सररु, गंधर्वरिगे नमिपे ॥ ४६ ॥

किन्नररु-गुह्यकरु-राक्षस पन्नगरु-पितृगळु-सिद्धरु-
सन्नुत अजानजरु समरु, इवरमर योनिजरु,
इन्निवर गणवेंतु बण्णिसलेन्नोळवे,
करुणदलि परमापन्न जनरिगे कोडलि सन्मुद परम स्नेहदलि ॥ ४७ ॥

आ यमुनेयोळु सादरदि कात्यायनी व्रत धरिसि,
केलरु दयायुधने पतियेंदु, केलवरु जारतनदल्लि वायुपितनोलिसिदरु,
ईर्वगे तॊयसरसर पादकमलके नायेरगुवे,
मनॊरथंगळ सलिसलनुदिनदि ॥ ४८ ॥

नूरु मुनिगळ उळिदु मॆलण नूरु कॊटि तपॊधनर-
पादारविंदके मुगिवे करगळनुद्धरिसलेंदु,
मूरु सप्त शताह्वयर तोरेदु,
ई ऋषिगळानंतरलिह भूरि पितृगळु कोडलेमगे संतत सुमंगळव ॥ ४९ ॥

पावनके पावननेनिसुव रमाविनॊदिय गुणगणंगळ-
सावधानदलॆक मानसरागि सुस्वरदि आ विबुधपति सभेयोळगे-
नाना विलासदि पाडि सुखिसुव,
दॆव गंधर्वरु कोडलि एमगखिळ पुरुषार्थ ॥ ५० ॥

भुवन पावन माळ्प लक्ष्मीधवन मंगळ दिव्य नाम स्तवनगैव-
मनुष्य गंधर्वरिगे वंदिसुवे,
प्रवर भूभुजरुळिदु मध्यम कुवलयपरेंदेनिसिकोंबरुअ-
दिवस दिवसंगळलि नेनेवेनु करण शुद्धियलि ॥ ५१ ॥

श्रीमुकुंदन मूर्तिसले सौदामिनियवॊल्-
हृदय वारिज व्यॊम मंडल मध्यदलि काणुतलि मॊदिसुव-
आ मनुष्यॊत्तमर पदयुग तामरसगळिगेरगुवे,
सदा कामितार्थगळित्तु सलहलि प्रणत जनततिय ॥ ५२ ॥

ई मही मंडलदोळिह गुरु श्रीमदाचार्यर मतानुगरु,
आ महा वैष्णवर विष्णु पदाब्ज मधुकरर स्तॊमकानमिसुवेनु,
अवरवर नामगळनॆं पॆळ्वे बहुविध,
याम यामंगळलि बॊधिसलेमगे सन्मतिय ॥ ५३ ॥

मारनय्यन करुण पारावार मुख्य सुपात्ररेनिप,
सरोरुहासन वाणि रुद्रेंद्रादि सुरनिकर–
तारतम्यात्मक सुपद्यगळारु पठिसुवरा जनरिगे,
रमारमण पूरैसलीप्सित सर्वकालदलि ॥ ५४ ॥

मूरुकालगळल्लि तुतिसे शरीर वाङ्मनः शुद्धि माळ्पुदु,
दूरगैसुवदखिळ पाप समूह प्रतिदिनदि,
चोरभय–राजभय–नक्र–चमूर–शस्त्र–जलाग्नि–भूत–
महोरग–ज्वर–नरकभय संभविसदेंदेंदु ॥ ५५ ॥

जयजयतु त्रिजगद्विलक्षण, जयजयतु जगदेक कारण,
जयजयतु जानकीरमण, निर्गत जरामरण,
जयजयतु जाह्नवीजनक, जयजयतु दैत्य कुलांतक,
भवामयहर, जगन्नाथ विठल, पाहिमां सतत ॥ ५६ ॥

॥ इति श्री कक्षातारतम्य संधि संपूर्ण ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ श्रीः ॥

॥ इति श्री फलश्रुति संधि ॥

श्रीजगन्नाथ दासार्य परम प्रिय शिष्य
श्री श्रीदविठल दासार्य (श्री कर्जिगि दासप्पदास) विरचित
श्रीमद्धरिकथामृतसार फलस्तुति संधि

हरिकथामृतसार गुरुगळ ।
करुणदिंदापनितु पॆळुवे ॥
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि कॆळुवुदु ॥

हरिकथामृतसार श्रीम ।
द्गुरुवर जगन्नाथ दासर ।
करतळामलकवेने पॆळिद सकल संधिगळ ॥
परम पंडित मानिगळु म ।
त्सरिसलेदेगिच्यागि तॊरुवु ।
दरसिकरिगिदु तॊरि पॆळुवदल्ल धरेयोळगे ॥ १ ॥

भामिनी षट्पदिय रूपद ।
लीमहाद्भुत काव्यदादियो ।
ळा मनॊहर तर तरात्मक नांदि पद्यगळ ॥
यामयामके पठिसुववर सु ।
धामसख कैपिडियलॊसुग ।
प्रॆमदिंदलि पॆळ्द गुरु कारुण्यकॆनेंबे ॥ २ ॥

सारवेंदरे हरिकथामृत ।
सारवेंबुवुदेम्म गुरुवर ।
सारिदल्लदे तिळियदेनुत महॆंद्र नंदनन ॥
सारथिय बलगोंडु सारा ।
सारगळ निर्णैसि पॆळ्दनु ।
सार नडेव महात्मरिगे संसार वेल्लिहदो ॥ ३ ॥

दासवर्यर मुखदि निंदु र ।
मॆशननु कीर्तिसुव मनदभि ।
लाषेयलि वर्णाभिमानिगळॊलिदु पॆळिसिद ॥
ई सुलक्षण काव्यदॊळग्यति ।
प्रासगळिगे प्रयत्नविल्लदे ।
लॆसुलॆसने श्राव्य मादुदे कुरुहु कविगळिगे ॥ ४ ॥

प्राकृतॊक्तिगळॆंदु बरिदे म ।
हाकृतघ्नरु जरिवरल्लदे ।
स्वीकृतव माडदले बिडुवरे सुजनरादवरु ॥
श्रीकृतीपति अमल गुणगळु ।
ई कृतियॊळुंटाद बळिक ।
प्राकृतवे संस्कृतद सडगरवॆनु सुजनरिगे ॥ ५ ॥

श्रुतिगे शॊभनमागदडे जड ।
मतिगे मंगळ वीयदडे श्रुति ।
स्मृतिगे सम्मतवागदिद्दडे नम्म गुरुराय ॥
मथिसि मध्वागम पयॊब्धिय ।
क्षितिगे तॊरिद ब्रह्म विद्या ।
रतरिगीप्सित हरिकथामृतसार वेनिसुवदु ॥ ६ ॥

भक्तिवाददि पॆळ्दनॆंब प्र ।
सक्ति सल्लदु काव्यदॊळु पुन ।
रुक्ति शुष्क समान पद व्यत्यास मॊदलाद ॥
युक्ति शास्त्र विरुद्ध शब्द वि ।
भक्ति विषमगळिरलु जीव ।
न्मुक्त भॊग्यविदॆंदु सिरिमदनंद मेच्चुवने? ॥ ७ ॥

आशु कविकुल कल्पतरु दि ।
ग्दॆश वरियलु रंगनोलमॆय ।
दासकूटस्थरिगॆरगि ना बॆडि कॊंबुवॆनु ॥
ई सुलक्षण हरिकथामृत ।
मीसलरियदॆ सार दीर्घ ।
द्वेषिगळिगॆरॆयदलॆ सलिसुवदॆन्न बिन्नपव ॥ ८ ॥

प्रासगळ पॊंदिसदॆ शब्द ।
श्लॆषगळ शॊधिसदॆ दीर्घ ।
ह्रासगळ सल्लिसदॆ षट्पदिगतिगॆ निल्लिसदॆ ॥
दूषकरु दिनदिनदि माडुव ।
दूषणॆयॆ भूषणगळॆंदुप ।
दॆशगम्यवु हरिकथामृतसार साध्यरिगॆ ॥ ९ ॥

अश्रुतागम इदर भाव प ।
रिश्रमवु बल्लवरिगानं ।
दाश्रुगळ मळॆगरॆसि मरॆसुव चमत्कृतिय ॥
मिश्ररिगॆ मरॆ माडि दिविजर ।
जस्रदलि काय्दिप्परिदरॊळु ।
प:श्रुतिगळैतप्पवॊ निज भक्ति उळ्ळवरिगॆ ॥ १० ॥

निच्च निजजन नॆच्च नॆलॆगॊं ।
डच्च भाग्यवु पॆच्च पॊर्मॆयु ।
कॆच्च कॆळ्वनु मॆच्च मलमर मुच्चलॆंदॆनुत ॥
उच्चविगळिगॆ पॊच्च पॊसदॆन ।
लुच्चरिसिदी सच्चरित्रॆय ।
नुच्चरिसॆ सिरिवत्सलांछन मॆच्चलॊनरिदु ॥ ११ ॥

साधु सभेयोळु मेरेये तत्व सु ।
बोध वृष्टियगरेये काम ।
क्रोध बीजवु हुरिये खळरेदे बिरिये करकरिय ॥
वादिगळ पल्मुरिये परम वि ।
नोदिगळ मैमरेयलोसुग ।
हादितोरिद हिरिय बहुचातुर्य होसपरिय ॥ १२ ॥

व्यास तीर्थरोलेवेयो विठलो ।
पासक प्रभुवर्य पुरंदर ।
दासरायर दयवो तिळियदु ओदि केळदले ॥
केशवन गुणमणिगळनु प्रा ।
णेशगर्पिसि वादिराजर ।
कोशकोप्पुव हरिकथामृतसार पेळिदरु ॥ १३ ॥

हरिकथामृतसार नवरस ।
भरित बहु गंभीर रत्ना ।
कर रुचिर शृंगार सालंकार विस्तार ॥
सरस नर कंठीरवाख्या ।
र्यर जनित सुकुमार सात्वी ।
करिगे परमोदार माडिद मरेयदुपकार ॥ १४ ॥

अवनियोळु ज्योतिष्मती तै ।
लवनु पामरनुंडु जीर्णिस ।
लवने पंडितनोकरिपविवेकियप्पंते ॥
श्रवण मंगळ हरिकथामृत ।
सविदु निर्गुणसार मक्किस ।
लव निपुणनै योग्यगल्लदे दक्कलरियदिदु ॥ १५ ॥

अक्करदोळी काव्यदोळों ।
दक्करव बरेदोदिदव दे ।
वर्कळिं दुस्त्यज्यनेनिसि धर्मार्थकामगळ ॥
लेक्किसदे लोकैकनाथन ।
भक्ति भाग्यव पडेव जीव ।
न्मुक्तगल्लदे हरिकथामृतसार सोगसुवदे ॥ १६ ॥

वत्तिबह विघ्नगळ तडेदप ।
मृत्युविगे मरेमाडि कालन ।
भृत्यरिगे भीकरव पुट्टिसि सकल सिद्धिगळ ॥
एत्तिगोळ्ळिसि वनरुहेक्षण ।
नृत्यमाडुवनवन मनेयोळु ।
नित्यमंगळ हरिकथामृतसार पठिसुवर ॥ १७ ॥

आयुरारोगैश्वरिय मा ।
हायशो धैर्य बल सम स ।
हाय शौर्योदार्य गुणगांभीर्य मोदलाद ॥
आयुतगळुंटागलोंद ।
ध्याय पठिसिद मात्रदिं श्रव ।
णीय वल्लदे हरिकथामृतसार सुजनरिगे ॥ १८ ॥

कुरुड कंगळ पडेव बधिरनि ।
गेरडु किवि केळबहवु बेळयद ।
मुरुड मदनाकृतिय ताळवनु केळद मात्रदलि ॥
बरडु हैनागुवदु पेळ्दरे ।
कोरडु पल्लैसुवदु प्रति दिन ।
हुरुडिलादरु हरिकथामृतसारवनु पठिसे ॥ १९ ॥

निर्जर तरंगिणियोळनुदिन ।
मज्जनादि समस्त कर्म वि ।
वर्जिताशापाशदिंदलि माडिदधिक फल ॥
हेज्जे हेज्जेगे दोरेयदिप्पवे ।
सज्जनरु शिरतूगुवंददि ।
घर्जिसुतली हरिकथामृतसार पठिसुवर ॥ २० ॥

सतियरिगे पतिभकुति पत्नी ।
व्रत पुरुषरिगे हरुष नेलेगों ।
डति मनोहररागि गुरु हिरियरिगे जगदोळगे ॥
सतत मंगळवीव बहु सु ।
कृतिगळेनिसुत सुलभदिं स ।
द्गतिय पडेवरु हरिकथामृतसारवनु पठिसे ॥ २१ ॥

एंतु बण्णिसलेन्नळवे भग ।
वंतनमल गुणानुवादग ।
ळेंतु परियलि पूर्णबोधर मतव पोंदिदर ॥
चिंतनगे बप्पंते बहु दृ ।
ष्टांत पूर्वकवागि पेळ्द म ।
हंतरिगे नररेंदु बगेवरे निरय भागिगळु ॥ २२ ॥

मणिखचित हरिवाणदोळु वा ।
रण सुभोज्य पदार्थ कृष्णा ।
र्पणवेनुत पसिदवरिगोसुग नीडुवंददलि ॥
प्रणतरिगे पोंगनड वर वा ।
ज्ञणिगळिं विरचिसिद कृतियो ।
ळुणिसि नोडुव हरिकथामृतसार वनुदार ॥ २३ ॥

दुष्टरेन्नदे दुर्विषयदिं ।
पुष्टरेन्नदे पूतकर्म ।
भ्रष्टरेन्नदे श्रीदविठल वॆणुगॊपाल ॥
कृष्ण कैपिडिवनु सुसत्य वि ।
शिष्ट दासत्ववनु पालिसि ।
निष्ठे इंदलि हरिकथामृतसार पठिसुवर ॥ २४ ॥

॥ इति श्री कर्जिगि दासराय विरचित फलश्रुति संधि संपूर्णं ॥
॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥